आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अक्टूबर 2022
डाक प्रेषण तिथि : 29 अक्टूबर-01 नवम्बर 2022
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 60 अंक : 14
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

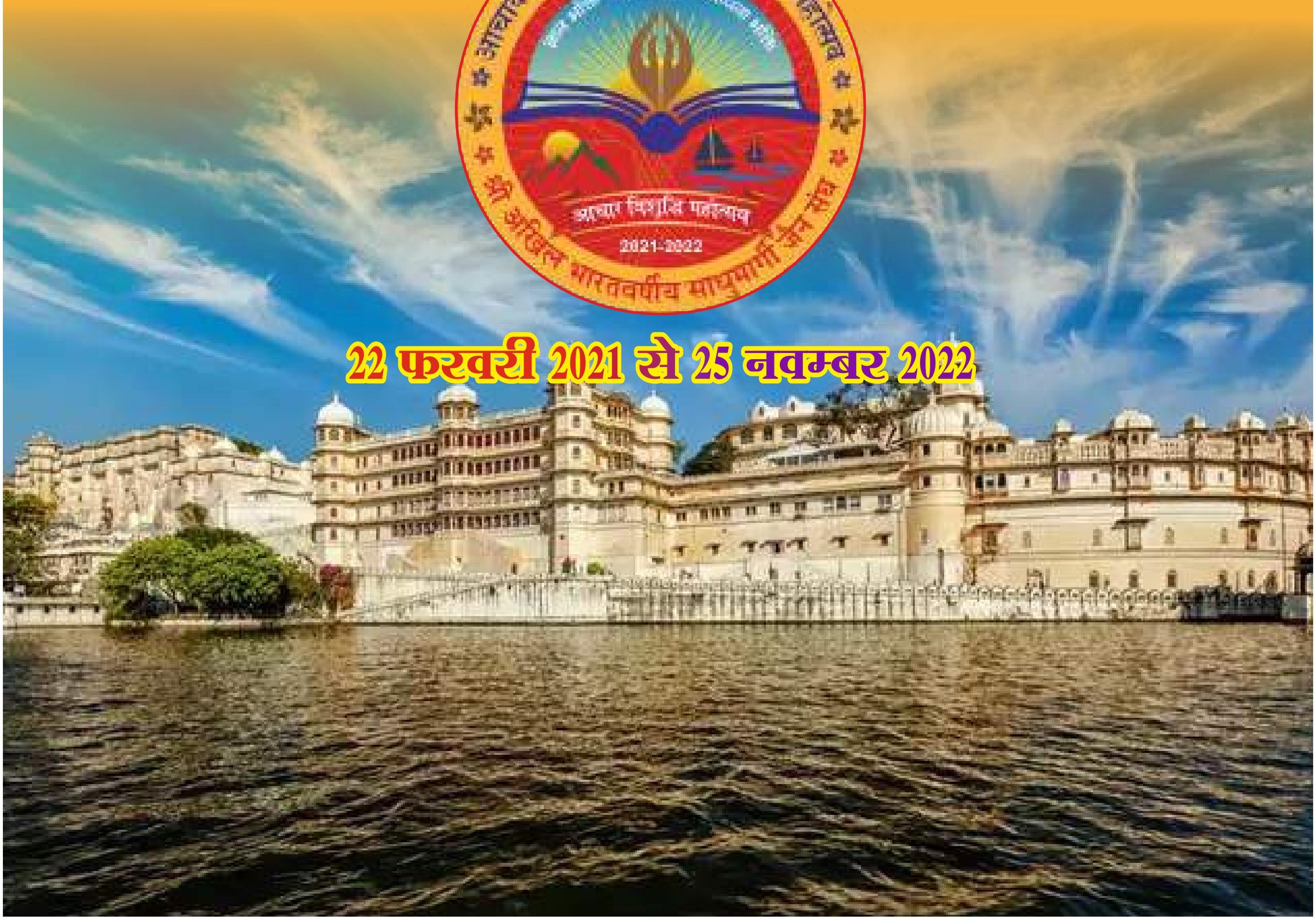

आचार्य श्री हुक्मी दीक्षा द्वि-शताब्दी महोत्सव

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

2021-2022

22 फरवरी 2021 से 25 नवम्बर 2022

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु

श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां

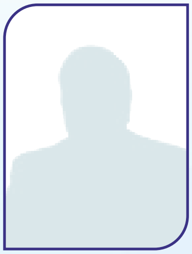
स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर

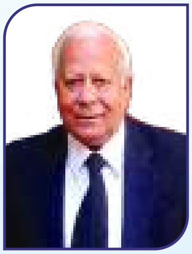
समता मनीषी
श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां

दीक्षा साक्षी बन कर्मनिर्जरा का लाभ लें

उदयपुर। आगमज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में आचार्यदेव के मुखारविन्द से **मुमुक्षु बहन कु. शिवानीजी भण्डारी, जोधपुर** की भव्य जैन भागवती दीक्षा **05 नवम्बर 2022** को उदयपुर में संभावित है। अपूर्व शुभ कर्मोदय से दीक्षा ग्रहण करने का ऐसा सुअवसर प्राप्त होता है।

हम सभी ऐसे उच्च भावों का वरण करें, इसके लिए हमें दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त करना होगा। यदि हम दीक्षा ग्रहण नहीं कर सकते तो दीक्षा जैसे शुभ कार्य में अन्तराय न देकर दीक्षा की अनुमोदना तो कर ही सकते हैं। उच्च भावों में रमण करने का यह सुअवसर हमें प्राप्त हो सकता है। आईए! दीक्षा साक्षी बन कर्मनिर्जरा के लाभ का यह अवसर न गवाएं।

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्रीमती कुसुमजी कोटड़िया कोण्डागाँव

श्री रतनलालजी साँखला अजमेर

श्रीमती प्रेमलताजी नंदावत बैंगलोर

श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा बैंगलोर/गंगाशहर

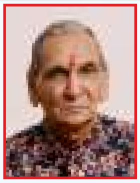
श्री पारसजी छाजेड़ धमधा

श्री पारसजी खेतपालिया ब्यावर

श्री रिखबचंदजी सोनावत भीनासर

श्री मनीषकुमारजी कोठारी बैंगलोर

श्री मेघराजजी पुगलिया कोलकाता

श्री सुरेशकुमारजी नांदेचा खाचरोद

श्री राजेशजी कटारिया बैंगलोर

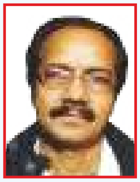
श्री पारसजी छल्लाणी सोनाली

स्व. श्री ओमप्रकाशजी भूरा देशनोक

श्री प्रसन्नजी सुराणा रायपुर

श्री कान्तिलालजी कटारिया रतलाम

श्रीमती आशादेवी कटारिया रतलाम

श्रीमती रतनीदेवी लूणावत दिल्ली

श्री मोतीलालजी मुणोत जलगाँव

श्रीमती तारादेवी सुराणा गंगाशहर

श्री राजमलजी चौरड़िया जयपुर

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा मदुरान्तकम्

श्री निर्मलकुमारजी भूरा करीमगंज

श्री राजकुमारजी बच्छावत नेपाल

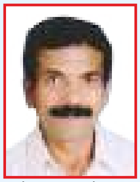
श्री केशरीमल जी देशलहरा दुर्ग

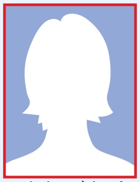
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया सूरत

श्री राजीवजी सूर्या उज्जैन

श्री पुखराजजी मुकिम जयपुर

चतुर्थ चरण

श्री खूबचन्दजी पारख राजनांदगाँव

श्री विनयजी अब्भाणी चित्तौड़गढ़

श्री प्रकाशजी कांकरिया इन्दौर

श्री उत्तमचंदजी रांका जयपुर

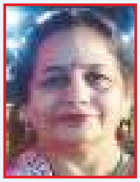
स्व. श्रीमती सरोजदेवी सुराणा–बेरला

श्री रावतमलजी संचेती गंगाशहर

श्री जयचंदलालजी मरोटी देशनोक/कोलकाता

श्रीमती कमलादेवी कोठारी बैंगलोर

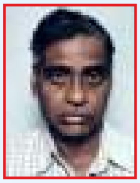
श्री शांतिलालजी डागा कोलकाता

श्री राजमलजी पंवार कानवन

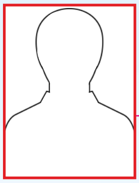
श्री बसंतलालजी कटारिया रायपुर

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

द्वितीय चरण

श्री तेजकुमारजी तातेड़–इंदौर श्री पूनमचंदजी भूरा–भीलवाड़ा श्री बसंतीलालजी चंडलिया–चित्तौड़गढ़ श्री कमलजी बैद–मुम्बई श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल–रायपुर श्री प्रकाशचंदजी सूर्या–उज्जैन श्रीमती सुनीताजी मेहता–बेलगाँव श्री दिलीपजी पगारिया–जावरा श्री राजकुमारजी बाफना–हरदा श्री प्रेमचंदजी व्होरा–बदनावर

तृतीय चरण

श्री शांतिलालजी बच्छावत–सूरत श्री अनिलकुमारजी गोलछा–सिलचर श्री प्रकाशचंदजी कोठारी–अमरावती श्रीमती कमलादेवी संचेती–देशनोक/दिल्ली श्री सुन्दरलालजी बोथरा–मुम्बई श्री गोपालचंदजी खिंवसरा–बैंगलूरु श्री बापुलालजी कोठारी–उदयपुर श्री विजयकुमारजी टंच–बदनावर

प्रथम चरण

श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया–सिलचर श्री मनोजकुमारजी संचेती–बेलगाँव श्री उदयराजजी पारख–रायपुर श्री झंवरलालजी कुम्मट–सिलचर श्री सोहनलालजी रांका–ब्यावर श्रीमती ज्ञानकँवरजी ओस्तवाल–ब्यावर श्री विजयकुमारजी मुणोत–हैदराबाद श्री भीखमचंदजी ओस्तवाल–कलंगपुर श्री अखराजजी ओस्तवाल–भिलाई श्री मुन्नालालजी पँवार–कानवन श्री चेतनकुमारजी हिंगड़–ब्यावर श्री अभयकुमारजी भण्डारी–जावरा श्री दिलीपजी ओस्तवाल–कलंगपुर श्री कँवरलालजी देशलहरा–गुण्डरदेही श्री प्रकाशचंदजी श्री श्रीमाल–हैदराबाद श्री निर्मलजी खिंवसरा–ब्यावर श्री निहालचंदजी कोठारी–ब्यावर श्रीमती मनोरमादेवी बैद–रायपुर श्री भागचन्दजी सिंघी–जोधपुर

॥ जय गुरु नाना ॥
॥ जय महावीर॥
॥ जय गुरु राम ॥
राम चमकते भानु समाना
समता सर्व मंगल
अब
विभिन्न 4 भाषाओं में उपलब्ध
हिंदी
पंजाबी
बंगाली
असमिया
बुक की उपलब्धता/प्राप्ति के लिए संपर्क करे
बीकानेर कार्यालय -72318 55008
श्री मनोज जी डागा-कोलकाता(केवल बंगाली भाषा की बुक)-9830304939
निवेदक : टीम समता सर्व मंगल

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

सितम्बर माह में मेरी भावना पर आधारित ''भावना से भव पार'' नामक पहली ऑफ लाईन गतिविधि का आयोजन हुआ। यह गतिविधि मोटिवेशनल फोरम के सदस्यों के लिए करवाई गई थी। इसमें 550 से अधिक सदस्यों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। जिन क्षेत्रों में पाँच से कम सदस्य रजिस्टर्ड थे, वहाँ ऑनलाईन प्रतियोगिता करवाकर सम्मान दिया गया।

इस एक्टिविटी को संपूर्ण देश में सफलतापूर्वक आयोजित करने हेतु समस्त स्थानीय एवं अंचल संयोजिकाओं को बहुत-बहुत धन्यवाद। फॉरम की आगामी - द्वितीय ऑफलाइन एक्टिविटी मृत्यु महोत्सव (मेरा मरण - पंडित मरण) 4 नवंबर 2022 को संपूर्ण देश में आयोजित की जाएगी।

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

द्वारा सामाजिक कार्य की शृंखला में प्रस्तुत है

तन में हो स्वास्थ्य की अभिवृद्धि
जीवन में बढ़े शान्ति समृद्धि
सभी को पहुँचाएं यही सुख-शान्ति
कर से कर लें हम भी 'आरोग्य वृद्धि'

आरोग्य वृद्धि

(अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर)

महिला समिति द्वारा आरोग्य वृद्धि के अंतर्गत निम्न कार्य किया जाना संभावित है।

1. स्वास्थ्य जाँच, आँखों के ऑपरेशन के शिविर आयोजित करना।
2. चश्में, दवाई, फल व स्वास्थ्य सम्बन्धी अन्य वस्तुओं का वितरण।
3. एम्बुलेंस/व्हिल चैयर/डायलिसिस मशीन आदि उपकरणों की भेंट।

आप सभी को निवेदन है कि अपने अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजें।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

श्रमणोपासक
।। जय गुरु नाना।।
।। जय महावीर।।
29-30 अक्टूबर 2022
।। जय गुरु राम।।
पंजीयन संख्या : आर. एन. 7387/63
राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक
समाचार पाक्षिक

Visit us : www.sadhumargi.com

प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अध्यक्ष एवं प्रधान सम्पादक
गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह-संपादिका
श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

बैंक खाता विवरण

Scan & Pay

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

Bank	: State Bank of India
A/c No	: 31264126681
IFSC Code	: SBIN0003401
Branch	: G.S. Road, Bikaner
email	: accounts@sadhumargi.com
Mob. No.	: 7073311108

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	: 7231933008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

प्रधान कार्यालय/ईमेल आईडी

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

श्रमणोपासक सदस्यता

(केवल भारत में)
1,000/-
(15 वर्ष के लिए)

(विदेश हेतु)
15,000/-
(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय वार्षिक

(केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

सूचना- किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय- प्रात: 10.00 से सायं 6.30 बजे तक
लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

अनुक्रमणिका

संत-जीवन की पूंजी	:	09
उदयपुर समाचार	:	13
विविध समाचार	:	26
विविध भेंट मार्फत	:	33
विनम्र श्रद्धांजलि	:	47
श्री अ.भा.सा. जैन संघ (संघ समर्पणा महोत्सव एवं 60वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन)	:	50
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	57
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	63

सुविचार

क्रोध

क्रोध किया जब-जब, भव को बढ़ाया तब।
चण्डरुद्राचार्य जैसा, होना नहीं चाहिए।।
क्रोध मानो काला नाग, क्रोध मानो महा आग।
क्रोध है चण्डाल, इसे छूना नहीं चाहिए।।
क्रोध करे प्रति नाश, क्रोध करे धर्म नाश।
दूसरे क्या खुद पे भी, करना न चाहिए।।
वीर कहे गौतम से, वसुधा समान बन।
हृदय धरा पे क्रोध, बसाना न चाहिए।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

मोक्षाभिकांक्षी बनाती साधु

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

साधु जीवन स्वीकार करना यदि कोई चाहे, तो उसके लिए जरूरी क्या है? साधु का अर्थ होता है श्रेष्ठ। श्रेष्ठता उसके जीवन का अविभाज्य अंश होना चाहिए। श्रेष्ठता के विषय में भी विचार कर लेना उचित है। श्रेष्ठता का अर्थ होगा सामान्य से हटकर अर्थात् उसमें ऐसी कुछ विशेषताएँ हों, जो सामान्य में न हो। वे विशेषताएँ तीन तरह की हैं, जिनमें से पहली विशेषता है **उपशम भाव की प्रधानता**।

संसार (विश्व) यदि किसी से व्यथित है तो वह है कषाय-राग-द्वेष। इनमें क्रोध-मान-माया-लोभ-ईर्ष्या-नफरत-व्यंग आदि सारे अवगुणों का समावेश हो जाता है। वे कषाय व राग-द्वेष उपशम होने चाहिए, मन्द होने चाहिए। मनुष्य इनसे पूर्णतया छूट जाए यह कठिन है। यद्यपि इनसे मुक्त मनुष्य ही होता है, तथापि वर्तमान में वह पूर्णतया इनसे मुक्त हो जाए यह कठिन है। हाँ, इनको मंद अवश्य कर सकता है। साधुता के परिवेश की चाह रखने वाले को इन्हें जीतने का प्रयास करना चाहिए। ये जैसे ही मुँह उठाने लगें, उस समय वह सजग रहें। उसकी सजगता इन्हें मुँह उठाने नहीं देगी।

साधु जीवन के लिए दूसरी जो जरूरी बात है, वह है **मोक्षाभिकांक्षा**। मोक्षाभिकांक्षी व्यक्ति की भावना पवित्र हो जाती है, जिससे वह किसी के साथ वैर-विरोध, झगड़ा आदि नहीं करता। उसकी वृत्ति आत्मलक्षी बन जाती है। वह सकारात्मक भावों से स्वयं को अभिवृद्ध करता है। पॉजीटिव सोच से उसका हृदय प्रसन्नता से भरा रहता है। उसका उत्साह-उल्लास उसे अपने मिशन में अग्रसर बनाता है। साधु जीवन उत्साह से भरा होना चाहिए।

तीसरी बात जो साधु जीवन के लिए जरूरी है, वह है- **विषय उदासीनता**। पाँच इन्द्रियों के पाँचों विषयों के प्रति व्यक्ति के शुभाशुभ भाव एवं राग-द्वेषात्मक विचार बनते रहते हैं, जिससे व्यक्ति संसार के चक्र में चक्रमित होता रहता है। संसार दशा से जिसका मन भर चुका है, जिसकी संसार सुख की अभिलाषा समाप्त हो गई हो अथवा उसके प्रति आकर्षण न हो, ऐसा व्यक्ति साधु-जीवन स्वीकार करने की योग्यता रखता है।

10.08.2016, श्रावण शुक्ला 7, बुधवार **साभार- प्रणव**

धर्मदेशना

संत-जीवन की पूंजी

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

बात को किस रूप में प्रारंभ किया जाए? खुशी के उद्गार से या खेद के उद्गार से? आप विचार करेंगे कि कौनसी बात को खुशी के उद्गार से प्रारंभ किया जाए या खेद के उद्गार से प्रारंभ किया जाए? खुशी इस बात की हो सकती है कि आज एक आचार्य की हम जन्म-जयन्ती मना रहे हैं और वह भी सौ वर्षों पर तथा खेद की बात यह है कि जैसे मूर्ति के सामने पाँच पैसे का प्रसाद चढ़ाकर मूर्ति को खुश करना चाहते हैं, वही तौर-तरीका यहाँ अपनाया गया है। आपने श्रद्धांजलि अर्पित कर दी और सोच लिया कि हम कृतकृत्य हो गए। जयन्ती को मनाया जा रहा है सामायिक दिवस के रूप में, परन्तु आप जिस महापुरुष की जन्म-जयंती मना रहे हैं, उससे संबंध के बाद भी यहाँ जगह खाली पड़ी है। होना तो यह चाहिए था कि यहाँ की जगह सामायिक करने वालों से भर जाती। इस विशिष्ट अवसर पर भी वही दो सामायिक कर ली, जो रोज करते थे। सोचिए, यह बनियागिरी तो नहीं हुई? आचार्यश्री की जन्म-जयन्ती भी मना ली और सामायिक भी हो गई।

बंधुओ! ये बनियागिरी कब तक चलेगी? मंत्रीजी कह गए- कुल्ले करके नीचे नहीं उतारें, नहीं तो उसका नशा आएगा। पर मैं कहता हूँ कि यह शराब जब तक अंदर उतरेगी नहीं, हलक में इसे जब तक नहीं उतारोगे, कल्याण नहीं होगा। आज तक यही होता रहा है कि बाहर की शराब पीते हैं, पर धर्मस्थान में आकर निर्वेद की और धर्मश्रद्धा की शराब नहीं पी पाए हैं। यह गले तक आती तो है, पर टॉन्सिल इतने बढ़े हुए हैं कि नीचे उतार नहीं पाते और वहीं से कुल्ला करके थूकने की स्थिति बन जाती है। इतने बड़े आचार्य की जन्म-शताब्दी का प्रसंग और ऐसा एकदम ठंडा-ठंडा माहौल! इसी स्थान पर यदि अपने में से ही किसी की 100वीं जन्म-जयंती या शादी की 25वीं सालगिरह मना रहे होते तो कितनी शान-शौकत से मनाते, पर धर्म के मामले में यह स्थिति! इसलिए पूछा था कि खुशी के उद्गार प्रकट करूं या गम के?

हम महापुरुषों को मूर्ति के रूप में मान लेते हैं। सभा कर ली, भाषण दे दिया और फर्ज अदा कर दिया। हमारे यहाँ स्पष्ट कहा गया है कि औपचारिकता कभी खूशबू दे नहीं सकती। कागज के फूलों में कभी खुशबू आ नहीं सकती। हम यथार्थ का धरातल ढूंढें। हम समुद्र की ऊपरी लहरें देखने में लगे रहते हैं। आपने समुद्र की ऊपर की अवस्था को देखा होगा। **समुद्र को गंभीर कहा गया है, जिसकी उपमा तीर्थंकरों को भी दी गई है- 'सागरवर गंभीरा'। समुद्र गहरा होता है, गंभीर होता है, किन्तु यदि हम कह दें कि समुद्र में तो केवल तूफानी हवाएँ होती हैं, ऊँची-ऊँची लहरें होती हैं या कह दें कि वहाँ तो केवल अथाह पानी होता है, तो समझ लीजिए कि हम केवल औपचारिकता में जी रहे हैं। अपेक्षित यह है कि हम यथार्थ में जीएँ।** इसके लिए आवश्यक है कि मोह-ममत्व का थोड़ा त्याग किया जाए। वर्षों तक जिनकी सेवा ली, उपदेश सुना, उनके लिए क्या दया-पौषध नहीं कर सकते? घर में विवाह-शादी हो तो कितना आवश्यक कार्य भी हो, उसे बन्द कर देते हैं, पर यहाँ सामायिक दिवस है और टांय-टांय-फिस्! अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। यदि

उनके प्रति श्रद्धा-समर्पणा है तो अभी भी आज के दिवस को दया-दिवस के रूप में बदल सकते हैं। मंत्रीजी कह गए हैं कि हमें मनाना है, पर मुखमंगली बात मुझसे कम कही जाती है। किसको कहें! महापुरुषों का इतिहास बहुत उज्ज्वल होता है। वह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य होता है। पर हम उसकी महिमा से परिचित नहीं होते। इसलिए यदि स्वर्णाक्षर अंकित इतिहास मिल जाए तो हम उसे छापने को तो तैयार हो जाएँगे, पर यदि सोने की स्याही से नया इतिहास लिखना है तो हम तैयार नहीं होते हैं। हालांकि **श्री आनन्दऋषिजी म.सा.** के दर्शनों का सौभाग्य मुझे नहीं मिला, पर वैचारिक दर्शनों का सौभाग्य अवश्य मिला है। आचार्यदेव के साहित्य में रहे उनके गुणों के माध्यम से मैंने उनके दर्शन किए हैं।

वि.सं. 2009 में सादड़ी-सम्मेलन हुआ था। आप जानते हैं कि राजस्थान की भूमि साधु-साध्वियों से अटी पड़ी है। तब एक तरह से बाढ़-सी आ गई साधु-साध्वियों की। साधु-साध्वियों का सैलाब-सा उमड़ा पड़ा था राजस्थान की ओर। अत्यंत उत्साहपूर्ण वातावरण में वह सम्मेलन सम्पन्न हुआ था। वि.सं. 2010 में सोजत में सम्मेलन हुआ और जोधपुर में 6 बड़े महारथियों का चातुर्मास हुआ। तब बड़ा जोश उमड़ा था और एक भावना सामने आई कि यह कार्य करना है। श्रमण संघ के उपाचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. थे। संघ-संचालन की पूरी जिम्मेदारी उन पर थी। जब उनसे पूछा गया कि आगे का सम्मेलन कहाँ किया जाए, तो उन्होंने कहा- मेरी उपस्थिति में तो सम्मेलन सादड़ी और सोजत में कर लिए गए हैं और जोधपुर में चातुर्मास हो गया है। मैं चाहता हूँ कि आने वाला अगला सम्मेलन **आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा.** के सान्निध्य में हो। वे आचार्य हैं, अत: अगला सम्मेलन उनकी सन्निधि में सम्पन्न होना उपयुक्त होगा। सुनने वालों ने दांतों तले अंगुली दबा ली कि अपनी महानता के अनुरूप कितनी महिमामयी बात कही है उपाचार्यश्रीजी ने! बात आगे बढ़ी। लुधियाना से संपर्क किया गया। लुधियाना संघ ने अपनी स्वीकृति दे दी। चंपालालजी बांठिया कॉन्फ्रेन्स के अध्यक्ष थे। वे कुचेरा के आस-पास उपाचार्यश्री की सेवा में पहुँचे और बातचीत के दौरान बोले- उपाचार्यश्री! इस बार तो आपके चरणरज से पंजाब की भूमि पवित्र होने वाली है। उपाचार्यश्री ने बताया कि 13 मील का विहार 9 दिनों में हो पाया है। इसलिए पंजाब पहुंचना संभव नहीं लगता। मेरे घुटने की हालत लंबा विहार करने की नहीं है। मैं पहुँच पाऊँ या नहीं, पर मेरी शुभकामना सदा साथ रहेगी। चंपालालजी ने बात सुनी तो मन में डबका बैठ गया। उन्होंने कॉन्फ्रेन्स के सदस्यों के बीच बात रखी कि उपाचार्यश्री का पधारना असंभव है।

उस समय प्रधानमंत्री पद पर श्री आनंदऋषिजी म.सा. थे। उन्हें घोषणा का अधिकार था कि सम्मेलन कहाँ हो। उन्हें समाचार मिले तो उन्होंने समाचार लिखाए कि आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा. व उपाचार्यश्री दोनों का सान्निध्य मिले, यह सोने पर सुहागे की बात है, पर उपाचार्यश्री की उपस्थिति अनिवार्य है, वे पधारें। पत्र में यहाँ तक लिखा दिया कि वे यदि नहीं पधारेंगे तो फिर मेरे तो आने का सवाल ही नहीं रहता। देखिए, कितना अपनापन था वहाँ! कोई भेदभाव नहीं था। ऐसा संबंध कि वे पधारें तो ही मैं सम्मेलन में आऊँगा, नहीं तो मैं नहीं आ सकता। यह स्थिति देख उपाचार्यश्री ने फरमाया कि मेरी मनाही नहीं है, पर शरीर सामने है और लुधियाना नजदीक नहीं है। अंततोगत्वा तय यह रहा कि उपाचार्यश्री जहाँ पहुँच सकें, सम्मेलन वहीं पर हो। उनकी उपस्थिति अनिवार्य है। लोग पूछने लगे- उपाचार्यश्री! अब सम्मेलन कहाँ रखें? उन्होंने कहा- मैंने अपनी तरफ से लुधियाना का कह दिया, मैं बदलने की स्थिति में नहीं हूँ। तब पूछा गया- आप कहाँ तक पधार सकते हैं? हम भी उपाय ढूंढते हैं। जहाँ तक आप पधार सकते हैं, वहीं सम्मेलन होगा। ऐसी स्थिति में सम्मेलन भीनासर में रखा गया।

घोषणा प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषिजी म.सा. ने की। संत वहाँ पहुँचे। ऐसे महापुरुष अंगुलियों पर गिनने जितने होते हैं समाज में। समाज की कायापलट में उनका बहुत बड़ा योगदान होता है।

उसके बाद **पंडित श्री मधुकरमुनिजी म.सा. को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया।** जोधपुर में एक ओर यह ऐतिहासिक कार्यक्रम हुआ, तो दूसरी ओर वहीं उन्हें युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इधर श्री आनंदऋषिजी म.सा. का संदेश पहुँचा, जो गोपनीय नहीं था। वह संदेश अखबारों में भी प्रकाशित हुआ था।

उन्होंने जो अनुभव किया व उनके साथ जो बीती थी, उसे उन्होंने शाब्दिक रूप में प्रस्तुत किया था-

> **''उपाचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. ने एक शिक्षा, एक दीक्षा की बात कही थी। उस समय लोगों ने समझा नहीं, पर आज भी उसकी उतनी ही आवश्यकता है। मैं चाहूंगा कि यह व्यवस्था पूरे श्रमण संघ में लागू हो।''**

आचार्यश्री ने कहा- मेरी उपस्थिति में जो विधान बना है, मैं अपने जीवन में उसे अमली रूप देना चाहता हूँ। कारण है कि हम चाहते हैं कि समाज संगठित बने, पर समाज विचार नहीं कर पाया। यदि आपके समाज की जाजम, उसका धरातल समतल और मजबूत नहीं है तो विसंगतियाँ समाप्त नहीं होंगी। यदि अपने-अपने संप्रदाय की खींचतान नहीं होती, तो उस समय व्यवस्था का रूप कुछ और होता। पर भावी को जो मंजूर होता है, वही होता है। उपाय करने वाले करते हैं, फिर भी सफल न हो तो समझना चाहिए कि **'भावी को जो मंजूर है, वही होता है।'**

श्री आनंदऋषिजी म.सा. का चिन्तन सोचने व समझने लायक था, पर वैसा नहीं हो पाया और आज तक वह लेख में ही सीमित है।

आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. ने जब युवाचार्य पद पर श्री नानालालजी म.सा. को प्रतिष्ठित किया तब जैसे बच्चे को घूंटी पिलाते हैं, वैसे आचार्यश्री ने कहा कि मेरे सान्निध्य में जो श्रमण संघ की धारा बही है, जब भी एकता की स्थिति बने, उसमें मिल जाएँ। उसमें पीछे रहने की आवश्यकता नहीं है। आज तुम भले ही युवाचार्य पद पर हो, पर जिस दिन भी वैसी स्थिति बने, तुम्हें तैयार रहना है। आज भी आचार्यश्री का सन्देश है कि सादड़ी-सम्मेलन में जो रूप बना, वह किसी व्यक्ति या पार्टी का नहीं था। मूर्धन्य मुनिराजों ने अधिकांश प्रस्ताव सर्वानुमति से पारित किए। कुछेक प्रस्ताव बहुमत से पारित हुए, पर बहुमत भी 75 प्रतिशत था। ऐसा शायद ही कोई प्रस्ताव पारित हुआ हो जो 75 प्रतिशत से कम मतों से पारित हुआ हो। वैसी भूमिका जिस दिन भी स्थानकवासी समाज में जुड़ती हो, तो आचार्यदेवों का निर्देश है कि उस दिन अलग रहने की आवश्यकता नहीं, न ही आचार्य पद की कोई आवश्यकता है। यह पद केवल व्यवस्था से जुड़ा हुआ है, मुनि पद से बढ़कर किसी पद की गरिमा नहीं हो सकती।

बंधुओ! सोचिए- हम भीतर का कल्याण कैसे करें? यह नहीं कि गणि, गणावच्छेदक, आचार्य, उपाध्याय पद मिलने पर ही आत्मकल्याण होगा। वर्तमान युग में आचार्य के अतिरिक्त अन्य पदों की अपेक्षा नहीं है, मुनि-भाव ही पर्याप्त है। यदि अपने मुनित्व को ही अक्षुण्ण रख लिया तो उससे ही आत्मकल्याण संभव है। सेना के लिए सेनापति की आवश्यकता होती है। आचार्य सेनापति के रूप में हैं और हम मुनि सेना हैं। ऐसी सोच बन जाए तो कहीं भी, किसी भी प्रकार की उलझन पैदा नहीं होगी। नहीं तो अमुक को यह पद दिया जाए तो अमुक के लिए यह पद होना चाहिए जैसी पदों की लिप्सा में ही उलझ कर रह जाएंगे और स्वार्थ में पड़कर श्रमण संस्कृति के पानी को

स्वच्छ नहीं रख पाएंगे। यदि सच्चे धर्म पर चलने का संकल्प कर उसका पालन करेंगे तो ही जयंती मनाना सार्थक होगा। महापुरुषों को केवल शब्दों का अर्घ्य अर्पित कर कामना करें कि देवता प्रसन्न हो जाएंगे, तो यह होना नहीं है। देव प्रसन्न होते हैं और आते हैं, किन्तु ऊपरी-ऊपरी बातों से नहीं। श्रीकृष्ण वासुदेव की तरह तेलापूर्वक एकाकारता बने तो देव को भी आना पड़ जाए। हम साधना के क्षेत्र में वैसा ही पुरुषार्थ करें। यदि हम महापुरुषों के चरित्र का अनुसरण करेंगे तो जीवन में आमूलचूल परिवर्तन होगा और हम संस्कृति की सुरक्षा कर पाएंगे। इसलिए महापुरुषों के जीवन की रोशनी से अपने जीवन को भी रोशन करें।

आज एक बहुत अनुचित प्रवृत्ति चल पड़ी है- गुरुओं की शानदार समाधियाँ बनवाने की। गुरु की समाधि के नाम पर श्रद्धालुओं की जेबें खाली करा लेना आसान है, परन्तु ऐसी प्रवृत्तियों के आचरण का मार्ग दिखाना, जो धर्म-ध्यान और तप-त्याग को जीवनचर्या का अंग बना लेना सिखाती हों, कठिन है। समाधि-स्थल बढ़ते जाएं, परन्तु धर्म-प्रभावना तथा तप-त्याग की प्रवृत्तियाँ रुकतीं या कम होती जाएं तो जीवन में उस धार्मिकता सांस्कृतिकता का आना असंभव हो जाएगा, जिसकी आज के भौतिकवादी चिन्तन से त्रस्त इस दुनिया को सबसे अधिक आवश्यकता है।

बंधुओ! चिन्तन-मनन करें। जो भावनाएँ व्यक्त की जा चुकी हैं, मैं उनकी पुनरावृत्ति नहीं करना चाहता। मैं तो केवल उस सहजता, सरलता और नम्रता की बात कहना चाहता हूँ जो संत जीवन की थाती होती है। सहजता, सरलता, नम्रता नहीं तो साधु का कलेवर हो सकता है, पर जीवन संत का नहीं! संत के जीवन के लिए कहा गया है-

'सोही उज्जुय भूयस्स......।'

सरलता नहीं तो धर्म नहीं। धर्म नहीं तो साधु-जीवन की पालना कैसे होगी? सरलता संत-जीवन की पूँजी है। हो सकता है, यह किसी के पास कुछ कम हो और किसी के पास कुछ अधिक, पर यह है प्रत्येक के लिए आवश्यक।

आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. की सरलता की बात आप सुन चुके हैं। बड़ों के प्रति सम्मान का कैसा भाव उनके इस कथन में है कि उपाचार्य पधारें तो मैं आ सकता हूँ, इसे समझें। बड़ों का सम्मान संस्कृति का बीज है। ऐसी संस्कृति हमें मिली है, पर आज बड़ों को सम्मान देने वाले कितने मिलेंगे? घर में पिता हैं तो कितने काम उनसे पूछकर किए जाते हैं? बहू सासूजी से कितना पूछती है? यदि आप पहुँच जाएंगे चन्दे के लिए, तो सेठजी कहेंगे- बेटे से पूछकर बताऊंगा। यह उलटी बात है, आज ऐसे उलटे हालात होते जा रहे हैं। पहले भारतीय संस्कृति में देवताओं की पूजा होती थी। देवता कौन? माता-पिता, गुरु व अपने से बड़े। जहाँ इनकी भक्ति होती है, वहाँ क्लेश का काम नहीं रह सकता। आज माता-पिता, गुरुओं के प्रति कितना आदर-सम्मान का भाव रह गया है यह चिन्तन-मनन का विषय है। साधु-संतों की जन्म-जयंती मनाते समय हम उस चिन्तन को भी महत्त्व दें और सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए कृत संकल्पित हों, यह एक बड़ी आवश्यकता है। आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. की जन्म-शताब्दी के इस पावन अवसर पर यदि संकल्पित होकर हम इस दिशा में कदम बढ़ाएंगे तो हमारा यह जयंती मनाना सार्थक हो जाएगा।

साभार- श्री रामउवाच-7 (आत्मकल्याण का मार्ग)

राम महोत्सव चातुर्मास में छाई है चहुंओर बहार।
त्याग-तप, संयम, आत्मरमणता से हुआ कण-कण सराबोर।।

78 मासखमण एवं 275 लोच सम्पन्न हुए
चारित्रात्माओं के दीर्घ तपस्याएँ गतिमान
आचार्य श्री रामेश की नेश्राय में अब तक 366 दीक्षाएँ सम्पन्न
वयोवृद्ध साध्वी शासन दीपिका श्री शांताकँवरजी म.सा. का तिविहार संथारा गतिमान, आत्मरमणता में लीन
मुमुक्षु प्रियंकाजी भटेवरा, मुमुक्षु मुस्कानजी बरड़िया, मुमुक्षु दिशाजी पगारिया की जैन भागवती दीक्षा सौल्लास सम्पन्न

आत्मा-परमात्मा की चर्चा करना सरल है, पर उस राह पर चलना बहुत कठिन -आचार्य श्री रामेश

श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संस्थान, हिरण मगरी सेक्टर-4, उदयपुर

हे गुरुवर! वाणी तुम्हारी मंगलकारी, दर्शन तुम्हारे प्रियकारी,
शिक्षा तुम्हारी हितकारी, हम सबके तुम हो उपकारी।
।। जिनशासन के शान की, जय बोलो गुरु राम की।।

रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-16 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-74 के '**राम महोत्सव चातुर्मास**' में आध्यात्म की पावन गंगा निरंतर प्रवाहित हो रही है। जन-जन में धर्म के प्रति श्रद्धा-भक्ति व आस्था का तीव्र संचार हो रहा है। उभय महापुरुषों की उत्कृष्ट संयम-साधना से जनता निरंतर प्रभावित हो रही है।

01 अक्टूबर 2022। चातुर्मास में हो रहे नित नए धर्म कीर्तिमानों की शृंखला में प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना एवं प्रवचन सहित कक्षाओं आदि का क्रम जारी है। जैन सिद्धान्त बत्तीसी तत्त्वज्ञान कक्षा में श्री शोभनमुनिजी म.सा. समझाइश दे रहे हैं।

विशाल धर्मसभा में अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''साधुओं के दर्शन पुण्यकारी और तीर्थंकरों के दर्शन महान पुण्यकारी होते हैं। दर्शन से दु:ख-दुर्भाग्य दूर हो जाते हैं, क्योंकि दृष्टि सही हो जाती है। 'मेरा कोई नहीं है, मैं किसी का नहीं हूँ' इस भावना को आत्मसात् करते हुए यह चिन्तन अवश्य करें कि हम शरीर के लिए कितना समय दे रहे हैं और आत्मा के लिए कितना? एक सामायिक भी हम शुद्ध नहीं कर पा रहे हैं। हमारा लगाव पुद्गलों से ज्यादा है। साधु के दर्शन, वंदन, नमन पुण्यकारी होते हैं। श्रावक को देखकर मन लाभित होना चाहिए। श्रावक को नौ तत्त्व एवं 25 क्रिया का जानकार होना चाहिए। आज श्रावक को बारह व्रत के नाम भी याद नहीं हैं। हम जन्म से तो जैन हैं, अब कर्म से भी जैन बनें।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि दान के भावों का महत्त्व है। साधुओं को दान देने से पहले, बहराते

समय और बहराने के बाद मन प्रसन्न रहना चाहिए। आज लोगों के पास पैसा बहुत है, लेकिन भाव घटा है।

शासन दीपिका साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा., साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा. ने **'गुरुवर राम लागे सुहाना'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। मध्यप्रदेश के पूर्व गृहमंत्री परम गुरुभक्त श्री हिम्मतजी कोठारी-रतलाम ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

02 अक्टूबर। धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''तीर्थंकर देवों की आज्ञा की आराधना बहुत कठिन है। भगवान महावीर के सिद्धान्तों को जीवन में कितना आत्मसात् किया है, आत्मचिन्तन करें। जवाहराचार्य फरमाते थे कि **'अरिहंत भगवान मेरे भुवन में कौन छेड़े'** हम अपनी आत्मा की आवाज सुनें और तीन मनोरथ का चिन्तन प्रतिदिन करें।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने भक्ति गीत **'जब संत मिलन हो जाए, मेरी वाणी हरि गुण गाए'** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि भक्ति में दिखावा नहीं होना चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले), (मोड़ी वाले) एवं (बीकानेर वाले) ने **'कैसी होती है देखो साधना, ऐसी होती है देखो साधना'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धान्त बत्तीसी के सिद्धान्तों की समझाइश दी। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं उपाध्यक्षजी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

03 अक्टूबर। विशाल धर्मसभा में उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि **''गुरु वह अवस्था है, जो प्रशिक्षण देती है। निरंतर विकास की दिशा में प्रेरित करती है। प्रकाश स्तंभ अंधेरे में उजाला करता है। जहाँ कुछ भी समझ नहीं आता, वहाँ निर्णय की दृष्टि प्रदान करते हैं। जगत् गुरु तीर्थंकर प्रभु के समग्र उपदेश का सार 'जीवन के समस्त दु:खों को दूर करने के लिए अकिंचन बनने' का है। जो साधक अकिंचन है वह साधक सुखी है।''**

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. ने आज 09:25 बजे तिविहार संलेखना-संथारा ग्रहण कर आत्मरमणता की दिशा में कदम बढ़ाया।

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने भजन **'लाखों को पार लगाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने''** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संघर्ष से सफलता मिलती है। अभ्यास निरंतर करते रहना चाहिए। कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने **'हुक्मसंघ के हो खेवइया, पार लगा दो गुरु मेरी नैया'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

प्रतिदिन सुबह प्रवचन से पूर्व समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि डॉ. सत्यनारायणजी शर्मा द्वारा करवाया जा रहा है।

04 अक्टूबर। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् श्री शोभनमुनिजी म.सा. जैन सिद्धान्त बत्तीसी तत्त्वज्ञान कक्षा में ज्ञानार्जन करवा रहे हैं।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगममर्मज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी प्रभावशाली वाणी में फरमाया कि ''विचार शुद्ध होने चाहिए। विचार शुद्ध होंगे तो मन शुद्ध होगा और मन शुद्ध होगा तो आत्मा शुद्ध होगी। आत्मा का शोधन करने वाला तपस्या का अनुमोदन करने वाला सभी कर्मों को दूर करने वाला होता है।

तपस्या में प्रशंसा की चाह नहीं हो। तपस्या का एक मात्र लक्ष्य आत्मा का शोधन करना होना चाहिए। प्रभु से प्रेम आत्मा को पवित्र बनाने वाला होता है। लोग वासना को प्रेम मानते हैं और यहीं से भ्रांति प्रारंभ होती है। विश्वास जितना गहरा होगा सफलता उतनी ही आसान होगी।''

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार के कांटों में सुख नहीं है। सच्चा सुख संयम में, आध्यात्म में है। साध्वी श्री प्रत्युषाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि मन में यदि निरन्तर एक ही विचार बार-बार चलता रहता है तो अंतिम समय में उसकी भावना परिपूर्ण होती है। हमारा कर्तव्य बनता है कि हम आचार्य भगवन् के प्रति समर्पण भाव रखें। साध्वी श्री रुचिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि बंधे हुए कर्मों को नष्ट करने का एक ही उपाय है, तप। तप से आत्मा पवित्र होती है। तप करना सरल नहीं है। यदि हम अपना नजरिया बदलें तो तप सरल हो जाता है। साध्वी श्री रमामीश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि हम जो भी करते हैं उसमें जो मन की चंचलता को शांत करने की ऊर्जा है वह समभाव प्रदान करती है।

साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (मोड़ी वाले) एवं साध्वी श्री प्रगतिश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने तप अनुमोदना गीत **'मिली गुरु की महर, छायी तप की लहर'** प्रस्तुत किया। साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'नाना गुरु का राम देखो सारे जग में छा गया'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् के आह्वान पर मासखमण तपस्या के उपलक्ष में कई भाई-बहिनों ने तेले तप व खुले तीन उपवास करने तथा कईयों ने तीन एकासन करने का संकल्प लिया। पटाखे जलाने का त्याग कई लोगों ने लिया।

05 अक्टूबर। विशाल जनमेदिनी से भरी धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्यदेव ने फरमाया कि ''तीर्थंकर देवों की सेवा-भक्ति बहुत कठिन है। सेवा तो वैसे ही कठिन है। माता-पिता की भी सेवा करनी कठिन है। बुजुर्गों की सेवा करना भी कठिन है तो तीर्थंकर देवों की सेवा करना आसान कैसे हो सकता है? मन, वचन, काया, तीनों एक रूप हो जाएँ तब परमात्मा की सेवा और भक्ति हो पाएगी। आत्मा-परमात्मा की चर्चा करनी बड़ी रसीली लगती है किन्तु उस राह पर चलना, उनकी सेवा-भक्ति में लीन हो जाना बहुत कठिन है। तीर्थंकर देवों की आज्ञा का पालन करना उनकी सच्ची सेवा है। अहिंसा-तप की यदि पालना होगी तो हम सच्ची सेवा कर पाएँगे।''

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार की यात्रा हमने बहुत कर ली, अब हमें अध्यात्म यात्रा की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। हर परिस्थिति में मन में समाधि बनी रहनी चाहिए। महासतीवर्याओं ने सुन्दर गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए। उज्जैन में सम्पन्न **'आई जैन माई जैन'** के शिविरार्थी सुश्री लब्धि लोढ़ा ने **'राम गुरु धरती पर आए है, यह महावीर युग को लाए हैं''** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। सुश्री लक्षिता कांकरिया ने कहा कि ऐसा क्या है जो मैं नहीं कर सकती हूँ? इसी सोच ने मुझे मौन व अप्रतिक्रिया में सजग बनाए रखा।

06 अक्टूबर। विशाल धर्मसभा में धर्म की पावन वाणी प्रवाहित करते हुए तरुणतपस्वी आचार्यदेव ने फरमाया कि ''सुबह उठकर हम प्रभु का, परमात्मा का स्मरण करें, क्योंकि उस समय मन पवित्र होता है। उसके बाद चार बिन्दुओं पर चिन्तन करें- हे चैतन्य देव! तू सोच-

1. तू कौन है?
2. तेरा स्वरूप क्या है?
3. तू क्या कर रहा है?
4. क्या करणीय है और क्या करना शेष रह गया है?

हम केवल सुनने में शूरवीर हैं। चिन्तन-मनन कुछ नहीं करते। कपड़े को कवर सहित साबुन से

धोने पर क्या कपड़ा धुलेगा? नहीं, कभी नहीं। उसी प्रकार सामायिक, प्रतिक्रमण के भीतर तो घुसे ही नहीं, उसके भीतर रहे अमृत को पिया ही नहीं, तो आनन्द आएगा कैसे? जीवन में समयबद्धता के साथ योजना बनाएंगे तो बहुत-सी समस्याओं का स्वतः ही समाधान हो जाता है।'' आशा और शान्तिलाल की चौपाई से आचार्य भगवन् जनमानस में नई-नई प्रेरणा व ऊर्जा भर रहे हैं।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप, वाट्सएप्प के निरर्थक उपयोग से बचने की प्रेरणा दी। साध्वीमण्डल ने गुरुभक्ति एवं संथारा अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. के संथारे का आज चौथा दिन सजगता और समाधिपूर्वक गतिमान रहा।

07 अक्टूबर। प्रशान्तमना आचार्य प्रवर ने भगवान महावीर की वाणी उद्बोधित करते हुए फरमाया कि ''अपने आंतरिक व्यक्तित्व को निखारने के लिए पुरुषार्थ करने वाले बहुत कम लोग होते हैं। तीर्थंकर भगवान फरमाते हैं कि सामने वाले के पास जो क्षमता, सामर्थ्य, बुद्धि होगी उसी के अनुसार वह व्यवहार करेगा। हम अपने भीतर पिक्चर क्यों बना लेते हैं कि हमारे साथ अमुक व्यक्ति अमुक व्यवहार करे? चाहे कोई हमारे लिए कितनी भी विपरीत बात करे, हमें अपने मन को दूषित नहीं बनाना है। हम अपने जीवन का प्रोजेक्ट बनाए- 'जीवन सुधार प्रोजेक्ट', जिसमें हम मन में अपने विचारों की एक तस्वीर बनाए कि 'मुझे कैसा बनना है'? फिर प्रतिदिन उन विचारों का रूप देखना और चिंतन करना कि क्य तस्वीर साफ है या धुंधली है? अपने जीवन की सूरत को अमुक समय में ढ़ाल दूंगा/दूंगी। यदि हम इसकी ओर पुरुषार्थ करेंगे तो हमारे जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आएगा। जिस समय हमारा नियंत्रण हमारे हाथ में हो जाएगा तो फिर कोई भी शक्ति हमारे पर हावी नहीं होगी। महावीर बनने से पहले महाधीर बनें।'' एक वर्ष के अन्दर महावीर चारित्र पढ़ने के लिए कई भाई-बहनों ने संकल्प आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से ग्रहण किया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार के कार्य करते समय हमें खुश नहीं होना चाहिए। आत्मकल्याण की दिशा में हमारा सतत् ध्यान रहे। साध्वी श्री प्रज्ञप्तिश्रीजी म.सा. ने अपने भावों में **'पुण्यवानी का जोर है, गुरु सान्निध्य बेजोड़ हैं'** गुरुभक्ति भजन फरमाया।

दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतिदिन जारी है। समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि डॉ. सत्यनारायणजी शर्मा निरन्तर करवा रहे हैं।

08 अक्टूबर। प्रातः मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा के धर्मभावों को तृप्त करते हुए सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''कार्य करने से पहले हम चिंतन करें कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? क्या-क्या कठिनाइयाँ आ सकती है? धार्मिक अनुष्ठान यदि सही लक्ष्य से नहीं होगा तो क्या मंजिल मिलेगी? कर्म बांधते हुए हम बड़े खुश होते हैं, पर जब उदय में आते हैं तो हम कितना तड़पते हैं, छटपटाते हैं। उस समय कोई सहयोग नहीं कर पाएगा। पुण्य योग हो तो भले ही कोई सहयोग मिल जाए, नहीं तो स्वयं को ही भोगना पड़ेगा। माता-पिता, गुरुजनों का आशीर्वाद बहुत फल देने वाला होता है। उनका आशीर्वाद किस रूप में काम कर जाता है हमें पता भी नहीं चलता। कई बार उलझनों को

सुलझा देता है। कोई भी कार्य धैर्य से करो। धैर्य से करने का आशय है कि समझपूर्वक करो। मस्तिष्क में हड़बड़ी या जल्दबाजी आती है तो कार्य सही रूप से नहीं कर पाते। पढ़कर हमने क्या किया? जीवन में उसको उतारा कितना? शासन दीपिका महासती श्री शांताकँवरजी म.सा. संथारा, संलेखना के साथ निरंतर आत्मभावों में रमण कर रहे हैं। सभी को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।''

आचार्य भगवन् के आह्वान पर कई भाई-बहनों ने दीपावली के अवसर पर तेला या उपवास करने का संकल्प लिया। साध्वी श्री सिद्धमणिजी म.सा., साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने **'जिनशासन की शान गुरु राम है उनका नाम'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

परम गुरुभक्त जुगराजजी गुलेच्छा-जोधपुर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति संदेश प्राप्त किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। आचार्य भगवन् के सन् 2024 के चातुर्मास हेतु पिपलियाकलां के लिए पंकजजी शाह ने गुरुचरणों में विनती रखी।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी सहित अनेक गुरुभक्तों ने गुरुचरण सेवा का लाभ लिया।

09 अक्टूबर। रविवारीय समता शाखा श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। जैन सिद्धान्त बत्तीसी तत्त्वज्ञान कक्षा में श्री शोभनमुनिजी म.सा. निरन्तर सुन्दर मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''हमारा मन जब भक्ति में लीन, एकमेक हो जाता है तब भक्ति फलीभूत होगी। बिखरे मन से तीर्थंकर भगवान की चरण सेवा नहीं हो पाएगी। भगवान महावीर फरमाते हैं कि जो कार्य करना है, उसी में लीन हो जाओ। बाहर के कार्य में ही लीन नहीं हो पाए तो आत्मा में लीन कैसे हो पाएँगे? नहीं हो पाएँगे। पहले भोजन में मन लगाओ तो भजन में मन लग जाएगा। तल्लीनता एकाग्रता से अलग ही ज्ञान हमारे भीतर प्रकट होगा। हम अपने जीवन में दैनिक टाईम टेबल निर्धारित करें और निर्धारित समय उस कार्य में समर्पित रहे। 'कल कर लेंगे' कल पर बात गई तो हम हार गए। आलस्य, प्रमाद आ गए तो सफलता दूर ही दिखाई देगी।'' आचार्य भगवन् के आह्वान पर खाना बनाने के स्थान पर एवं खाना खाने के स्थान पर गुस्सा नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पाँच इन्द्रियों पर नियंत्रण करने से मन की शक्ति प्रकट होती है। साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाजी म.सा., साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **'खम्मा खम्मा हो म्हारा शांताकँवरजी म.सा., संथारा धारियो जी'** संथारा गीत प्रस्तुत किया।

धर्मपरायणा कोयलदेवी सिरोया-कपासन के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त की।

10 अक्टूबर। संयम के सजग प्रहरी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''परमात्म प्रीत बहुत आसान है, पर हमारी मति ने, सोच ने, समझ ने इसे दुरूह बना दिया कि उस और अब मन ही नहीं लग रहा है। मन में जो स्वाद लगा है, बस अब वही आ रहा है। हमारा जीवन व्यवहार जब तक नहीं बदलेगा, तब तक भगवान की भक्ति का कोई फल नहीं मिलने वाला। हमारा अधर्म छिपा रह जाए इस भाव से हम दिखावा करते हैं। महान पुण्य का योग होता है तब मनुष्य भव मिलता है। उससे महान महान महान पुण्य का योग होता है तब धर्म के प्रति अनुराग पैदा होता है।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जब परमात्म-भक्ति में लीन हो जाते हैं और उत्कृष्ट रसायन आवे

तो तीर्थंकर नामकर्म का बंध होता है तथा अशुभता से शुभता की ओर जाते हैं। जैन श्रावक को हर कार्य में यतना का ध्यान रखना चाहिए। श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जड़ पदार्थों से शान्ति मिलने वाली नहीं है। हम चैतन्य का दर्शन करें। साध्वीवर्याओं ने **'अपश्चिम संलेखना कर जीवन सफल बनाया, संयम का आनन्द पाया'** संथारा गीत प्रस्तुत किया। दीक्षार्थी बहनों की ओघा बंधाई एवं केसर छंटाई कार्यक्रम अनुपम आनन्द के माहौल में सम्पन्न हुआ।

दीक्षार्थी बहनों का भव्य वरघोड़ा एवं अभिनन्दन

वीतरागता की ओर बढ़ रहे हैं ये चरण, धन्य धन्य धन्य कह रहा है ये मन।

आधुनिक सुख-सुविधाएँ, टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप एवं परिवार की मोह-माया को छोड़कर त्याग, संयम मार्ग पर आगे बढ़ने वाले वीर मुमुक्षु आत्माओं का महनीय अभिनन्दन श्री अ.भा.सा. जैन संघ, महिला समिति, समता युवा संघ के साथ स्थानीय श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, बहूमंडल, समता युवा संघ, वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान एवं आरुग्गबोहिलाभं सहित अनेक संस्थाओं द्वारा गरिमामय माहौल में किया गया। मंच पर दीक्षार्थी बहिनें एवं उनके माता-पिता शोभायमान थे।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, उपाध्यक्ष एवं मंत्रीगणों सहित अनेक प्रतिष्ठित श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामय उपस्थिति रही। प्रारंभ में मंगलाचरण व स्वागत गीत समता महिला मंडल एवं बहूमंडल ने सुमधुर स्वरों में प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण देवेन्द्रजी धींग ने देते हुए दीक्षा महोत्सव को अनुपम अलौकिक निरुपित किया। अभिनन्दन पत्र का पठन मानसिंहजी पानगड़िया ने किया। एवं दीक्षार्थी बहनों का परिचय महेश नाहटा ने दिया।

संघ राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्बोधन कहा कि इस भौतिक युग में महापुरुषों के सान्निध्य को प्राप्त कर ये मुमुक्षु बहनें अध्यात्म के महान पथ पर बढ़ रही हैं, ये गर्व की बात है। दीक्षार्थी परिवार के आदर्श त्याग की जितनी सराहना की जाए उतनी ही कम है। आपश्री के बताए आयामों एवं महत्तम महोत्सव के आयामों को आत्मसात् कर सच्ची गुरु समर्पणा प्रस्तुत करें।

वीर भ्राता जयेशजी भटेवरा ने कहा कि हमारी ये वीर बहनें संयम पथ पर आगे बढ़कर गुरु आज्ञा में जिनशासन की अद्‌भुत प्रभावना करें, यही शुभेच्छा है।

मुमुक्षु बहन प्रियंकाजी भटेवरा ने अपने उद्गार में कहा कि वर्षों की संयम लेने की तमन्ना आज पूर्ण होने जा रही है। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के उपकारों एवं परिजनों के सहकार के लिए सदैव ऋणी रहूँगी। संयम जीवन में जो आनन्द है वह संसार की किसी भी चीज में नहीं है। आरुग्गबोहिलाभं में एक बार जरूर अपनी सन्तानों को भेजकर सुसंस्कारित करें। उदयपुर संघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

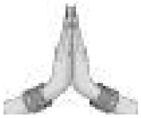

मुमुक्षु मुस्कानजी बरड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के अनुपम ज्ञान, क्रिया व श्रेष्ठ साधना को देखकर वैराग्य पथ की ओर आगे बढ़ने का निश्चय किया है। इनके पास कुछ भी नहीं है, फिर भी सदैव प्रसन्न रहते हैं। महापुरुषों एंव पारिवारिकजनों के आशीर्वाद से शुद्ध संयम की आराधना कर परम मंजिल को प्राप्त कर सकूं, ऐसी मंगल भावना है।

मुमुक्षु दिशाजी पगारिया ने अपने भावों में कहा कि संयम ही जीवन का सच्चा सार है। मनुष्य जीवन की सार्थकता भोग-विलास में नहीं है। दु:खों से मुक्ति के लिए व सभी जीवों के प्रति दया, करुणा भाव के लिए देव-गुरु-धर्म का ही एकमात्र शरणा है। उभय गुरु-भगवंतों के उत्कृष्ट संयमी जीवन एवं साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.सा. की पावन सन्निधि से स्व-पर कल्याण की साधना में आगे बढ़ रही हूँ। जीवन के अन्तिम क्षणों में संयम में सजग रहूँ, यही

मंगल भावना है। परिजनों के संस्कार मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर हैं। बाल-युवा पीढ़ी को बचपन से ही सुसंस्कार देने का लक्ष्य बनाएं।

मुमुक्षु बहनों एवं उनके परिजनों का सम्मान विभिन्न संस्थाओं के वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों एवं स्थानीय संघ प्रमुखों ने साफा, माल, शॉल, अभिनन्दन-पत्र भेंट कर किया।

अभिनन्दन कार्यक्रम के पश्चात् मुमुक्षु प्रियंकाजी भटेवरा एवं मुमुक्षु मुस्कानजी बरड़िया का भव्य वरघोड़ा लक्ष्मी निवास से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से निकाला गया। सम्पूर्ण मार्ग जय-जयकारों एवं केसरिया-केसरिया गीतों से गूंज रहा था। मार्ग में मुमुक्षु बहनें एवं माता-पिता हाथ जोड़कर अभिनन्दन स्वीकार कर रहे थे।

11 अक्टूबर। चातुर्मास प्रारंभ से अब तक पहली बार प्रात: एवं दोपहर में आचार्य भगवन् का प्रवचन हुआ। प्रवचन रूपी अमृत का पान कर जनता धन्य-धन्य हो गई। धर्मसभा में विरल विभूति आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने फरमाया कि ''हमारा आचरण व्यवहार यदि अनैतिक नहीं होगा तो हमारा मन शान्त रहेगा। परन्तु हमारे भीतर अनैतिक रूपी चोर छिपा हुआ है जो हमारे मन को सुदृढ़ नहीं होने देता। सामायिक, प्रतिक्रमण का तत्काल असर हमें ज्ञात नहीं होता, पर धीरे-धीरे उनका असर हमारे मन पर होता है। हमारे संस्कार परिवर्तित होते हैं, पर इसमें हमारी रुचि हो, लय हो। यदि रुचि से नहीं करेंगे तो सामायिक, प्रतिक्रमण हमें पहाड़ जैसे लगेंगे और यदि रुचि से किया तो मन के भावों में बदलाव आएगा। इससे पहले हमारे जीवन व्यवहार की स्थितियाँ भी ठीक होनी चाहिए। पाँच इन्द्रियों के पोषण के संस्कार हर जगह पर मिलेंगे, पर आत्महित के संस्कार बहुत कम जगह मिलते हैं। साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. ने अपश्चिम मरणान्तिक संलेखना को स्वीकार किया है।'' संथारा गीत **'संथारे की आई है बहार उदयपुर नगरी में'** के शब्दों का उच्चारण जैसे ही आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से हुआ, लोग आत्मविभोर हो गए।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मोह कर्म को क्षय करने से मोक्ष की प्राप्ति होगी। 'मैं कौन हूँ' इस आत्मस्वरूप का चिंतन हमें सदैव करते रहना चाहिए। **'संथारे की महिमा अपरम्पार गुरुचरणों में किया है स्वीकार'** संथारा गीत साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा., साध्वी श्री कविताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अंजलिश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने प्रस्तुत किया।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने एक तेला प्रभु महावीर के नाम के लिए सभी को प्रेरणा दी। इस पर सौ से भी अधिक भाई-बहनों ने तुरन्त खड़े होकर आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से दीपावली पर एक तेला करने एवं कई जनों ने उपवास करने के प्रत्याख्यान लिए।

विराट दीक्षा महोत्सव

जिन्हें होती है मुक्ति की चाह, वही चलते हैं संयम की राह

संयम मार्ग में सदा सावधान रहने की जरूरत है -आचार्य श्री रामेश

महाव्रतों का पालन करके संयम खूब दीपाना तुम।
राम गुरु की पवित्र छांव में आत्मा को चमकाना तुम।।

अनुपम दीक्षा प्रदाता, युगनिर्माता, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. की उत्कृष्ट संयम साधना

से प्रभावित होकर अनेक आत्माएँ श्रीचरणों में अपना जीवन समर्पित कर रही हैं। इसी कड़ी में स्व-पर कल्याण की साधना में-

मुमुक्षु बहन 30 वर्षीय कु. प्रियंकाजी भटेवरा सुपुत्र श्री ललितकुमारजी-संजीवनीजी भटेवरा-पुणे

मुमुक्षु बहन 28 वर्षीय कु. मुस्कानजी बरड़िया सुपुत्री श्री आसकरणजी-तारादेवी बरड़िया-देशनोक

मुमुक्षु बहन 20 वर्षीय कु. दिशाजी पगारिया सुपुत्री श्री निलेशजी-ममतादेवी पगारिया-जलगाँव

की जैन भागवती दीक्षा अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में धर्मोल्लासपूर्ण वातावरण में आयोजित की गई। इस अवसर पर चतुर्विध संघ को संबोधित करते हुए आचार्यदेव ने फरमाया कि ''सहजता से साधु जीवन नहीं मिलता है। स्नेह के बंधन अति भयंकर होते हैं। स्नेह के बंधन को काटना बहुत ही कठिन है। विरली आत्माएँ ही इसका भेदन करती हैं। निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति में दीक्षार्थी प्रवेश पाता है। स्नेह बंधन का भेदन कर आत्मकल्याण के मार्ग पर महान विरल आत्माएँ जीवन को आगे बढ़ाती हैं। संयम मार्ग में सदैव सावधान रहने की जरूरत है। कोई नया स्नेह का बंधन नहीं बांधना है तभी मुक्ति आसान होगी। शुद्ध चारित्र ऐसा धन है जो कर्मों की बेड़ी को काटने में सक्षम है। सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप मोक्षमार्ग के साधन हैं।''

हे प्रभु! मेरी एक पुकार मैं भी बन जाऊँ अणगार।
छोड़ के सारे पाप अठार मैं भी बन जाऊँ अणगार।।

गीत के बोल जैसे ही आचार्यदेव के मुखारविन्द से प्रस्तुत हुए लोगों के हृदय में वैराग्य की तरंगें उमड़ने लगी। आचार्य भगवन् ने सभी से आह्वान किया कि हम जिनशासन को शिथिल बनाने का कोई कार्य नहीं करेंगे। सभी ने अपने दोनों हाथ उठाकर आह्वान को प्रतिपूर्ण किया।

आचार्य भगवन् ने दोपहर 2:45 बजे तीनों मुमुक्षुओं की दीक्षा विधि प्रारंभ की। तीनों मुमुक्षु बहनों से दीक्षा की तैयारी के बारे में जैसे ही पूछा तो मुमुक्षु बहनों ने कहा कि भगवन्! शीघ्र ही दीक्षा प्रदान करने की कृपा कर भवसागर से पार करावें।

दीक्षा अनुमोदना में मुमुक्षुओं के परिजनों, श्री अ.भा.सा. जैन संघ, उदयपुर संघ के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा की अनुमोदना की। दोपहर 2:55 बजे आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से मुमुक्षुओं को सम्पूर्ण पापकारी सावद्य क्रियाओं का तीन करण तीन योग से त्याग करवाकर नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया। **'अरिहंत जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय, साधु जीवन जय-जय, जिन धर्म जय-जय'** के स्वर सभा में गूँज रहे थे।

नवीन नामकरण क्रमश:

मुमुक्षु कु. प्रियंकाजी भटेवरा	–	**नवदीक्षिता साध्वी श्री प्रणामश्रीजी म.सा.**
मुमुक्षु कु. मुस्कानजी बरड़िया	–	**नवदीक्षिता साध्वी श्री माधुर्यश्रीजी म.सा.**
मुमुक्षु कु. दिशाजी पगारिया	–	**नवदीक्षिता साध्वी श्री दुंदुभिश्रीजी म.सा.**

के नाम की घोषणा होते ही सम्पूर्ण वातावरण **'राम गुरु विराट हैं दीक्षाओं का ठाठ है'**, **'जय-जयकार जय-जयकार राम गुरु की जय-जयकार'** एवं केसरिया-केसरिया गीतों से गुंजायमान हो उठा।

केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले) ने सम्पन्न किया।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमें आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक आरोग्यम् के तीन बिन्दु गुणपरक दृष्टि, छिद्रान्वेषण का त्याग एवं विवाद विग्रह से परांगमुखता से घर, परिवार, समाज एवं देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है। प्रवचन के सार रूप में भावों में परिवर्तन लाना है।

साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि संयम और मर्यादा से दु:ख दूर हो जाते हैं। प्रभु की वाणी सभी को अच्छी लगती है। गुरु आधि-व्याधि को दूर कर समाधि का प्रशस्त मार्ग बताते हैं। वीर पिता श्री निलेशजी पगारिया, वीर भ्राता श्री दीपकजी बरड़िया, विनीतजी बैद, वीर भ्राता जयेशजी भटेवरा ने कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से हमारी ये लाडलियाँ कठिन संयम मार्ग पर आगे बढ़ रही है। सदैव गुरु आज्ञा का पालन करते हुए शुद्ध संयम की आराधना करें, यही मंगलकामना है। उदयपुर संघ को साधुवाद।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मजबूत इरादों से मंजिल की प्राप्ति होती है। **'संयम मानव जीवन का सार है, बाकी सब बेकार है'** की उक्ति को इन मुमुक्षु बहनों ने अपने जीवन में आत्मसात् कर जीवन को सफल और सार्थक बना लिया।

आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने **'प्यारी प्यारी बहनों तुम सुंदर पथ पाए, गुरु राम चरण आए, गुरु राम चरण आए'** सुन्दर भाव गीतिका प्रस्तुत की। संघमंत्री एवं महेश नाहटा ने इस विराट दीक्षा महोत्सव को अलौकिक एवं ऐतिहासिक बताया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। चातुर्मास व्यवस्था समिति, साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला समिति, बहूमंडल, समता युवा संघ एवं वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, उदयपुर की सेवाएँ सराहनीय रही।

'मुनि को पृथ्वी के समान सहनशील होना चाहिए'

आचार्य श्री नानेश 23वाँ पुण्य स्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश पदारोहण दिवस ''आयम्बिल दिवस'' के रूप में मनाया

12 अक्टूबर। श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने गीतिका **'राम चरणों में मस्तक झुकाते चलो, श्रद्धा भक्ति के दीप जलाते चलो'** गीत प्रस्तुत किया। धर्मपिपासु गुरुभक्तों को अमृतवाणी का पान करवाते हुए नानेश पट्टधर आचार्यदेव ने फरमाया कि ''अपने से विवाद नहीं। जिनके साथ अपनत्व का संबंध है वे अपने हैं। अपनों के साथ विवाद नहीं किया तो हमारी प्रवृत्ति विवाद की नहीं बनेगी और हम दूसरों से भी विवाद नहीं करेंगे। जिसकी विवाद की आदत है वो हर जगह विवाद करना चालू कर देगा। विवाद यानी जहाँ वाद का अस्तित्व खत्म हो जाए। विवाद, प्रेम को नष्ट करने वाला है, आत्मिक भावों का हनन करने वाला है, उलझाने वाला होता है। ज्ञान सहजता में पैदा होता है, उलझन में पैदा नहीं होता है। नाना गुरु गुणों का गुलदस्ता थे। समता को उन्होंने जीवन में उतारा। उनकी शिक्षा कि **'मुनि को पृथ्वी के समान सहनशील होना चाहिए'** को अवश्य धारण करना चाहिए।''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संसार दु:खों से झुलस रहा है। **'गुरुदेव के शरण के बराबर कोई शरण नहीं है, हु शि उ चौ श्री ज ग नाना गुरु राम के जैसा कोई नहीं'** गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि नाना गुरु एक-एक क्षण का उपयोग स्वाध्याय साधना में करते थे, तभी वे आगम पुरुष बन पाए। 'जिणधम्मो' श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज के लिए तत्त्वार्थ सूत्र के समान है। जिणधम्मो पूरे जैन धर्म का सार है।

श्री हेमगिरिजी म.सा. ने गीतिका **'दरबार हजारों है, ऐसा दरबार कहां'** के साथ फरमाया कि नाना-राम गुरु

के गुणों को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि वर्तमान आचार्य भगवन् ने निंदा, आलोचना, विरोध के लिए कभी प्रतिक्रिया नहीं की, न उसका कोई प्रतिकार किया। आपकी दृष्टि सदैव संघ विकास एवं साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की ओर आगे बढ़ाने की रही है। प्रवचन से भी अधिक आचरण को सर्वाधिक महत्त्व दिया है।

श्री आदर्शमुनिजी म.सा., श्री लाघवमुनिजी म.सा., श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने **'साधना साधना साधना साधना, राम तेरा संयम सफर, संघर्षों की है डगर'** गीतिका से सबको भावविभोर कर दिया।

साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि कथनी और करनी की दूरी मिट जाए तो जीवन निर्मल बन जाता है। नाना गुरु की कथनी और करनी एक रही। वे जैसा फरमाते थे वैसा ही आचरण करते थे। वर्तमान गुरुवर के जीवन मे हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि वैसा जैसा फरमाते हैं वैसा पहले स्वयं के आचरण में लाते हैं, फिर संघ में नया आयाम देते हैं।

साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि जब तक गुरु की सच्ची आराधना नहीं होगी तब तक हमारे भीतर श्रुतज्ञान प्रकट नहीं हो सकता। नाना गुरु ने जाते-जाते राम गुरु को देकर हमें मालोमाल कर दिया। भाव गीतिका से वातावरण आनंदित हो गया है।

साध्वी श्री तरुलताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि **'समता दर्शन और व्यवहार'** पुस्तक को जो पढ़ ले तो जीवन परिवर्तन हुए बिना नहीं रहेगा। गुरु ऐसी कई अनुमोल निधियाँ देते हैं।

शस्त्रधारी देश की रक्षा करते हैं और शास्त्रधारी आत्मा की रक्षा करते हैं

साध्वी श्री कमलश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि चाँद तारों की तारीफ करना आसान है, मगर जिनसे आपकी तारीफ हो सके वे शब्द कहाँ से लाऊँ। जो आपसे मिलता है वह अंतरपथ की यात्रा कर लेता है। नाना गुरु बचपन में माँ से पूछे बिना कहीं नहीं जाते थे और उनके हाथ से खाना खाते थे। नाना गुरु समता और संकल्प के धनी थे। राम गुरु भी संघ के कुशल संचालक हैं। शस्त्रधारी देश की रक्षा करते हैं और शास्त्रधारी आत्मा की रक्षा करते हैं। साध्वी मंडल ने गुरु भक्ति गीत एवं साध्वी श्री तरुलताजी म.सा., साध्वी श्री कविताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अंजलिश्रीजी म.सा. आदि ने संथारा गीत प्रस्तुत किया। सामूहिक आयंबिल में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 1136 आयम्बिल कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया। अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। गजेन्द्रजी आंचलिया ने अपूर्व आत्मबल का परिचय देते हुए 95 आयंबिल तप पूर्ण किए और आगे बढ़ने की संभावना है।

प्रवर्तक श्री जिनेन्द्रमुनिजी म.सा. की नेश्राय में दीक्षा लेने वाले 16 वर्षीय मुमुक्षु अचलजी मुकेशजी श्रीश्रीमाल-छोटा नागदा जि. धार एवं 28 वर्षीय मुमुक्षु प्रासुकजी राकेशजी कांठेड़, हाटपिपलिया जि. उज्जैन आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शन लाभ लेने एवं शिक्षा प्राप्त करने हेतु उपस्थित हुए।

एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ उदयपुर द्वारा भोजनशाला में मुमुक्षु भाइयों का आत्मीय बहुमान किया गया।

13 अक्टूबर। प्रात:कालीन प्रार्थना एवं जैन सिद्धान्त बत्तीसी कक्षा के पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''मन में रहे अहंकार को बाहरी बातों से चोट लगती है, जिससे समस्याएँ पैदा होती हैं। चोट उस अहंकार को चुभती है, मन को नहीं

चुभती। हम बातों को भीतर में सहज सहेज कर रखते हैं। जब तक कांटा बना रहेगा तब तक शान्ति, समाधि, मुक्ति नहीं मिलेगी और मन में तनाव बना रहेगा तथा मन विचलित रहेगा। पहले भीतर रही हुई गाँठों को दूर करो। घटना घट गई, उसे कहकर निकाल दो तो इलाज हो जाएगा। साख जमाने में समय लगता है, लेकिन साख मिटाने में समय नहीं लगता। हमें हर कार्य सावधान होकर करना है। बात समझने के बाद सुधार लाने की गुंजाइश होनी चाहिए।''

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि इस जीवन का कोई भरोसा नहीं है। संसार में मगजमारी है और संयम में समझदारी है। साध्वी श्री सुसौम्याश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. आदि ने संथारा गीत **'मोक्ष रूपी वृक्ष का बीज तूने बो दिया'** प्रस्तुत किया। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

14 अक्टूबर। प्रात:कालीन प्रार्थना के पश्चात् श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कक्षा में ज्ञानार्जन करवाया। अपार जनमेदिनी को धर्मसभा में संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य प्रवर ने फरमाया कि ''जब मन पवित्र हो, साफ हो तब परमात्मा की भक्ति हो पाएगी। यदि मन में उलझन है तो परमात्मा की भक्ति साधना मुश्किल है। कषाय आदि बहुत-सी अवस्थाएँ मन में विकार पैदा करती हैं। उन्हें हटाने के दो उपाय हैं-

1. स्वयं से स्वयं को हटाना अर्थात् स्वाध्याय से मन को साफ, पवित्र बनाना।

2. गुरु का सान्निध्य लेकर, वे जो समाधान दें उसे स्वीकार करना तथा सुधार और संशोधन करके अपनी प्रवृत्ति बनाना।

अज्ञात अवस्था में जो भीतर पड़ा रहा है, वो दुःख देने वाला होता है। ध्यान के क्षणों में ये सब अवस्थाएँ ज्ञात होती हैं। गलतियों को ठीक करने का जो लक्ष्य बना लेता है, उसका सुधार होता है। दूसरा अर्थात् आत्मा से भिन्न जब मन में आएगा तो मन में बखेड़ा खड़ा कर देगा। मन खाली नहीं होगा तब तक शान्ति नहीं मिलेगी। मन की प्रवृत्तियों को साधने की आवश्यकता है। मन को पूरा हल्का कर लूं तो प्रभु से प्रीत लग जाएगी।'' महासती श्री शांताकँवरजी म.सा. के शान्तभाव के साथ 12 दिन से संथारा गतिमान है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धन-पद-प्रतिष्ठा के चक्कर में आत्मा का बोध गायब हो रहा है। हमें आत्मकल्याण की ओर आगे बढ़ना है।

साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.स, साध्वी श्री विदेहश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने संथारा गीत प्रस्तुत किया।

उदयपुर के सांसद श्री अर्जुनजी मीणा ने महापुरुषों के पावन दर्शन-सेवा का लाभ लेने के बाद कहा कि महापुरुषों के आगमन पर उदयपुर की धरा पावन हो गई है। डॉ. गौरांग पानेरी-चित्तौड़गढ़ ने भी गुरुसेवा का लाभ लिया। चित्तौड़गढ़ संघ ने क्षेत्र स्पर्शने एवं अन्य धार्मिक प्रसंग प्रदान करने की भावभरी विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

15 अक्टूबर। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने गुरुभक्तों के मन को धर्मगंगा से पावन करते हुए फरमाया कि ''यदि हम सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण आदि कर रहे हैं तो इसका परिणाम क्या मिला? मन कितना स्वस्थ हुआ? हम इसकी समीक्षा करें। हम जो क्रिया कर रहे हैं, उससे हमारा मन कितना स्थिर है? कितना नियंत्रित हैं। मन को स्वस्थ बनाना धर्म है। मन को लय में लाने के लिए धार्मिक अनुष्ठान होते हैं और धार्मिक अनुष्ठानों को जब प्रयोग में लाते हैं तब धर्म भीतर अंकुरित होता है। आलोचना, निन्दा, गर्हा इन तीन चीजों से मन की शुद्धि हो जाती है। मगरमच्छ के आंसु दिखावे के होते

हैं और हृदय के आंसु अलग होते हैं। यदि दिखावे के आंसु हैं तो दोबारा वही करने लग जाएगा। सच्ची निन्दा, सच्ची गर्हा करने वाला यह संकल्प करता है कि ऐसा पाप मेरे द्वारा वापिस नहीं होगा।''

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मैं कुछ नहीं हूँ। मेरा कुछ नहीं हैं और मुझे कछ नहीं चाहिए। यह चिन्तन सदैव करते रहना चाहिए। इससे कर्म हल्के होंगे। साध्वी श्री किरणप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सिद्धमणिजी म.सा. एवं साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा. ने संथारा गीत प्रस्तुत किया।

महासती श्री शांताकँवरजी म.सा. का संथारा आज तेरहवें दिन अपूर्व समभाव एवं साधना के साथ प्रवर्द्धमान है। दर्शनार्थियों का तांता लगा हुआ है। राम महोत्सव चातुर्मास अद्‌भुत धर्माराधना के साथ गतिमान है। मोक्ष आराधना शिविर, थोकड़े एवं ज्ञान के विभिन्न शिविर संभावित हैं। दीपावली **'भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव'** में दीपमाला प्रवचन शृंखला में तेले तप की आराधना होगी। 5 नवम्बर को मुमुक्षु बहन शिवानी भंडारी-जोधपुर की जैन भागवती दीक्षा संभावित है।

चैन्नई, दिल्ली, भूपालसागर, खिरकिया, कालधड़, नागदा जंक्शन, मैसूर, इन्दौर, रतलाम, पिपलियामंडी, फतहनगर, चैन्नई, फाजिल्का, हावड़ा, कोलकाता, बदनावर, मंदसौर, विराटनगर (नेपाल), बीकानेर, बांसवाड़ा, भाटापारा, नुआपाड़ा, उड़ीसा, भीलवाड़ा, दिल्ली, कोयम्बटूर, रायपुर, भदेसर, जावरा, गुवाहाटी, जलगाँव, दुर्ग, उज्जैन, मोरवन, खरियार रोड, अहमदाबाद, चैन्नई, अठाना, नोखा, डबवाली, भीण्डर, जयपुर, बम्बोरा, कपासन, फतेहनगर, जोधपुर, बैंगलूरु, नारायणपुर, रालेगाँव, खरगोन, सूरत, पांढरकवड़ा, हैदराबाद सहित अनेक स्थानों के गुरुभक्तों ने अनेक धार्मिक अवसरों का लाभ लेते हुए गुरुदर्शन-सेवा में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। प्रतिदिन आगम वांचनी, प्रश्नोत्तरी, ज्ञानचर्चा एवं विभिन्न शिविरों के आयोजन हुए।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्रद्धेय श्री हेमगिरिजी म.सा.	9 उपवास
श्रद्धेय श्री इभ्यमुनिजी म.सा.	9 उपवास
साध्वी श्री सौम्यताश्रीजी म.सा.	31 उपवास
साध्वी श्री रमामीश्रीजी म.सा.	30 उपवास
साध्वी श्री मधुबालाजी म.सा.	23 उपवास
साध्वी श्री चिन्तनप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	23 उपवास
साध्वी श्री रुचिश्रीजी म.सा.	23 उपवास
साध्वी श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.	23 उपवास
साध्वी श्री कृतिश्रीजी म.सा.	22 उपवास
साध्वी श्री अर्जिताश्रीजी म.सा.	8 उपवास

श्रावक-श्राविका वर्ग

हेमलताजी बांठिया-नोखा	95 उपवास (गतिमान)
पुलकितजी गुलगुलिया-देशनोक	93 उपवास (गतिमान)
किरणकुमारजी हिंगड़	62 उपवास
मनोहरदेवी नाहर	45 उपवास
पिस्तादेवी बोरदिया	25 उपवास

उपवास- 15-सुरेन्द्रजी चौधरी 9-अशोकजी संकलेचा, सरोजजी चपलोत

आजीवन शीलव्रत

अजीतजी गोलछा-वावई, कचरमलजी-पुष्पादेवी भण्डारी-पिपलियामण्डी, गुलाबबाई धाकड़-बड़ीसादड़ी, बाबूलालजी-कमलाबाई जैन, भूपालसिंहजी-कमलादेवी बोरदिया, सन्तोषजी खमेसरा, राजेन्द्रजी बापना, वरदानजी मेहता, राजूजी मेहता, सम्पतजी, चंचलजी कुम्मठ, पवनजी-उमाजी बाफना, शशिकलाजी मेहता, अनिलजी-पिंकीजी रांका-अहमदाबाद, जसवंतजी कमलादेवी गन्ना, शान्तिलालजी-बसन्तीदेवी पोरवाल, छोटूरामजी जैन-गंगा, महावीरजी-उर्मिलाजी पारख-नोखा,

हीरालालजी लीलादेवी पितलिया-बम्बोरा, अभयकुमारजी जैन-इन्दौर, राकेशजी जैन-मुजफ्फरनगर, नरेन्द्रजी जैन-मुजफ्फरनगर, गणेशमलजी-पुष्पाजी नवलखा-बीकानेर, अर्जुनजी जतनजी लोढ़ा, विमलादेवी ललितजी मेहता, आसकरणजी तारादेवी बरड़िया-देशनोक, नरेशजी मीनूजी जैन-लुधियाना, महेन्द्रजी मधुजी सुराणा-जयपुर, कुन्तीदेवी सेठिया, सागरमलजी खापरिया-कुकड़ेश्वर

माह में 25 दिन- विनोदजी-ऋतुजी कटारिया-रतलाम

उपवास के प्रत्याख्यान 31-देवीलालजी सिरोया-भूपालसागर
24-तुलसीदेवी भूरा-भीलवाड़ा
एक वर्ष में 15-सुरेन्द्रजी चौधरी-मंदसौर
12-प्रेमबाई मेहता-प्रतापगढ़

तेला 12-प्रेमलताजी नाहर

नवकारसी आजीवन- अंजलीजी पामेचा-नारायणगढ़, दुर्गाजी बोहरा-औरंगाबाद, शोभाजी चतुरमूथा-गेवराई, सरलाजी कोचेटा-नासिक, मधुबालाजी करणपुरिया, कुसुमदेवी वया (आजीवन चौविहार एवं जमीकंद त्याग भी)
100 पक्की-सुनीताजी नाहटा-नगरी, मनोजजी गुलगुलिया-बीकानेर, प्रेमचन्दजी बोरा-गुड़ी, ऊषाजी झामर, निर्मलाजी नागौरी, सुन्दरबाई बरड़िया-गुड़ी, ललितजी कासमां

पौरसी 200 पक्की-सुमनजी कुमठ-चैन्नई
100 पक्की-प्रियंकाजी वया-भीण्डर, पदमाजी डागा-विराटनगर (नेपाल), अनिताजी छाजेड़-जोधपुर, कंचनदेवी सुराना-नारायणपुर, संध्याजी बोथरा-रालेगाँव

पौषध वर्ष में 20-मूलचन्दजी सेठिया-रायपुर

गाथा का स्वाध्याय वर्ष में 7 लाख-ममोलजी पारख-बीकानेर
वर्ष में 2 लाख-सुनीताजी पारख-बीकानेर
वर्ष में 1 लाख-अलका दक-इन्दौर, विजेताजी सोनी-किशनगढ़, मूलीदेवी सुराणा, किरणजी कंचनजी लुणावत
100 गाथा-वर्षाजी नांदेचा-बदनावर, आशाजी नाहर-भीलवाड़ा

बड़े स्नान का त्याग वर्ष में 345 दिन-शान्तिलालजी ललवानी-भाटापारा (2250 सामायिक भी)
वर्ष में 300 दिन-किरणदेवी सिपानी-गौहाटी

मोबाइल त्याग आजीवन-तेजमलजी पामेचा-पिपलियामण्डी
माह में 20 दिन-लक्ष्य धोका, चैन्नई

वर्षीतप अनिलजी मनमट-गंगापुर, ऊषाजी कोठारी-जलगाँव, निर्मलाजी सेठिया-लुधियाना, राजकुमारीजी मारू-बड़ीसादड़ी

21 द्रव्य और एक हजार सामायिक मोहनलालजी भूरा-गंगाशहर

होटल का त्याग, पिज्जा, मैग्गी, कोल्डड्रिंक्स का त्याग, सोने-चाँदी के आभूषणों का त्याग, दीपावली पूजन त्याग, एक माह क्रोध का त्याग आदि कई त्याग-प्रत्याख्यान कर जन-जन ने त्याग की ओर कदम बढ़ाए। **-महेश नाहटा**

मेवाड़ अंचल

चित्तौड़गढ़। शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में चातुर्मास में धर्म-ध्यान का ठाठ लगा हुआ है। समता शाखा में 300-400 युवाओं की उपस्थिति रहती है। साध्वीवर्याओं के विशेष प्रयासों से 5 दिवसीय महिला शिविर में 225 महिलाओं तथा 3 दिवसीय युवा एवं प्रौढ़ शिविर में 125 श्रावकों ने भाग लिया। प्रत्येक शनिवार को सामूहिक संवर में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं। पर्वाधिराज पर्युषण में तप-त्याग की मानो होड़ लग गई। अब तक 180 तेले, 8 उपवास 13, 9 उपवास 13, 11 उपवास 4, 750 संवर, 150 पौषध सम्पन्न हो चुके हैं। नानेश रामेश ज्ञान विद्यापीठ गुरुभक्तों की उपस्थिति देखते ही बनती है। रिकॉर्ड 650 सामूहिक पारणे हुए। **-बंशीलाल श्रीश्रीमाल**

चिकारड़ा। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ की नवीन कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार किया गया- अध्यक्ष पारसमलजी कोठारी, मंत्री सुन्दरलाल लोढ़ा, उपाध्यक्ष प्रकाशचन्द्रजी धींग, सहमंत्री अशोककुमारजी बोहरा, कोषाध्यक्ष दिनेशकुमारजी बोहरा सहित संरक्षक- ईश्वरलालजी बोहरा, मोहनलालजी खटोड़, भगवतीलालजी कोठारी एवं नन्दलालजी बोहरा। **-सुन्दरलाल लोढ़ा**

भीम। समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के 23वें पुण्यस्मृति दिवस एवं परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में 12 अक्टूबर को गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। जैन स्थानक भवन में विराजित श्रमण संघीय साध्वी राजस्थान उपप्रवर्तिनी श्री मैनाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-6 के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र जाप, नानेश-रामेश चालीसा पाठ, नानेश चिंतनमणियाँ, आदि का वाचन किया गया। इस अवसर पर 9 आयम्बिल एवं 4 एकासन तप हुए। सभी श्रावक-श्राविकाओं ने दो-दो सामायिक की भेंट गुरुचरणों में अर्पित की एवं अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

पुण्यस्मृति दिवस के उपलक्ष्य में गौमाता में फैल रही लम्पी बीमारी की रोकथाम हेतु भीम साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल एवं समता युवा संघ के तत्त्वावधान में आयुर्वेदिक औषधियों से मिश्रित 1 हजार लड्डू बनाकर आवारा पशुओं को खिलाए गए। **-पंकज दक**

कानोड़। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मास समता साधना भवन में उत्तरोतर गतिमान है। प्रार्थना पश्चात् युवा वर्ग की कक्षा चलती है। पर्युषण में साध्वी श्री उन्नतिश्रीजी म.सा. ने अन्तकृद्दशांगसूत्र का वाचन किया एवं साध्वी श्री सम्पदाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री रश्मिश्रीजी म.सा. ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन धारा प्रवाहित की। साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. के मधुर व प्रभावशाली प्रवचनों से श्रोतागण भावविभोर हो उठते हैं। कई छोटी-बड़ी तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। सायंकालीन प्रतिक्रमण में अच्छी उपस्थिति रहती। महिला वर्ग में संवर आराधना की होड़ लगी रही।

25 सितम्बर को 251 श्रावक-श्राविकाओं ने उदयपुर में गुरुचरणों में उपस्थित होकर आगामी चातुर्मास हेतु भावभरी विनती प्रस्तुत की।

-तखतमल लसोड़

बीकानेर मारवाड़ अंचल

लूणकरणसर। शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन वर्षावास

में ज्ञान-ध्यान की अपूर्व छटा छाई है। महासतीवर्याओं के प्रबल पुरुषार्थ से प्रार्थना के अवसर पर 18 पाप स्थान, भक्तामर, भिक्षाचर्या के 110 दोष, बड़ी साधु वंदना तथा शिविर में तीर्थंकर का समवसरण आदि का ज्ञानार्जन हुआ। समय-समय पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से अंतकृद्दशांग सूत्र, सामायिक सूत्र, पांच पदों का ज्ञान आदि सीखने का क्रम जारी है। प्रवचन में दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन, 22 परीषहों का विवेचन सहित अनेक विषयों पर धाराप्रवाह अमृतवाणी का पान हो रहा है। कईं जैन-जैनेतर भाई-बहिन भी लगातार प्रवचन एवं ज्ञान-ध्यान का लाभ ले रहे हैं। अनेक जैनेतर परिवारों ने समकित ग्रहण की है। कई लोग धर्म में अग्रसर हो रहे हैं एवं कईयों ने उपवास, आयम्बिल, एकासन आदि तप किए तथा सामायिक, प्रतिक्रमण आदि सीखने में संलग्न हैं। **-ओमप्रकाश बरड़िया**

सोमेसर। पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी भाई महावीरचंदजी रांका, गुलाबचंदजी लोढ़ा-ब्यावर, कमलकुमारजी बोथरा-दिल्ली ने अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। आपने प्रार्थना, प्रवचन, अंतगडसूत्र, कल्पसूत्र, चौपाई, प्रतिक्रमण, धार्मिक प्रतियोगिताएँ, कहानियाँ, धर्मचर्चा, संवाद, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से धर्म की अपूर्व अलख जगाई। आपके सान्निध्य में हमारे यहाँ 24 घण्टे नवकार महामंत्र जाप सहित दयाव्रत 37, सामायिक 2825, उपवास 48, एकासन 55, बेला 2, तेला 3, चौला 1, पचौला 1 तथा छ: की तपस्या 1 आदि हुए। संवत्सरी को क्षमायाचना के प्रसंग के समय सभी के आंसू छलक पड़े। मन्दिरमार्गी सम्प्रदाय के अनेक लोगों ने भी पूर्ण सामायिक वेशभूषा में धर्मध्यान में भाग लिया। 30 अगस्त को 500 बच्चों को महावीरचंदजी रांका ने सप्तकुव्यसन एवं पटाखे फोड़ने के त्याग विषय पर उद्बोधन दिया। बच्चों से गुणशील के फॉर्म भरवाए गए। **-जेठमल दुगड़**

नोखा। स्थानीय युवा संघ द्वारा 25 सितम्बर को मेडिकल जाँच शिविर का आयोजन हुक्म नानेश भवन में किया गया, जिसमें शुगर, ब्लड प्रेशर, पल्स रेट, आदि की जाँच की गई। यह शिविर प्रत्येक रविवार को सुबह 07:30 से 09:30 बजे तक लगेगा। प्रथम दिवस इस शिविर में 60 व्यक्तियों ने जाँच करवाई। शिविर में तिवाड़ी डायग्नोस्टिक सेंटर के धर्मेन्द्रजी तिवाड़ी ने सेवाएँ दी। शिविर की व्यवस्थाओं में समता युवा संघ के सदस्यों का सहयोग रहा।

श्री साधुमार्गी जैन संघ नोखा में शासन दीपिका साध्वी श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में युवा संघ व महिला मंडल के प्रयास से 157 दयाव्रत (11 सामायिक साथ में प्रतिक्रमण) सम्पन्न हुए। **-विकास सुराणा**

जयपुर ब्यावर अंचल

ब्यावर। शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. ने विजया दशमी के प्रसंग पर भजन **'कलयुग बैठा मार कुंडली, जाऊं तो अब कहाँ जाऊं'** के साथ फरमाया कि आत्मनिष्ठ बनने के लिए चारित्रनिष्ठ बनें। रावण सर्वशक्तिमान एवं विद्वान था। उसके विचारों में, चारित्र में विकार उत्पन्न हो जाने के कारण आज हजारों वर्षों बाद भी उसका पुतला जलाया जा रहा है। आज मानव अपने मन में बैठे हुए विकारों के महारावण को नहीं देख पा रहा है। आज के तथाकथित चरित्रहीन मनुष्यों से रावण श्रेष्ठ था। राम-रावण दोनों एक ही राशि के थे, पर उनके गुणों में फर्क था।

श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने श्रीपाल चरित्र का विवेचन करते हुए फरमाया कि श्रीपाल सद्गुणी व्यक्ति था। जहाँ भी जाता वहाँ प्रसिद्धि पा लेता। **-नोरतमल बाबेल**

अजमेर। शासन दीपिका साध्वी श्री सुरभिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा गुरु इंगित मात्र से मात्र 10 दिन में उदयपुर से अजमेर पधारी। आपश्रीजी ने प्रतिदिन 30-35 किमी. पद विहार कर चातुर्मासार्थ वैशालीनगर स्थित जैन श्वेताम्बर संस्थान में प्रवेश किया। आपश्रीजी के सान्निध्य में ध्यान, तप, ज्ञानार्जन, स्वाध्याय, संवर,

दया, विभिन्न लड़ियां गतिमान हैं। आपश्री के सान्निध्य में तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीवर्याजी ने सचित्त-अचित्त की जानकारी, उनका विवेक, आहार बहराने की भावना आदि विषयों पर अनूठा ज्ञान दिया।

साध्वीवर्याएँ महत्तम महोत्सव की प्रभावना हेतु लगातार प्रेरणा दे रहे हैं। 14-15 अगस्त को बच्चों के लिए लाईफ डिजाइनिंग विषय पर शिविर एवं 16 से 20 अगस्त को महिलाओं का ड्रीम लाइफ विषय पर शिविर आयोजित किए गए। दोनों ही विषयों पर साध्वीवृन्द ने धाराप्रवाह प्रवचन फरमाया। पर्युषण पर्व में भी अपूर्व धर्माराधना सहित 24 घंटे नवकार महामंत्र का जाप आदि हुए। 22, 20, 11, 9, 8, 3, उपवास, एकासन आदि विविध प्रत्याख्यान हुए। दिन में अध्ययनार्थ श्रावक-श्राविकाएँ कर्मसिद्धांत, प्रतिक्रमण, आगम आदि का अध्ययन करने आते हैं। श्री जैन श्वेताम्बर संस्थान, वैशालीनगर इस चातुर्मास में विशेष लाभ ले रहा है।

साध्वी श्री सुरभिश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में बहनों का 'संलेखना संथारा' विषय पर त्रिदिवसीय शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक रविवार को प्रातः 'बिजी लाईफ में ईजी धर्म' विषय पर कक्षा तथा बच्चों के लिए रविवार बाल पाठशाला का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक शनिवार को अच्छी संख्या में संवर होते हैं। इनके अलावा रविवारीय समता शाखा, अब कर कमाल, जैन संस्कार परीक्षा, कर्म क्विज एक्टिविटी, 12 व्रत पर शिविर, आयंबिल ओली आराधना, शरद पूर्णिमा पर अर्द्ध मासखमण, कार्तिक बदी तीज को सामूहिक आयंबिल एवं गुरु गुणगान आदि कार्यक्रम हुए। **-शर्मिला खींवेसरा**

कोटा। शासन दीपिका साध्वी श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास अपूर्व धर्मोद्योत के साथ गतिमान है। प्रारंभ से ही ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग में लोग बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। अब तक चेतनाजी जैन के 18, ज्योतिजी कांकरिया के 16, इन्द्राजी बांठिया के 15, पानादेवी बांठिया के 14, सिम्पलजी बोहरा के 11, 9 उपवास- चन्दाजी रांका, गुड्डीजी कांकरिया, अनमोलजी बोहरा, खुशीजी सामसुखा, अठाई- चन्दाजी पोरवाल, सीमाजी कांकरिया, अंजलीजी बोहरा, कृतिकाजी जैन, ध्रुवजी सुराणा, सुनीताजी संचेती के तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। इनके अलावा 25 तेले, 3 एकासन के मासखमण, 1 धर्मचक्र, 2 सामायिक की पचरंगी, एवं 3 बच्चों के वंदना के मासखमण सम्पन्न हो चुके हैं। 14 नियम और उनकी पालना तथा ज्ञानार्जन के नियम शिविर सम्पन्न हो चुके हैं। दैनिक रूप से प्रश्नमंच, प्रत्येक सप्ताह धार्मिक प्रतियोगिताएँ, प्रश्नमंच आदि हो रहे हैं, जिनके विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

पर्युषण पर्व के आठों ही दिन म.सा.श्रीजी ने अंतकृद्दशांग सूत्र के वाचन सहित अलग-अलग विषयों पर धाराप्रवाह प्रवचन धारा प्रवाहित की एवं प्रतिदिन नवकार महामंत्र जाप, सायंकालीन प्रतिक्रमण, पौषध व संवर आदि हुए। साध्वी श्री श्रेयाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री मुस्कानश्रीजी म.सा. द्वारा धार्मिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से ज्ञानार्जन करवाया। चातुर्मास प्रारंभ से ही अंजूजी सोनावत एवं सुनीताजी संचेती के एकासन चल रहा है तथा नवरतनजी सोनावत मासखमण पूर्ण कर चुके हैं। **-हनुमान दुगड़**

छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल

देवकर। सुरही नदी के पावन तट पर बसे देवकर नगर में शासन दीपक श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. एवं श्री सौरभमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में चातुर्मास के अन्तर्गत तप-त्याग एवं धर्माराधना अपूर्व उत्साह के साथ गतिमान है। चारित्रात्माओं के आह्वान पर चातुर्मास में अब तक तेला दिवस, एकासना दिवस, सामायिक दिवस, संवर दिवस, प्रतिक्रमण दिवस, धार्मिक कार्यक्रम प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, धार्मिक परीक्षा, ज्ञानवर्द्धक शिविर, कक्षाओं, प्रार्थना,

प्रवचन, घर-घर तेला, कौन बनेगा धर्मवीर आदि अनेकानेक धार्मिक कार्यक्रम हो चुके हैं और अनवरत गतिशील है।

तप के क्रम में आदिजी बोरा 53 उपवास, प्रखरजी बोरा 31 उपवास एवं रौनकजी बोरा 30 उपवास पूर्ण हुए हैं। इसके अलावा 15 उपवास 1, 11 उपवास 4, 9 उपवास 14, 8 उपवास 7, 5 उपवास 2, 4 उपवास 6, 16 दिन आयंबिल 1 एवं तेला 81 सहित एकासन, बियासना का मासखमण आदि सम्पन्न हो चुके हैं। तीन अजैन- कविताजी वानखेड़े, सागरजी कुंजाम एवं सियारामजी सिन्हा ने भी तेला व्रत किया। अंजनाजी बोरा, कु. मुस्कानजी बोरा एवं ज्ञानचन्दजी पारख के मासखमण गतिमान है।

यह चातुर्मास हमारे लिए वरदान बन गया है। संतवृंद के सान्निध्य में 18-19 सितंबर को दो दिवसीय भव्य आरोहणा शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 15 युवाओं ने भाग लेकर सन्तों का सान्निध्य में 48 घंटे तक रहकर शिविर को सफल बनाया। **-रमेश बोरा**

रायपुर। सुराणा भवन, छोटापारा में शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में आचार्य श्री नानेश चादर प्रदान दिवस अपूर्व धर्मोद्योत के साथ मनाया गया। आपश्रीजी ने फरमाया कि हर व्यक्ति को उसके कर्म के अनुसार ही फल मिलता है। भगवान महावीर की शासन परम्परा का निर्वहन करने वाले आचार्य श्री नानेश का आचार्य पद दिवस प्रसंग उपस्थित हुआ है। नाना गुरु समताधारी महापुरुष थे।

श्री दिनेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर की परम्परा के प्रथम आचार्य सुधर्मा स्वामी की पाट परम्परा के 81वें पट्टधर आचार्य श्री नानेश ने इस संसार में धर्म का झंडा फहराने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आपश्रीजी ने 1 लाख से अधिक लोगों को धर्मपाल का स्वर्ण तिलक लगाया।

इस अवसर पर 425 से अधिक एकासन, दो सामायिक सहित कस्तूरजी सांखला के अठाई आदि तप हुए। अनेक वक्ताओं ने नाना गुरु के जीवन पर प्रकाश डाला। **-अशोक सुराणा**

राजनांदगाँव। शासन दीपक श्री हर्षितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 के चातुर्मास में तप-त्याग की अद्‌भुत छटा छाई हुई है। पर्युषण के प्रारंभ में म.सा.श्रीजी ने 111 तेले तप का आह्वान किया था, जिसे संघ ने 354 तेले सम्पन्न कर पूर्ण किया। संवत्सरी के दिन 117 अठाई तप के एक साथ पच्चक्खाण हुए। बहनों ने तीन बार थोकड़ों की अठाई सम्पन्न कर महत्तम महोत्सव के 20 थोकड़े के लक्ष्य को पूर्ण किया। अब तक 30 मासखमण, 300 से अधिक अठाईयां, सामूहिक 1300 एकासन तप पूर्ण हो चुके हैं। कार्तिक बदी तीन के दिन युवाओं ने लगभग 300 आयंबिल पूर्ण किए। चातुर्मास प्रारंभ से ही प्रतिदिन लगभग 30 रात्रि संवर हो रहे हैं। आसोज माह में बच्चे, युवा, वृद्ध सभी ने संवर की अठाई में बढ़-चढ़कर भाग लिया। आसोज माह में लगभग 100 रात्रि संवर में पूर्ण हुए। संवत्सरी महापर्व पर 500 से अधिक पौषध व्रत हुए।

तप के क्रम में 41 उपवास- पायलजी ओस्तवाल, 35 उपवास- मनोजजी कवाड़, 33 उपवास- सौरभजी भंसाली, लूणकरणजी भंसाली, 32 उपवास- सूरजदेवी पारख, गणेशजी ओस्तवाल, 31 उपवास- संजयजी पारख, निशाजी ओस्तवाल, मनीषजी श्रीश्रीमाल, सिद्धीजी सांखला, राखीजी सांखला, अनिलजी पारख, 30 उपवास- युक्ताजी चौरड़िया, प्रणिधिजी पारख, संतोषीजी ओस्तवाल, किरणजी गिड़िया, भारतीजी गिड़िया, वंदनाजी बैद, निवेदिताजी बैद, रीनाजी पारख, सिद्धीजी बाफना, संगीताजी ओस्तवाल, रिद्धीजी पारख, विनीताजी पारख, अर्चनाजी सांखला, रूपालीजी टाटिया, निक्कीजी ओस्तवाल, पूजाजी कांकरिया, ममताजी गोलछा, 28 उपवास- विप्राजी बैद, मदनजी पारख के 8, इंदिराजी पारख के 9 उपवास की तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। अंशुजी पारख के 21, सूरजदेवी सुराना के

15 की तपस्या जारी है। प्रफुल्लजी कवाड़ ने आयंबिल का 36 प्रत्याख्यान ग्रहण किया। **-बालचंद पारख**

कर्नाटक आन्ध्रप्रदेश अंचल

बैंगलूरु। गुरु की शरण में आने वाला महान बन जाता है। जिस प्रकार पारसमणि को स्पर्श करने मात्र से लोहा भी स्वर्ण बन जाता, उसी प्रकार महान गुरु का सच्चा सान्निध्य पाकर भक्त भी महान बन जाता है। आवश्यकता है गुरु के प्रति पूर्ण भावेन सच्चे समर्पण की। उपरोक्त उद्‌गार आरपीसी लेआउट स्थित समता भवन में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशनाश्रीजी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश स्वर्गारोहण दिवस एवं आचार्य श्री रामेश पदारोहण दिवस पर अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए प्रकट किए।

साध्वीवर्या ने आचार्य श्री नानेश के जिनशासन के प्रति महत्वपूर्ण योगदान को बताते हुए वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामेश के भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित आगमवाणी के दृढ़ श्रद्धापूर्वक जीवन में सम्यक् अनुपालना पर प्रकाश डाला।

साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश के समतामय जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी श्री भाविताश्रीजी म.सा. ने **'नाना गुरु की महिमा महान'** गीतिका से वातावरण गुरु भक्तिमय बना दिया। साध्वी श्री नवकारश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री नानेश की उनकी दिव्य दृष्टि सदैव भक्तों का कल्याण करने में रहती थी। इस अवसर पर हनुमंतनगर जैन महिला मंडल की अध्यक्षाजी के नेतृत्व में महिला मंडल उपस्थित हुआ एवं शेखेकाल में हनुमंतनगर पधारने की विनती की। संघ मंत्रीजी सहित अन्य अनेक वक्ताओं ने भाव व्यक्त किए। **-धर्मचंद बंबकी**

तमिलनाडू अंचल

चेन्नई- शासन दीपिका साध्वी श्री समीहाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में कांकरिया भवन किलपॉक में धर्म-ध्यान, तप-त्याग का ठाठ लगा हुआ है। प्रतिदिन प्रवचन एवं प्रात:, दोपहर की कक्षा आदि में श्रावक-श्राविकाएँ तथा युवा जिनवाणी के श्रवण सहित ज्ञान-ध्यान सीख रहे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व में आठों दिन अन्तकृद्दशांग सूत्र का वाचन एवं विवेचन एवं प्रवचन श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रथम तीन दिन 160 से अधिक तेले हुए। अठाई एवं नौ की तपस्याएँ लगभग 70 हुई। सायंकालीन प्रतिक्रमण में उपस्थिति अच्छी रही। सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम हुआ। सज्जनबाई झाम्बर ने 41 उपवास, सपनाजी छाजेड़ ने 30 उपवास, सुश्री एकता झाम्बर ने 16 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

प्रत्येक रविवार को समता शाखा एवं बच्चों की क्लास होती है। स्थानीय स्तर पर जैन सिद्धांत बत्तीसी पर दो बार परीक्षा रखी गई, जिसमें अनेक श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों ने भाग लिया। प्रतिक्रमण की ओपन बुक परीक्षा भी सातवें अणुव्रत तक रखी गई।

-सुभाषचंद नाहर

पूर्वोत्तर अंचल

गुवाहाटी। समता भवन में 1 से 9 अक्टूबर तक श्री समता महिला समिति के तत्वावधान में नवपद ओली तप का आयोजन किया गया, जिसमें धनलक्ष्मीजी कोठारी, विनीताजी सुराणा, रेखाजी सुराणा, किरणदेवी कांकरिया, सायरदेवी नाहर, सरलादेवी नाहर, विमलादेवी बैद ने 9 दिन इस तप की आराधना की। इनके अलावा निर्मलादेवी गांधी, कांताजी बोथरा एवं सम्पतजी भूरा ने 3 दिन आयम्बिल तप एवं ज्ञानशाला के बच्चों जितेन्द्र दुगड़ एवं तरुणा दुगड़ ने एक दिन आयम्बिल तप किया। पर्व के दिनों में श्रीपाल चारित्र का वांचन एवं हिन्दी अनुसाद किरणदेवी लुणावत ने किया। इन 9 दिनों में 148 आयम्बिल तप एवं लगभग 500 सामायिक हुई। नवकार महामंत्र का जाप प्रतिदिन हुआ। सभी तपस्वियों का शॉल एवं चुनड़ी से अभिनन्दन किया गया। **-राजेन्द्र दस्साणी**

पाठशाला निरीक्षण प्रवास एवं वर्कशाप सम्पन्न

समता संस्कार पाठशाला की राष्ट्रीय संयोजिका द्वारा 18 से 23 सितम्बर तक मालवा अंचल में गतिमान पाठशालाओं के प्रभावी निरीक्षण हेतु प्रवास किया गया। इस 6 दिवसीय प्रवास में आपने अंचल में चल रही विभिन्न पाठशालाओं में जाकर निरीक्षण करते हुए शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित बच्चों एवं स्थानीय पदाधिकारियों से चर्चा की। आपने शिक्षकों से बच्चों को और अधिक धार्मिक ज्ञान प्रदान करने सहित गुरुदेव के स्वप्न को साकार कर ज्ञानवान एवं चारित्रवान बनाने का आह्वान किया। इस दौरान आपने अठाना, बदनावर, भालोट, चारुआ, दलौदा, धामनिया, जामुनियाकलां, जावरा, गुड़ीखेडा, इंदौर, झारड़ा, खिरकिया, कंजार्ड़ा, कुकड़ेश्वर, कानवन, मोड़ी, मंदसौर, नीमच, नारायणगढ़, नगरी, पिपलियामंडी, रतलाम, उज्जैन एवं रामपुरा क्षेत्र की पाठशालाओं का सघन निरीक्षण कर दिशा-निर्देश दिए। आपको अनेक स्थानों पर चातुर्मासार्थ विराजित संत-सतियाँ जी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

टीचर ट्रेनिंग वर्कशॉप :- 24 सितम्बर को मालवा अंचल की पाठशालाओं के शिक्षकों के लिए रतलाम में टीचर ट्रेनिंग वर्कशॉप आयोजित किया गया, जिसमें अत्र विराजित शासन दीपक श्री सुमितमुनिजी म.सा., श्री ब्रह्मऋषिजी म.सा. एवं श्री ऋजुप्रज्ञमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। ट्रेनर सचिनजी चंडालिया भीलवाड़ा से पधारे। आपने ट्रेनिंग के दौरान बच्चों में ज्ञान-ध्यान के प्रति उत्साह जगाने, बच्चों की रुचि अनुसार सरलतापूर्वक अध्ययन करवाने, स्वविवेक से बच्चों के भविष्य निर्माण में सहयोग देने सहित बच्चों को पढ़ाने के विभिन्न तरीकों से अवगत कराया। अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ वर्कशॉप का समापन हुआ।

-पूजा शाह, राष्ट्रीय संयोजिका

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें निःसंकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 नवम्बर तथा दिसम्बर 2022** के धार्मिक अंक **'समय की महत्ता, श्रावकाचार, विहार सेवा सबसे बड़ी जिम्मेदारी'** विषय पर आधारित रहेंगे। रचनाओं की शब्द सीमा 500-1000 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी **M.I.D.** (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ आमंत्रित हैं।

-श्रमणोपासक टीम

श्री साधुमार्गी जैन संघ, कोलकाता

समरसता अभियान के तहत उत्तर कोलकाता Meet & Greet कार्यक्रम

लेकटाउन - रविवार - 21.08.2022

श्री साधुमार्गी जैन संघ, कोलकाता द्वारा समरसता अभियान के तहत Meet & Greet कार्यक्रम उत्तर कोलकाता से बांगुर, लेकटाउन, साल्टलेक, राजारहाट, दमदम, बागुईहाटी, केस्टोपुर, नागेरबाजार, वी.आई.पी. रोड, जेसोर रोड, कांकुरगाछी, फूलबागान, बेलियोघाटा, बरानगर तथा अन्य समीपवर्ती क्षेत्रों के परिवार के सदस्यों के साथ रविवार, 21.08.2022 को दोपहर 3 बजे Banyan Tree Banquets में आयोजित किया गया। इस सभा में त्रिवेणी संघ के सदस्यों ने अपनी सहभागिता प्रदान की।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। महामंत्रीजी ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्षजी ने संघ और इस कार्यक्रम का आयोजन करने के लक्ष्य से सभी को अवगत कराया। उन्होंने उपस्थित सभी को बताया कि कैसे इस कार्यक्रम से आपसी प्रेम, सहयोग व जुड़ाव बढ़ाना है। जो सदस्य किसी भी कारण से संघ की गतिविधियों से जुड़ नहीं पा रहे, उन तक पहुँचना और जोड़ना है। इसके अलावा यह भी बताया कैसे संघ ने एक समिति का गठन किया है, जो सदस्यों की कैसी भी परेशानी (भले ही निजी भी) हो, उनकी समस्या सुनने तथा उसका समाधान देने का प्रयास करेगी। उक्त समिति इन बातों को पूर्ण गुप्त रखने के लिए कटिबद्ध है। समता-समरसता हमारे निजी जीवन में झलके यही प्रयास है।

सभी उपस्थित सदस्यों ने अपना परिचय दिया तथा 'संघ से उनको क्या मिला और क्या मिलना चाहिए' विषय पर खुलकर अपनी बात रखी। कुछ बिन्दु इस प्रकार है-

1. संघ से जुड़ने से एक वृहद् परिवार का गठन। 2. संघ में आपसी मेल-मिलाप से ज्ञान-ध्यान में सहयोग। 3. बाहर से आने वाले स्वधर्मी छात्रों या मरीजों को कैसे सहयोग प्रदान हो। 4. त्रिवेणी संघ एक साथ कार्य करे। 5. विहार सेवा के लिए एक ऐसी टीम तैयार हो, जो रास्ते में पड़ने वाले स्थानों को चिन्हित करे।

मनोजजी भूरा, संयोजक प्रोफेशनल फोरम ने उपस्थित तथा परिचित प्रोफेशनल सदस्यों से इस फोरम में सम्मिलित होकर संघ से जुड़ने का निवेदन किया। उपस्थित सदस्यों में से लगभग 15 सदस्यों ने इससे जुड़ने की सहमति प्रदान की। महिला समिति की अध्यक्ष तथा युवा संघ अध्यक्ष ने कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में संघ, महिला समिति एवं युवा संघ के अन्य अनेक गणमान्यजनों ने सुझावों को अंकित किया। कार्यक्रम का समापन चम्पालालजी बैद द्वारा प्रदत्त मांगलिक पाठ से हुआ।

-मनोज डागा

विविध भेंट मार्फत

01 सितम्बर से 30 सितम्बर 2022

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है, जिससे विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है-

महाप्रभावक सदस्यता

280000/- श्री बसंतकुमारजी कटारिया, रायपुर के सौजन्य से प्राप्त

50000/- श्री विनयकुमारजी अब्बाणी, चित्तौड़गढ

महत्तम महोत्सव

51000/- श्री सुन्दरलालजी बसंतीदेवीजी पींचा, गुवाहाटी

51000/- श्री गुप्तदान, हैदराबाद

21000/- श्री अनिलचन्दजी धर्मीचन्दजी कोठारी, चैन्नई

समता भवन निर्माण प्रवृत्ति

समता भवन, लूणकरणसर

150000/- श्रीमती विमलाजी कमलजी सिपानी, बेंगलुरु

31000/- वीर पिता श्री सुमतिमलजी सा प्रणितकुमारजी प्रतीशकुमारजी मरलेचा, चेंगलपेट, चैन्नई

21100/- श्री अनिलकुमारजी प्रतीककुमारजी नागौरी, छोटीसादड़ी

21000/- श्री धर्मेन्द्रजी आंचलिया, बेंगू

संघ सहयोग

101000/- श्री स्थानकवासी जैन संघ, बैंकॉक

3100/- श्री अमितजी जैन, मुम्बई (वैवाहिक वर्षगांठ पिताजी श्री महेन्द्रसिंहजी एवं माताजी श्रीमती शिमलाजी पिपाड़ा)

श्री साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

100000/- श्री फतहलालजी रणजीतलालजी सम्पतलालजी गणपतलालजी दिनेशकुमारजी कावडिया,(गुड़लीवाला), उदयपुर के सौजन्य से प्राप्त।

21000/- श्री अनिलचन्दजी धर्मीचन्दजी कोठारी, चैन्नई

1000/- श्री हीरालालजी चांदमलजी गांधी, पेटलावद

दानपेटी योजना

5100/- श्री पारसमलजी सतीशकुमारजी रांका, चैन्नई

2100/- श्री मांगीलालजी जितेन्द्रजी मनीषजी छल्लाणी, गंगाशहर/चैन्नई

2000/- श्री करणीदानजी भंसाली, नोखा

1500/- श्री भवानीदेवीजी सेठिया, कोलकाता

1151/- श्री ख्यालीलालजी बोलिया रायपुर/भीलवाड़ा

951/- श्री चांदमलजी लोढ़ा, ब्यावर

500/- श्री शांतिलालजी सुराणा, नाथद्वारा

500/- श्री बंशीलालजी फतहलालजी सूर्या, नाथद्वारा

श्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलुरु

51000/- श्रीमती विमलाजी कमलजी सिपानी

17500/- श्री मनोजकुमारजी सिपानी

17000/- श्रीमती श्रद्धाजी सिपानी

5100/- श्री पूरबजी बेताला

5000/- श्री साहिलजी सिपानी, गुप्तदान

3100/- श्री कनकममलजी गौतमजी नन्दावत

2745/- श्री कैलाशचन्दजी गन्ना

2300/- श्रीमती आजाददेवीजी सुभाषचन्दजी बुरड़, श्रीमती शांतिदेवीजी सिपानी,

2100/- श्री सुभाषचन्दजी सिंघवी, गुप्तदान, श्री शांतिलालजी विकासकुमारजी मुणोत, गुप्तदान

1100/-का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती शांताबाई देवराजजी बोहरा, श्री देवराजजी आकाशजी आदित्यजी बोहरा,श्री निर्मलकुमारजी डांगी, श्री तेजराजजी दक

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री अरुणजी नागौरी, श्री कपिलजी कटारिया,श्री महावीरचन्दजी मेहता, श्री रेखचन्दजी रमेशकुमारजी बरड़िया, श्री दिनेशकुमारजी कमलेशकुमारजी सिंघवी

श्री साधुमार्गी जैन संघ, छोटीसादड़ी

6300/- श्री अनिलकुमारजी, प्रतीकजी नागौरी

5100/- श्री अरुणकुमारजी मनीषकुमारजी कोठारी

5000/- श्री अशोककुमारजी डूंगरवाल

3100/- श्री कांतीलालजी मुर्डिया, श्री राकेशजी सागरमलजी मुर्डिया

श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीम

3300/- श्री पारसमलजी बम्ब

2200/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री शांतिलालजी मारू, श्री प्रकाशचन्दजी देसरला, भीम, श्री महावीरचन्दजी गुरलिया, श्री उत्तमचन्दजी देरासरिया, श्री तेजकुमारजी कोठारी, श्री नोरतनमलजी विकासकुमारजी गुरलिया

2100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री सुशीलकुमारजी डूंगरवाल, श्री नेमीचन्दजी डुंगरवाल, श्री पीयूषजी तेजीवट, श्री लक्ष्मीलालजी कोठारी, श्री लालचन्दजी मुणोत, श्री देवीलालजी कैलाशजी दक

1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री सुमितकुमारजी चावत, श्री राजमलजी पंकजजी मुर्डिया, श्री सुजानमलजी तेजावत, श्री जसवंतजी सूरजमलजी कसमा, श्री सोभागसिंहजी मेहता, श्री विमलकुमारजी राजमलजी नलवाया,श्री भीखमचन्दजी कोठारी, श्री तरुणकुमारजी गन्ना, श्री मांगीलालजी दक, श्री माणकचन्दजी दलाल, श्री रमेशकुमारजी मुणोत, श्री सिद्धार्थजी गन्ना, श्री अशोककुमारजी पोखरना, श्री बाबूलालजी कोठारी

1000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री खुशालजी डुंगरवाल, श्री नरेन्द्रकुमारजी श्रेणिककुमारजी नाहर, श्री पारसमलजी मुर्डिया, श्री पारसमलजी आशीषजी कालिया,श्री लाडुलालजी मेहता, भीम, श्री माणकजी देरासरिया, श्री रतनलालजी सांखला

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री राजीवजी सिद्धार्थजी नलवाया, श्री माणकचन्दजी सुराणा, श्री पुखराजजी देरासरिया, श्री श्यामलालजी मारू, पवनकुमारजी मेहता, श्री मदनलालजी पोखरना, श्री सुरेशकुमारजी सामरा, श्री अक्षयकुमारजी देसरला, श्री गणेशलालजी पोखरना, श्री शिवलालजी दक, श्री रमेशकुमारजी गुगलिया,श्री भैरूलालजी दक, श्री गौतमजी चोपड़ा, श्री राजेशकुमारजी गुरलिया, श्री शंकरलालजी सांखला, श्री रतनलालजी मुणोत

श्री साधुमार्गी जैन संघ, करीमगंज

5100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती भीखीदेवीजी भूरा, श्री सूरजमलजी पारख, पटवा ब्रदर्स, जैन ब्रदर्स, श्री नथमलजी तातेड़, श्रीमती निर्मलादेवीजी सांड

4100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री निर्मलकुमारजी भूरा, श्री हीरालालजी आनंदमलजी

3100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती विमलादेवीजी तातेड़, श्री जयचन्दलालजी भूरा,

2500/- करणी स्टोर्स, सुरेन्द्रकुमारजी बक्सी,

2100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ललित ट्रेडिंग, श्री राजेन्द्रजी भूरा, श्री टेक्सटाईल्स, श्री अनोपचन्दजी भूरा करीमगंज, भारत टेक्सटाईल्स

1500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री अभयकुमारजी बच्छावत, श्री शुभकरण भूरा

1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती इन्द्रादेवीजी पारख, श्री मनोजकुमारजी धारीवाल, श्री जयकुमारजी सेठिया, श्री दिनेशजी ललवाणी

500/- श्री इन्द्रचन्दजी सांड

शेष पृष्ठ 43 पर...

मुमुक्षु सुश्री वर्षाजी भण्डारी

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री वर्षाजी भण्डारी
जन्मस्थान	:	देऊर (धुलिया)
जन्मदिन एवं आयु	:	26 सितम्बर 1994, 28 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	कम्प्यूटर इंजीनियर
धार्मिक ज्ञान	:	पुच्छिंसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् सुखविपाक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 17 अध्ययन, श्रीमद् आवश्यक सूत्र, थोकड़े- 25 बोल, 67 बोल, लघुदण्डक, गति-आगति, जीवधड़ा, 5 समिति 3 गुप्ति, प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े, कर्मप्रज्ञप्ति
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं में लगभग 7 माह
धार्मिक परीक्षा	:	जैन धार्मिक परीक्षा भूषण (2, 3 प्रश्न-पत्र)
वैराग्यकाल	:	लगभग डेढ़ वर्ष
संभावित दीक्षा महोत्सव	:	रविवार, 04 दिसम्बर 2022, उदयपुर (राज.)

पारिवारिक परिचय

पड़दादीजी-दादाजी	:	स्व. श्रीमती राजुबाई-स्व. श्री सुवालालजी भण्डारी
दादीजी-दादाजी	:	स्व. श्रीमती कमलाबाई-स्व. श्री मोतीलालजी भण्डारी
बड़े माताजी-पिताजी	:	श्रीमती चन्दनबाला-स्व. श्री दिलीपजी भण्डारी
माताजी-पिताजी	:	श्रीमती मनीषाजी-मनसुखजी भण्डारी
चाचीजी-चाचाजी	:	श्रीमती भारती-अशोकजी भण्डारी, श्रीमती सारिका-सुनीलजी भण्डारी
बहन-बहनोई	:	श्रीमती पूजा-चन्द्रेशजी लुंकड़
भुआजी-फूफाजी	:	श्रीमती संगीताजी-राजेन्द्रजी झांबड़
भाई, बहन	:	शैलेष, वैभव, भाग्यश्री, जयदीप, श्रुति, जीया, युग
भांजा, भांजी	:	लब्धि, तनिष्का, प्रियांश, प्रियांशी
पड़नानीजी-पड़नानाजी	:	स्व. शांताबाई एवं रतनबाई-बालचंदजी मूथा
नानीजी-नानाजी	:	स्व. श्रीमती बेबीबाई-सुभाषचंदजी मूथा
मामीजी-मामाजी	:	श्रीमती गीतल-योगशजी, श्रीमती सपना-श्रीपालजी मूथा
ममेरे भाई, बहन	:	तुषार, करिश्मा, देवेंद्र, निशांत, गरिमा, जीया, मानवी, जैनम, कुनाली
परिवार से दीक्षित	:	साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा. (संसारपक्षीय बहन) - **ज्ञानगच्छ** साध्वी श्री रिभिताश्रीजी म.सा. (संसारपक्षीय बहन) - **साधुमार्गी**

संघ समर्पणा महोत्सव एवं 60वां संयुक्त अधिवेशन

प्रथम दिवस

शुभ हाथों में शोभायमान होने को
लालायित विविध पुरस्कार एवं सम्मान

संघ समर्पणा गीत के सामूहिक संगान
के साथ अधिवेशन का शुभारंभ

राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं मुख्य अतिथि का भारतीय परम्परा के अनुसार स्वागत

विशिष्ट अतिथियों के साथ स्वर्णिम पल

राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन

राष्ट्रीय महामंत्री प्रतिवेदन

विशिष्ट अतिथि उद्बोधन

श्री लहरसिंहजी सिरोया

श्री राजेन्द्रजी ढ़ोलकिया

श्री संजयजी डांगी

महाप्रभावक सदस्य सम्मान

संघ द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोग पुरस्कार
छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल

श्रेष्ठ प्रवृत्ति सम्मान
समता भवन निर्माण समिति

जिनशासन प्रभावना सम्मान
श्री केकड़ी वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ, केकड़ी

श्रेष्ठ अनुकरणीय संघ
श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर

श्रेष्ठ अनुकरणीय संघ
श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत

श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोग पुरस्कार (प्रथम)
श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत

श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोग पुरस्कार (द्वितीय)
श्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलूरु

श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोग पुरस्कार (तृतीय)
श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, दिल्ली

श्रेष्ठ शिविरायोजन सम्मान
श्री साधुमार्गी जैन संघ, धुलिया

श्रेष्ठ तप अलंकरण सम्मान
श्री आदिजी बोरा (जैन), देवकर (छ.ग.)

श्रेष्ठ जैन संस्कार पाठ्यक्रम कार्यकर्ता सम्मान
सुश्री गुड़ियाजी छाजेड़, चाडी

श्रेष्ठ समता संस्कार पाठशाला पुरस्कार
श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखामंडी

श्रेष्ठ समता संस्कार पाठशाला विद्यार्थी
(11 वर्ष से कम आयु)

श्रेष्ठ समता संस्कार विद्यार्थी
सुश्री अनुष्काजी भूरा, देशनोक

श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान
श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, उदयपुर

विशिष्ट अतिथि सम्मान

श्री राजेन्द्रजी ढोलकिया
(केबिनेट मंत्री-योजना एवं
अभिसरण विभाग, उड़ीसा सरकार)

श्री संजयजी डांगी
(चैयरमैन
मेन्टर कैपिटल लिमिटेड, मुम्बई)

श्री लहरसिंहजी सिरोया
(राज्यसभा सांसद,
भारतीय जनता पार्टी, कर्नाटक)

संघ समर्पणा महोत्सव एवं 60वां संयुक्त अधिवेशन

द्वितीय दिवस

(संघ, महिला समिति एवं युवा संघ रा. अध्यक्ष उद्बोधन

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतमजी रांका, महिला समिति राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी मेहता एवं युवा संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी पगारिया का उद्बोधन

संघ द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

श्रेष्ठ स्वाध्यायी सम्मान
श्री समरथमलजी पामेचा, पिपलियामंडी

नव साहित्य 'झीलों पर सूर्योदय' का विमोचन

राष्ट्रीय अधिवेशन के पावन अवसर पर संघ, महिला समिति एवं युवा संघ सदस्यों सहित उपस्थित प्रमुखगण

महिला समिति द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

श्रेष्ठ महिला रत्न सम्मान श्रीमती राखीजी धाड़ीवाल

श्रेष्ठ तपस्वी पुरस्कार श्रीमती सायरदेवी भूरा, ग्वालपाड़ा

श्रेष्ठ शासन सेविका सम्मान
श्रीमती रीटाजी बांठिया, अहमदाबाद

अन्य प्रदत्त पुरस्कार

उदयपुर में 'झीलों पर सूर्योदय' का साक्षी बना संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ साहित्य के क्षेत्र में उत्तरोतर प्रगति कर रहा है। इसी क्रम में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर1008 श्री रामलालजी म.सा. के प्रवचनों पर आधारित पुस्तकों का विमोचन 26-28 सितम्बर 2022 को स्थानीय व राष्ट्रीय संघ के पदाधिकारियों की उपस्थिति में हुआ।

'झीलों पर सूर्योदय' में उदयपुर में गतिमान चातुर्मास में आचार्यश्री द्वारा फरमाए गए प्रवचनों का संग्रह है। यह पुस्तक उस लाभ को कमाने का अवसर प्रदान करने वाली है, जो लाभ सभी प्राप्त करना चाहते हैं। यह पुस्तक बताती है कि 'सच्ची डगर एक ही' है और जो उस डगर पर चलेगा उसकी बोधि आरोग्यमय होगी।

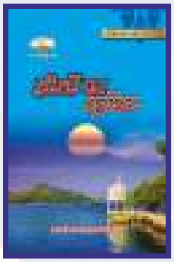

'ददतां वरः' 2021 में ब्यावर में फरमाए गये प्रवचनों का संकलन है। 'ददतां वरः' यानी दानियों में श्रेष्ठ। 'ददतां वरः' के माध्यम से ज्ञान और धर्म को लूटने का अवसर है। आप पहले लूटिए फिर ओरों में लुटाइए।

समता युवा संघ द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

श्रेष्ठ समता युवा संघ (वृहद्)-समता युवा संघ, दुर्ग

शासन गौरव-श्री अरविंदजी धाड़ीवाल

श्रेष्ठ शासन सेवा- समता युवा संघ, उदयपुर

समता युवा संघ के नवीन मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमितजी बम्ब का उद्‌बोधन

समता युवा संघ के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष द्वारा नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बैज लगाकर कार्यभार प्रदान

पृष्ठ 34 का शेष...

श्री साधुमार्गी जैन संघ, भदेसर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री संजयकुमारजी नरेशकुमारजी मोदी, श्री अशोककुमारजी मोदी, श्री माणकलालजी खटोड़, श्री शांतिलालजी खटोड़, श्री उदयलालजी दिनेशकुमारजी खटोड़, श्री शांतिलालजी कोमलजी रूगंलेचा, श्री सुरेशकुमारजी सरूपरिया, श्री कन्हैयालालजी चपलोत, श्री हीरालालजी खटोड़, श्री अभयकुमारजी सरूपरिया, श्री संजयकुमारजी सरूपरिया

इदं न मम्

101009/- श्री प्रेमचन्दजी मांगीलालजी कोठारी, बदनावर

31000/- श्रीमती राजूबाईजी कटारिया, बेंगलुरु

21000/- श्री धर्मेन्दजी आंचलिया, बेंगू

21000/- श्री अनिलचन्दजी धर्मीचन्दजी कोठारी, चैन्नई

12600/- श्री निर्मलकुमारजी गोखरू, रतलाम

11000/- श्री संजयजी गुलाबचन्दजी जैन, सुलुरूपेटा

11000/- श्री कमलेशकुमारजी रितेशकुमारजी पारख, अकोला

11000/- श्री लालचन्दजी रांका, पाली

10000/- श्री झुमरमलजी अशोकजी राकेशजी, विनोदजी लोढ़ा, डोंगरगांव (श्रीमती प्यारीदेवीजी की स्मृति में)

5100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री जवरीलालजी बख्तावरमलजी चोपड़ा, सेलम्बा, श्री गौतमचन्दजी नमनकुमारजी कोटड़िया, सम्बलपुर

5000/- श्रीमती किरणदेवी मेहता, रतलाम, श्री मदनसिंहजी मेहता, रतलाम, श्री अनोखीलालजी गांधी, रतलाम

3600/- श्री गुप्तदान, जावरा

3100/- श्री कैलाशचन्दजी नाहर, जावरा

3000/- श्री गुप्तदान, नीमच

2100/- श्री अमृतलालजी सिरेमलजी भंसाली, सेलम्बा,

2000/- श्री भोमराजजी किशनलालजी चोपड़ा, खेतिया, श्रीमती देवीबाई प्रकाशचन्दजी बोहरा, खेतिया, श्री मुकेशजी जोगीलालजी लुणावत, खेतिया, श्री लोकेशकुमार बंशीलालजी सुर्या, नाथद्वारा

1710/- श्री गुप्तदान, जावद

1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री गुप्तदान, उदयपुर, मीनादेवीजी बम्ब, टोंक, श्री प्रदीपकुमारजी झुम्बरलालजी खिंवसरा, धुलिया, श्री ताराचन्दजी आसकरणजी कोटड़िया, सेलम्बा, श्री सुनीलकुमारजी पुखराजजी बूरड, सेलम्बा, डॉ.सतीश फतहचन्दजी राखेचा सेलम्बा, श्री अशोकजी भंवरलालजी छाजेड़, सेलम्बा, श्री रावलजी भंवरलालजी चोपड़ा, सेलम्बा, श्री महेन्द्रकुमारजी पुखराजजी चोपड़ा, सेलम्बा, श्री भगवतीलालजी रोशनलालजी दुगड़, सेलम्बा, श्रीमती सुनिता सुनीलजी कोठारी, खेतिया, श्री यतीन्द्रजी पुखराजजी सोनी, खेतिया, श्री निर्मलकुमारजी अंतिमकुमारजी लोढा, खेतिया, श्री प्रकाशचन्दजी प्रेमराजजी बोहरा, खेतिया, श्री हीरालालजी चांदमलजी गांधी, पेटलावद, श्री जगदीशलालजी जिनेन्द्रजी मनोजजी भण्डारी, बोहेड़ा, श्री किशनलालजी भण्डारी, बोहेड़ा

1000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री नन्दलालजी ललितजी बोहरा, चिकारड़ा, श्री लादुलालजी चण्डालिया, कपासन, श्री प्रकाशचन्दजी राजमलजी छिपानी, रतलाम

555/- श्रीमती कमलाबाई पुखराजजी चोपड़ा, सेलम्बा

500/- **का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त-** श्री इन्द्रचन्दजी लोढ़ा, रायपुर, श्री शांतिलालजी मिश्रीलालजी साबद्रा, सेलम्बा, श्री शांतिलालजी नेमीचन्दजी गुलेच्छा, सेलम्बा, श्री अशोकजी झाधुलालजी चोरड़िया, सेलम्बा, श्री कमलेशजी सुभाषजी लुणावत, खेतिया, श्री कमलेशजी गौतमजी लुणावत, खेतिया, श्री ललितकुमारजी भंवरलालजी मुणत, रतलाम, श्री मनीष निलेशजी पीचा, रायपुर

जीवदया

26000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, डोंगरगांव

11000/- श्री गुप्तदान, सिलचर

11000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री गणेशमलजी दुगड़, मनेन्द्रगढ़, श्री अनिलचन्दजी धर्मीचन्दजी कोठारी, चैन्नई

10000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री झुमरमलजी अशोककुमारजी राकेशजी विनोदजी लोढा, डोंगरगांव (श्रीमती प्यारीदेवी की पावन स्मृत्ति में) समता महिला मण्डल, नोखागांव

8100/- श्रीमती नीलूजी महावीरजी मेहता, बेंगलुरु

7700/- श्री केशरीचन्दजी अमरचन्दजी सुराणा, गंगाशहर (स्व. श्रीमती निर्मलादेवीजी सुराणा की पावन स्मृति में)

5502/- श्री जैन संघ, अम्बागढ़ चौकी

5100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री भंवरलालजी हनुमानमलजी पारख, गंगाशहर (मुमुक्षु दिव्याजी पारख की दीक्षा के उपलक्ष में), श्री जुगराज कमलादेवीजी संचेती, नोखा/दिल्ली (नुपुरजी भूरा सपुत्री आनन्दमलजी चांदादेवीजी भूरा, देशनोक के मासखमण के उपलक्ष में) समता महिला मण्डल, कोकराझाड़

5000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री गुप्तदान, अहमदाबाद, श्री विजयकुमारजी हितेशकुमारजी खिंवसरा, जयपुर

4800/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, ठेलकाडीह

4100/- श्री गुप्तदान, देशनोक (मुमुक्षु बहन कविताजी बुच्चा की दीक्षा के उपलक्ष में)

4000/- श्री सुन्दरलालजी सुदीपजी अतुलजी बांठिया, हावड़ा/गंगाशहर, (स्व. श्रीमती पार्वतीदेवीजी बांठियां की 18वीं पुण्य स्मृति में) (सुश्री विशाखाजी जैन का 18वें जन्म दिवस के उपलक्ष में) (चि. संभव सेठिया के 11वें जन्म दिवस के उपलक्ष में)(स्व. कन्हैयालालजी बांठिया की 11वीं पुण्य तिथि के अवसर पर)

2650/- श्री रतनचन्दजी देवराजजी सांखला, राजिम

2500/- श्री भंवरलालजी नागौरी, परसोली

2100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती सुरजादेवीजी किशनलालजी मुणोत, बड़ीसादड़ी, श्री अशोककुमारजी अंकुरजी रायसोनी, राजिम, श्री सूरजमलजी कोठारी, सांवलियाजी, श्री अशोककुमारजी नलवाया, जयपुर

2000/-का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री उगमराजजी देवेन्द्रजी कोठारी, नयापारा, राजिम, श्री झंवरलालजी भूरा, जलगांव

1500/- श्रीमती भवानीदेवीजी सेठिया, कोलकाता

1111/- श्री गुप्तदान, संगरियामण्डी

1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री सज्जनराजजी राजेशजी नागौरी, बड़ीसादड़ी, मीनाक्षी इण्टरप्राईजेज, मदुरई, श्री संतोषजी संजयजी पारख, राजिम, श्री प्रकाशजी राजेन्द्रजी गिडिया, राजिम, श्री नितिन राजेन्द्रजी झामड, खामगांव (ममता नितिनजी झामड़ के 11 उपवास की तपस्या के उपलक्ष में), श्री सम्पतराज गौरवकुमारजी दक, बेंगलुरु, श्री सिद्धार्थ कुमारजी ऋषभजी दक, बेंगलुरु दल्लीराजहरा- श्री गौतमचन्दजी दिपेशकुमारजी सेठिया, श्री मोतीलालजी ललितकुमारजी सेठिया, श्री नथमलजी मनीषकुमारजी कवाड, श्री रतनलालजी शांतिलालजी पारख, श्री सोहनलालजी विकासकुमारजी गुणधर, श्री मोतीलालजी नीलमकुमारजी गुणधर, श्री कैलाशजी श्रेयांशजी गुणधर, श्री अशोककुमारजी अभिषेकजी गुणधर, श्री मोहनलालजी संजयकुमारजी गुणधर, श्री अरविन्दकुमारी सजलजी गुणधर, श्री अमरचन्दजी अर्पितजी गुणधर, श्री ज्ञानचन्दजी प्रदीपकुमारजी गुणधर, श्री चम्पालालजी महावीरजी गुणधर, श्री पन्नालालजी निखिलजी ललवाणी, श्री सोनराजजी मनोजजी चोपड़ा, श्री अन्नराजजी संजयजी बांठिया, दल्लीराजहारा, श्री गौतमचन्दजी संकेतकुमारजी बाफना, श्री अशोककुमारजी प्रदीपकुमारजी खटोड़, श्री विनोदजी वैभवजी गुणधर,

श्री कमलजी संतोषजी चोपड़ा, श्री अशोककुमाजी अभिषेककुमारजी टाटिया, श्री गौतमचन्दजी आशिषजी गुणधर, श्री सुनीलकुमारजी गुणधर, दल्लीराजहरा

700/- श्री आकाशकुमारजी अंकुशकुमारजी गुणधर, दल्लीराजहरा

600/- श्री कैलाशचन्दजी जैन, सवाईमाधोपुर

550/- श्री रसिकजी गाला, राजिम

501/- श्रीमती गुणमालाजी सुराणा, कोलकाता

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री चन्दनमलजी लोढा, ब्यावर, श्री पंकजजी बोथरा, राजिम, श्री फूलचन्दजी रायसोनी, राजिम, श्री प्रकाशचन्दजी दुगड़, श्रीमती अल्पनाजी अनूजजी जैन, हरदा, श्री गौतमचन्दजी नवीनकुमारजी पारख, दल्लीराजहरा, श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी बांठिया, दल्लीराजहरा, श्री नरेशकुमारजी प्रवीणकुमारजी बांठिया, दल्लीराजहरा, श्री मूलचन्दजी संदीपजी नाहटा, दल्लीराजहरा, श्री रूपचन्दजी रमेशजी टाटिया दल्लीराजहरा, श्री धर्मचन्दजी वर्द्धमानजी टाटिया दल्लीराजहरा, श्री प्रकाशजी पीयूषजी गुणधर, दल्लीराजहरा

समता जन कल्याण प्रन्यास

11000/- श्री धीरजकुमारजी सांड, देशनोक/लुधियाणा

समता प्रचार संघ

25000/- श्री स्थानकवासी साधुमार्गी जैन संघ, सिलचर

15000/- श्री स्थानकवासी जैन संघ, तेजपुर

11000/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ, डोंडीलोहरा

5100/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावकसंघ, चांगुटोला

5100/- श्री वर्द्धमान स्थानक जैन संघ, सेलम

3250/- श्री साधुमार्गी जैन संघ नगरी/मंदसौर

2100/- श्रीमती भवानीदेवीजी सेठिया, कोलकाता

समता संस्कार पाठशाला

11000/- श्री पारसमलजी भीखमचन्दजी कोटड़िया, शहादा

समता सरिता सेवा/विहार सेवा

51000/- श्री अशोककुमारजी रोहितकुमारजी खेतपालिया, चैन्नई

15000/- श्री अनिलचन्दजी धर्मीचन्दजी कोठारी, चैन्नई

11000/- श्री पारसमलजी भीखमचन्दजी कोटड़िया, शहादा

10000/- श्री झुमरलालजी अशोककुमारजी राकेशजी विनोदजी लोढा, डोंगरगांव (श्रीमती प्यारीबाईजी लोढा की पावन स्मृत्ति में)

5000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त-श्री भंवरलालजी सेठी, अजमेर, श्री विजयकुमारजी हितेशकुमारजी खिंवसरा, जयपुर, श्रीमती मंजूजी, केवलचन्दजी ढेलरिया, तोंगपाल, (स्व. देवराजजी की पुण्य स्मृत्ति में)

21000/- श्री अनोखाजी नागौरी, गंगापुर, भीलवाड़ा

1500/- श्री रचितजी सेठिया, कोलकाता

500/- श्री राकेशकुमारजी जैन, जयपुर

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

22000/- श्री पारसमलजी भीखमचन्दजी कोटड़िया, शहादा

20000/- श्री विजयकुमारजी हितेशकुमारजी जैन खिंवसरा, जयपुर

11000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती मोहनदेवीजी चपलोत, उदयपुर, श्री बलवंतकुमारजी कोठारी, खेरोदा, श्रीमती रीताजी अजीतजी ललवाणी, बांसवाड़ा

10000/- श्री शेंषकरणजी शुभकरणजी बोथरा, गंगाशहर

7000/- श्री गुप्तदान, अजमेर

5300/- दुल्हेराज शांतीलालजी रांका, जयनगर/मुम्बई

5000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती कांतीबाईजी संचेती, नारायणपुर, श्री गुप्तदान, दुर्ग

3618/- श्री सुरेशकुमारजी दक, मैसूर

3000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रीमती नीलम रमेशजी जैन, मंदसौर, श्रीमती धीरजदेवीजी कीरतमलजी आंचलिया, पनवेल, श्री पन्नालालजी कटारिया, रतलाम

2000/-का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री सुन्दरलालजी सुराणा, नागपुर, श्री निर्मलकुमारजी कुसुमकुमारजी खिंवसरा, ब्यावर, श्री दर्श व अयांश नगरीवाला, प्रतापगढ़

500/- श्री गुप्तदान, उदयपुर

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

3100/- वीर नगर, मेरठ दर्शनार्थी

2000/- श्रीमती भवानीदेवीजी सेठिया, कोलकाता

श्रमणोपासक भेंट

11000/- श्री झुमरमलजी अशोककुमारजी राकेशजी विनोदजी लोढा, डोंगरगांव (श्रीमती प्यारीबाईजी की पावन स्मृति में)

11000/- श्रीमती कांतादेवीजी बोथरा परिवार, गुवाहाटी (स्व. विकासजी बोथरा की पावन स्मृति में)

11000/- श्री कस्तूरचन्दजी जयकुमारजी कोटड़िया, रायपुर

7200/- श्री कमलजी हंसराजजी पिरोदिया, रतलाम (चि. विपुलकमलजी पिरोदिया के प्रथम बार 9 की तपस्या के उपलक्ष में)

500/- श्री राजेन्द्रप्रसादजी मनोजकुमारजी जैन, सवाई माधोपुर(स्व. इन्द्रादेवीजी जैन की पुण्य स्मृत्ति में), श्री कैलाशचन्दजी जैन, सवाईमाधोपुर

विशेष :- आजीवन महिला समिति सदस्यता-23, श्रमणोपासक आजीवन सदस्य-121, संघ आजीवन सदस्य-1, संघ साधारण सदस्य-1, साहित्य आजीवन सदस्य-7

भूल सुधार- (29-30 सितम्बर) श्रमणोपासक भेंट- 2100/- श्री मोहनलालजी बाफना, रायपुर(सुपौत्री सुश्री हर्षिताजी बाफना के जन्मदिन के उपलक्ष में) इदं न मम्- 11000/- श्री मोहनलालजी राकेशकुमारजी मुकेशकुमारजी बाफना, रायपुर

01 अप्रैल 2022 से 30 अगस्त 2022 तक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्त्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई, इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केन्द्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नम्बर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	राशि	अन्य विवरण
एस.बी.आई. बैंक		
18.04.22	7950/-	Ch. No. 439337
10.05.22	3100/-	नकद
11.05.22	5000/-	CDM
04.06.22	2000/-	NEFT शरद कुमार
20.06.22	5000/-	NEFT
27.06.22	500/-	नकद
14.07.22	21550/-	NEFT अंकित जैन
27.07.22	1700/-	Ch. No. 53
20.08.22	1100/-	नकद
22.08.22	7100/-	Ch. No. 509988
25.08.22	22000/-	Ch. No. 1642
31.08.22	1590/-	NEFT संजय
यूको बैंक		
30.05.22	3500/-	नकद
06.09.22	4400/-	रवि पदावत
16.09.22	5000/-	नकद
16.09.22	5000/-	नकद

उपरोक्त भेंट दाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

विनम्र श्रद्धांजलि

नोखा। सुश्रावक महेन्द्रकुमारजी बिनायकिया का 26

अगस्त को निधन हो गया। आपका जीवन धर्मभावना से ओत-प्रोत था। आपने जोरावरपुरा संघ अध्यक्ष के रूप में अनेक वर्षों तक सेवाएँ दी। आपने जीवनपर्यन्त के लिए बफर खाना खाने एवं खिलाने का त्याग किया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बालेसरसत्ता। सुश्रावक जौहरीलालजी सुपुत्र स्व. श्री

हस्तीमलजी साँखला का 3 सितम्बर को 82 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, वात्सल्य एवं सादगी की प्रतिमूर्ति थे। धर्म-ध्यान एवं चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति अपूर्व निष्ठा एवं समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नागपुर। संथारा साधक सुश्रावक जयंतीभाई

गुलाबचंदभाई संघवी का 90 वर्ष की आयु में संथारा सहित 7 सितम्बर को महाप्रयाण हो गया। आपने साध्वी श्री चारित्रलताजी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण किया, जो लगभग 50 मिनट चला। आप सरल स्वभावी, कर्मयोगी, दृढ़धर्मी व्यक्तित्व के धनी थे। आप प्रतिदिन 10-11 सामायिक एवं उभयकाल प्रतिक्रमण का लक्ष्य रखते थे। आप ज्ञानपिपासु होने से आपने 85 वर्ष की उम्र में बड़ी साधु वंदना कंठस्थ की। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

अहमदाबाद। सुश्रावक नवरत्नमलजी सुपुत्र स्व. श्री

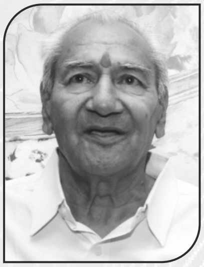

मोतीलालजी बुरड़, ब्यावर निवासी, अहमदाबाद प्रवासी का 78 वर्ष की आयु में 7 सितम्बर को तिविहार संथारे सहित पंडितमरण हो गया। आपके शीलव्रत एवं प्रतिदिन 5 सामायिक करने के प्रत्याख्यान तथा जमीकंद के त्याग थे। आप धर्म-ध्यान एवं चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति आपकी विशेष समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गंगाशहर। सुश्राविका जीवनीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री

भंवरलालजी मरोटी का 90 वर्ष की आयु में 30 सितम्बर को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट आस्था थी। आपने आजीवन रात्रिभोजन, जमीकंद एवं सचित्त पानी त्याग के प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आपके अष्टमी एवं चउदस को 14 सामायिक एवं शेष दिन 5 से ज्यादा सामायिक करने का नियम था। आपका जीवन

सरलता एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गंगाशहर। सुश्राविका निर्मलादेवी धर्मपत्नी

केशरीचंदजी सुराना का 15 सितम्बर को 64 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति प्रगाढ़ आस्था थी। आप प्रतिदिन सामायिक करने का लक्ष्य रखती थीं। आप श्री शोभनमुनिजी म.सा. की संसारपक्षीय दादीजी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

भीनासर। सुश्राविका पेमादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री

ताराचन्दजी बरड़िया का 78 वर्ष की आयु में 21 सितम्बर को निधन हो गया। आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक भावों की धनी थी। आपके कई वर्षों से रात्रिभोजन एवं चौविहार त्याग था। सामायिक स्वाध्याय आदि नित्य नियम से करती थीं। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति आपकी विशेष निष्ठा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बड़ीसादड़ी। सुश्राविका शान्ताबाई धर्मसहायिका

पारसमलजी मेहता का 74 वर्ष की आयु में 21 सितम्बर को सामायिक साधना में लीन रहते हुए देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी एवं मिलनसार महिला थी। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। चारित्रात्माओं के विराजने पर आप प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, सायंकालीन प्रतिक्रमण एवं रात्रि संवर करती थीं। आपने 2 वर्षी तप, लगभग 9 ओलीजी, अनगिनत तेले एवं संवर व उपवास किए हुए थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बीकानेर। सुश्रावक प्रमोदजी पुत्र श्री उदयलालजी

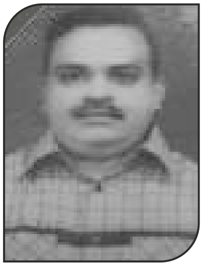

नागौरी का 52 वर्ष की आयु में 27 सितम्बर को देहावसान हो गया। नियमित स्वाध्याय, सामायिक आदि धार्मिक क्रियाएँ आप वर्षों से कर रहे थे। आपने निर्लेप भाव से जीवन जीया और धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

कपासन। सुश्राविका कोयलदेवी धर्मसहायिका

नंदलालजी सिरोया का 72 वर्ष की आयु में 29 सितम्बर को संथारापूर्वक महाप्रयाण हो गया। आचार्य श्री रामेश सहित समस्त चारित्रात्माओं के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। प्रतिदन सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय एवं नवकार महामंत्र जाप के साथ वर्षों से रात्रिभोजन एवं जमीकंद त्याग था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

चैन्नई। सुश्रावक हीरालालजी सुपुत्र स्व. श्री

सोहनलालजी बैद भीनासर निवासी, कोलकाता प्रवासी का 1 अक्टूबर को चेन्नई में देहावसान हो गया। आप उदारमना, सरल स्वभावी व्यक्तित्व के धनी थे। अंत समय में भी आपके मुख से 'नमो अरिहंताणं' का जाप चलता रहा। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति विशेष निष्ठा थी। आप अपने पीछे भरा-

पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

खरवा (अजमेर)। सुश्राविका अमराव कुंवर धर्मपत्नी स्व. सुरेन्द्रपालजी पदावत का 2 अक्टूबर को देहावसान हो गया। आपने अपने जीवनकाल में धर्म-ध्यान के साथ अनेक तपस्याएँ की। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

जगदलपुर। सुश्राविका ईश्वरीदेवी धर्मसहायिका स्व. घेवरचंदजी श्रीश्रीमाल का 78 वर्ष की आयु में शुभभावों के साथ देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन आचार्य श्री नानेश-रामेश सहित देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित रहा। आपने 13 वर्षों तक निरंतर एकांतर तप किया। इसके अलावा आपने मासखमण, पाँचों तिथि उपवास, एकासन, पौषध, संवर, रात्रिभोजन एवं जमीकंद त्याग, सामायिक आदि तप किए। आपने अनेक वर्षों तक स्वाध्यायी सेवा दी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

।। जय गुरु नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरु राम।।

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

(अन्तर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334001 (राज.)

परीक्षा कार्यक्रम : दिसम्बर 2022 **समय :** दोपहर 12 से 4 बजे

प्रारम्भिक व वैकल्पिक परीक्षाओं की समय सारिणी

दिनांक	परीक्षा का नाम	प्रश्न पत्र
16/12/2022	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	प्रथम-पत्र
18/12/2022	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	द्वितीय-पत्र
20/12/2022	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	तृतीय-पत्र
22/12/2022	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	चतुर्थ-पत्र
24/12/2022	जैन आगम कण्ठस्थ भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
25/12/2022	राष्ट्रभाषा - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
26/12/2022	जैन स्तोक - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
27/12/2022	जैन संस्कृत - प्राकृत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-

नोट:-

1. अक्टूबर में होने वाली परीक्षा आगे से दिसम्बर में होगी और सभी परीक्षार्थी इसमें शामिल हो सकते हैं।
2. आप सुविधानुसार परीक्षा केन्द्र का चयन कर सकते हैं।
3. परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी अपना आवेदन समता भवन बीकानेर कार्यालय में 15 नवम्बर 2022 तक अनिवार्यत: जमा करा देवें।
4. जैन सिद्धांत भूषण परीक्षा के पाठ्यक्रम में परिवर्तन हुआ है। श्री दशवैकालिक सूत्र न्यू पुस्तक एवं 25 बोल की जगह जैन सिद्धांत बत्तीसी पाठ्यक्रम में रहेगा।
5. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- श्री दिलीपजी राजपुरोहित : 7231933008

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

संघ समर्पणा महोत्सव एवं 60वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

प्रथम दिवस

उदयपुर। दिनांक 27 सितम्बर 2022, आसोज सुदी 2 को संघ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में संघ समर्पणा महोत्सव एवं 60वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन वैद्य भागीरथ सभागार, विद्या निकेतन स्कूल, उदयपुर में मनाया गया। इस अवसर पर श्रीसंघ, महिला समिति व समता युवा संघ के पदाधिकारियों के साथ-साथ विशिष्ट अतिथि, गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, शिखर सदस्य, महाप्रभावक सदस्य, आजीवन एवं साधारण सदस्य, प्रवृत्ति संयोजकों एवं उदयपुर संघ सदस्यों के साथ-साथ देशभर से पधारे हुए स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्रीगणों सहित देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालु शोभायमान थे।

सामूहिक मंगलाचरण के साथ दोपहर 12.15 बजे से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जिसमें पधारे हुए अतिथियों एवं पदाधिकारियों का बालिका मंडल, उदयपुर द्वारा तिलक तथा समता युवा संघ, उदयपुर द्वारा बैज लगाकर स्वागत किया गया। इसके साथ ही **'संघ हमारा अविचल मंगल'** के सामूहिक संगान में संघनिष्ठा के भाव प्रस्तुत किए गए। मंच संचालन राष्ट्रीय महामंत्री निश्चलजी कांकरिया एवं निवर्तमान महामंत्री सुनीलजी बम्ब द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन : राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि आज से 60 वर्ष पूर्व आज ही के दिन उदयपुर की ही पावन धरा पर इस गौरवमयी संघ का स्वर्णिम प्रादुर्भाव हुआ था। 1962 में जिन सदस्यों ने अपने दिव्य स्वप्न को साकार करने के उद्देश्य से संघ रूपी इस विशाल वट वृक्ष का बीजारोपण किया, उसे आज तक अपने तन-मन-धन से सिंचन किया है। उसी का परिणाम आज हम सभी के रूप में सामने है। इसकी विशालता के वरदहस्त तले हम सभी पुष्पित, पल्लवित हो रहे हैं। आज संघ की दो भुजाओं के रूप में श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति एवं श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ आचार्य भगवन् के प्रत्येक आयाम और संघ की प्रत्येक प्रवृत्ति को जन-जन तक पहुँचाने में संघ के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। हम उन्हें साधुवाद ज्ञापित करते हैं। हमारे पूर्वाचार्यों ने धर्म-ध्यान और तपाराधना से तथा पूर्वाध्यक्षों ने तन-मन-धन से इसका सिंचन करते हुए हमें आज गौरवान्वित होने का सुअवसर दिया है।

मैं श्री अ.भा.सा. जैन संघ की ओर से संघ समर्पणा महोत्सव में पधारे धर्मप्रेमी बंधुओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ। पूज्य गुरूदेव के सान्निध्य में इस उदयपुर नगरी में तप-त्याग के जो अविस्मरणीय कीर्तिमान स्थापित हुए हैं, उनसे सम्पूर्ण संघ को गौरव की अनुभूति हो रही है। पूज्य गुरूदेव, जिनका जीवन ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साकार त्रिवेणी है। जो स्वयं तिन्नाणं और तारयाणं की प्रतिमूर्ति हैं। 36 गुण और 8 सम्पदाओं से परिपूर्ण उनका जीवन सिद्धांतों से अलंकृत है। ऐसे आचार्यश्री का सान्निध्य प्राप्त होना हमारे जीवन की अनन्त पुण्यवाणी का उदय है। आप सभी के सतत् प्रयासों से संघ आज चहुँमुखी विकास की ओर गतिमान है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप सभी का स्नेह और सहयोग हमें इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा और हम सभी मिलकर संघ की इस विकास यात्रा को बिन्दु से सिन्धु की ओर लेकर जाएंगे। अंत में आपने पधारे हुए सभी अतिथियों एवं संघ

सदस्यों का भावभरा स्वागत कर आभार प्रकट किया।

राष्ट्रीय महामंत्री प्रगति प्रतिवेदन एवं उद्बोधन : निश्चल कांकरिया ने वीडियो डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से संघ विकास यात्रा और संघ के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की। तदुपरांत प्रगति प्रतिवेदन के क्रम में विगत अधिवेशन 2021 से लेकर अब तक गुरुदेव द्वारा प्रदत्त आयामों और संघ प्रवृत्तियों में हुई प्रगति को पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिस पर सम्पूर्ण सभा ने हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारा संघ आज देश ही नहीं विदेश में भी ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अपूर्व प्रभावना कर रहा है। पूर्वाचार्यों की महती कृपा से संपूर्ण जैन समाज में आज साधुमार्गी जैन संघ अपनी अलग पहचान रखता है। हमारे संघ में प्रत्येक सदस्य संघ की प्रत्येक प्रवृत्ति में सहभागिता रखते हुए तन-मन-धन से सेवा कर रहा है। यह संघ सदैव अपने उच्च आदर्शों और संयम की शुद्ध पालना हेतु विख्यात रहा है। आप सभी बंधुओं के सुप्रयास, सहयोग एवं शुभकामनाओं के फलस्वरूप संघ 30 से अधिक सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, चिकित्सा एवं धार्मिक प्रवृत्तियाँ संचालित कर रहा है। संघ के सभी पदाधिकारियों, उपाध्यक्ष/मंत्रीगणों, कार्यसमिति सदस्यों, प्रवृत्ति संयोजकों व मंडल सदस्यों तथा स्थानीय संघों ने जिस प्रतिबद्धता से कार्य किए हैं, वे नि:संदेह प्रेरणास्पद हैं।

विशिष्ट अतिथि सम्मान एवं उद्बोधन : 'अतिथि देवो भव:' की परिकल्पना को साकार रूप देते हुए पधारे हुए विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्रजी ढ़ोलकिया (केबिनेट मंत्री - योजना एवं अभिसरण विभाग, उड़ीसा सरकार) का अभिनंदन पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष उमरावसिंहजी ओस्तवाल, जयचंदलालजी डागा, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री संपतराजजी रांका तथा राष्ट्रीय अध्यक्षजी के करकमलों से शॉल, माला व मोमेण्टो द्वारा किया गया।

अभिनंदन उपरांत ढ़ोलकियाजी ने सदन को उद्बोधित करते हुए कहा कि आज श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा इस स्थापना दिवस कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित कर जो सम्मान दिया गया है, उससे मन हर्षित, प्रफुल्लित एवं अभिभूत है। वास्तव में यह सम्मान मेरा नहीं अपितु पूरे साधुमार्गी समाज का है, जिसका एक हिस्सा बनने का मुझे मंत्री के रूप में अवसर मिला है। मैं आज जो भी हूँ वह पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद का ही सुफल है। मुझे याद है मेरे जीवन की वह घटना जब पूज्य गुरुदेव के चरणकमल उड़ीसा की पावन धरा पर पड़े और उनका होली चातुर्मास खरियार रोड में संपन्न हुआ। मैं उस समय लगभग 10 वर्ष का था। जैसे सभी साधुवृंद प्रात: 4 बजे गुरुदेव के दर्शन-वंदन-चरणस्पर्श हेतु जाते थे, एक दिन में भी उनके साथ चला गया। उस दौरान पूज्य गुरुदेव का हाथ मेरे सिर पर पड़ा और उसी आशीर्वाद के फलस्वरूप मैं आज आपके सामने उपस्थित हूँ। आप सभी ने आज इस प्रांगण में मुझे जो सम्मान दिया है, उसके लिए आपका हार्दिक साधुवाद एवं आभार ज्ञापित करता हूँ। संघ सेवा के किसी भी अवसर के लिए किसी भी प्रकार के सहयोग हेतु मैं सदैव उपस्थित हूँ।

विशिष्ट अतिथि अभिनन्दन के दूसरे चरण में संजयजी डांगी, मुम्बई (चैयरमेन, मेन्टर कैपिटल लिमिटेड, मुम्बई) का शॉल, माला, मोमेण्टो द्वारा पूर्व अध्यक्ष पुखराजजी बोथरा, चम्पालालजी डागा, शिखर सदस्य माणकजी नाहर, समता युवा संघ अध्यक्ष अतुलजी पगारिया एवं राष्ट्रीय अध्यक्षजी द्वारा अभिनंदन किया गया।

श्री संजयजी ने कहा कि मुझे आज इस परम प्रतापी संघ ने अधिवेशन के अवसर पर जो सम्मान दिया है, उसके सामने मेरा व्यक्तित्व काफी छोटा है। मुझे इस संघ से जुड़ने का सौभाग्य राष्ट्रीय अध्यक्षजी, संपतजी रांका और नरेन्द्रजी नवलखा के माध्यम से प्राप्त हुआ, उनका आभार। इस अवसर पर जिनशासन एवं संघ की

शान आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के दर्शन का सौभाग्य मिला, जो कि जैन जगत् में कोहीनूर की भाँति चमक रहे हैं। एक ओर सम्पूर्ण जैन समाज प्रदर्शन की होड़ में लगा है, वहीं साधुमार्गी संघ के पुरोधा आचार्य श्री रामेश और उनके नेश्रायरत चारित्र आत्माएँ बिना लाईट, माईक, फोटो के सादा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जिसकी इस आधुनिक युग में कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनका यह जीवन हम सभी के लिए अनुकरणीय है। श्री अ.भा.सा. जैन संघ विगत 60 वर्षों से धार्मिक, सामाजिक, चिकित्सकीय एवं जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से समाजोत्थान के क्षेत्र में कार्यरत रहा है। यह सभी के लिए गौरव की अनुभूति का विषय है। पुनश्च: आपसे प्राप्त स्नेह के लिए आभार।

विशिष्ट अतिथि अभिनन्दन के तीसरे चरण में लहरसिंहजी सिरोया (राज्यसभा सांसद, भारतीय जनता पार्टी, कर्नाटक) का शॉल, माला, मोमेण्टो से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष चम्पालालजी डागा, उमरावसिंहजी ओस्तवाल, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सरदारमलजी कांकरिया, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं शिखर सदस्य जयचंदलालजी डागा, समता युवा संघ राष्ट्रीय महामंत्री दीपकजी मोगरा, राष्ट्रीय अध्यक्षजी तथा कमलजी सिपानी द्वारा अभिनंदन किया गया।

श्री लहरसिंहजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज इस सदन में महिला शक्ति का बाहुल्य भी दृष्टिगत हो रहा है, जो बड़े ही हर्ष का विषय है। किसी भी समाज की सुदृढ़ता एवं उत्थान में महिलाओं का विशेष योगदान रहता है। श्रीसंघ के साथ महिला समिति और युवा शक्ति के रूप में युवा संघ का बेजोड़ संगम संघ विकास की गौरवगाथा में अपना विशेष महत्त्व रखता है। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मैंने स्मृतिशेष पूज्य आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त किया और आज उसी कड़ी में वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के नेतृत्व में विकासोन्मुख संघ के इस अधिवेशन में सहभागिता का सुअवसर किया है। इसके लिए मैं भाई कमलजी सिपानी को विशेष धन्यवाद देता हूँ और संघ के प्रत्येक सदस्य को इस सम्मान के लिए आभार प्रेषित करता हूँ।

महाप्रभावक सदस्यों का सम्मान : संघ सदस्यताओं के क्रमविन्यास में महाप्रभावक सदस्यता अपना विशिष्ट व सम्मानपूर्ण स्थान रखती है। महाप्रभावक सदस्यता ग्रहण करना अपने आपमें संघ के प्रति असीम निष्ठा एवं समर्पणा का प्रतीक-स्वरूप है। सदस्यता प्राप्ति हेतु स्वेच्छा से स्वीकृति दानवीर महानुभावों की मुक्तहस्तता व उदारता की परिचायक है। उपरोक्त सदस्यता हेतु 11 लाख रूपये की राशि एकमुश्त अथवा पाँच वर्ष की अवधि में देय होती है। इसी क्रम में विगत 1 जनवरी 2020 से 31 मार्च 2022 तक सदस्यता ग्रहण करने वाले महाप्रभावक सदस्यों रिखबचंदजी सोनावत-भीनासर, विजयराजजी बच्छावत-भीनासर, जयचंदलालजी गेलड़ा-हावड़ा, मेघराजजी पुगलिया-कोलकाता, तारादेवी सुराणा-गंगाशहर, बाबुलालजी पोखरना-जावरा, सुरेशजी नांदेचा-खाचरोद, सरोजदेवी पिरोदिया-रतलाम, मनीष कुमारजी कोठारी-बैंगलूरु, अशोक कुमारजी डागा-अहमदाबाद, मोतीलालजी मुणोत-जलगाँव, रतनीदेवी लुणावत-दिल्ली का अभिनंदन विशिष्ट अतिथि राजेन्द्रजी ढ़ोलकिया, संजयजी डांगी, लहरसिंहजी सिरोया, पूर्व महामंत्री सरदारमलजी कांकरिया, मदनलालजी कटारिया, गौतमजी पारख, किशनलालजी कांकरिया, सम्पतराजजी रांका, शिखर सदस्य माणकचंदजी नाहर, जयचंदलालजी डागा, राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी, संयोजक पंकजजी शाह व कमलजी सिपानी (पूर्व संयोजक संघ शिखर एवं महाप्रभावक सदस्यता अभियान) ने अभिनंदन पत्र, बैज, शॉल व माला द्वारा अभिनंदन किया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने बताया कि उपरोक्त वर्णित महाप्रभावक सदस्यों के अतिरिक्त राजमलजी

चौरड़िया-जयपुर, आशादेवी कटारिया-रतलाम, कांतिलालजी कटारिया-रतलाम, खेतमलजी श्रीश्रीमाल-बालोद, इन्द्रचंदजी धारीवाल-रायपुर, मदनलालजी सांखला-दुर्ग, उम्मेदमलजी सांखला-दुर्ग, मोहनचंदजी बाफना-रायपुर, प्रसन्नचंदजी सुराणा-रायपुर, राजेशकुमारजी कटारिया-बैंगलोर, पन्नालालजी सामसुखा-सूरत, मदनलालजी दुगड़-जनकपुर, निर्मलकुमारजी भूरा-कोलकाता, पारसमलजी छल्लाणी-सोनाली, निर्मलकुमारजी भूरा-करीमगंज से भी महाप्रभावक सदस्यता राशि पूर्ण प्राप्त हो चुकी है और उनका इस अधिवेशन के दौरान सम्मान प्रस्तावित था, किन्तु किन्हीं अपरिहार्य कारणों से वे कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके। उन्हें उनके अभिनंदन-पत्र ससम्मान भिजवाने के भाव हैं।

संघ द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कार : राष्ट्रीय महामंत्री ने सदन को बताया कि विगत वर्ष में संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर संघ द्वारा सदैव की भाँति श्रेष्ठ प्रतिभाओं को सम्मानित करने के क्रम में निम्न पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं-

1. **श्रेष्ठ अंचल सम्मान** - छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल
2. **श्रेष्ठ प्रवृत्ति सम्मान** - समता भवन निर्माण समिति
3. **जिनशासन प्रभावना सम्मान** - श्री केकड़ी वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, केकडी
4. **श्रेष्ठ अनुकरणीय संघ**
   (1) श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर
   (2) श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत
5. **श्रेष्ठ तप अलंकरण सम्मान** - श्री आदिजी बोरा (जैन), देवकर (छ.ग)
6. **श्रेष्ठ शिविरायोजन सम्मान** - श्री साधुमार्गी जैन संघ, धुलिया
7. **श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोगी (संघ)**
   प्रथम- श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत
   द्वितीय- श्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलूरु,
   तृतीय- श्री साधुमार्गी जैन संघ, दिल्ली
8. **श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोगी (अंचल) पुरस्कार** - छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल
9. **श्रेष्ठ जैन संस्कार पाठ्यक्रम कार्यकर्त्ता सम्मान**
   वैशालीजी चोरड़िया-गेवरई
   प्रेमलताजी जैन-बैंगलूरु
   गुड़ियाजी छाजेड़-चाडी
10. **श्रेष्ठ समता संस्कार पाठशाला पुरस्कार** - श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखामंडी (गांधी चौक पाठशाला)
11. **श्रेष्ठ समता संस्कार पाठशाला अध्यापक पुरस्कार** - विनिताजी ओस्तवाल (भायन्दर-ईस्ट समता संस्कार पाठशाला, मुम्बई)
12. **श्रेष्ठ समता संस्कार पाठशाला स्टूडेंट पुरस्कार** -

    11 वर्ष से कम आयु वर्ग
    - दिशा चौपड़ा, दुर्ग
    - लब्धि रांका, बैंगलूरु
    - विवान जैन, लक्कड़पीठा, रतलाम

    11 वर्ष से अधिक आयु वर्ग
    - पार्श्व पींचा, धमधा
    - ऋषि सुराणा, गंगाशहर
    - अनुष्का भूरा, देशनोक
13. **श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान** -
    - श्री वर्द्धमान साधुमार्गी स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उदयपुर
    - श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, उदयपुर
14. **श्रेष्ठ स्वाध्यायी सेवा सम्मान** - समरथमलजी पामेचा, पिपलियामंडी

आभार अभिव्यक्ति : श्री वर्द्धमान साधुमार्गी स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उदयपुर के अध्यक्ष अर्जुनजी लोढ़ा एवं चातुर्मास संयोजक सागरजी गोलछा ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी अतिथियों एवं सदस्यों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि जब आचार्य भगवन् ने उदयपुर संघ को चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की तब से संघ का प्रत्येक कार्यकर्ता निष्काम भाव से तन-मन-धन से अपनी अनुकरणीय सेवाएं प्रदान कर रहा है, उन सभी को हृदय से आभार ज्ञापित करते हैं। आचार्य भगवन् के अतिशय से तपस्याओं का ठाठ लगा हुआ है। सम्पूर्ण उदयपुर नगरी धर्मनगरी में परिणित हो गई है। केवल जैन ही नहीं जैनेतर समाज भी आचार्य भगवन् की कठोर संयम क्रिया देखकर अभिभूत है। आप सभी सदस्यगण यहाँ पधारे, इसके लिए आपका हार्दिक आभार। इस अधिवेशन कार्यक्रम व्यवस्था में कोई भी त्रुटि रही हो तो हृदय से क्षमाप्राथी हूँ।

संघ समर्पणा गीत के सामूहिक संगान के साथ प्रथम दिवस के कार्यक्रम का समापन हुआ।

द्वितीय दिवस

उदयपुर। दिनांक 28 सितम्बर 2022 को संघ समर्पणा महोत्सव एवं 60वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन का द्वितीय सत्र अटल बिहारी वाजपेयी सभागार, उदयपुर में आयोजित हुआ। इस अवसर पर श्रीसंघ, महिला समिति व समता युवा संघ के पदाधिकारियों के साथ-साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, शिखर सदस्य, महाप्रभावक सदस्य, आजीवन एवं साधारण सदस्य, प्रवृत्ति संयोजकों एवं उदयपुर संघ सदस्यों के साथ-साथ देशभर से पधारे हुए स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्री आदि उपस्थित रहे।

सामूहिक मंगलाचरण व संघ समर्पणा गीत **'संघ हमारा अविचल मंगल'** के सामूहिक संगान के साथ दोपहर 12.15 बजे से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मंच संचालन राष्ट्रीय महामंत्री निश्चल कांकरिया एवं निवर्तमान महामंत्री सुनीलजी बम्ब द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन : राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि आज पुन: संघ समर्पणा महोत्सव एवं 60वें संयुक्त अधिवेशन के द्वितीय सत्र में देशभर से पधारे हुए महानुभावों, सदस्यों एवं सभी कार्यकर्ताओं का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। श्री अ.भा.सा. जैन संघ का यह 60वां स्थापना दिवस हमारे जीवन में एक नया उल्लास एवं उमंग लेकर आया है। हमें इस उल्लास और उमंग के साथ इस अधिवेशन से लेकर आगामी अधिवेशन तक संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों और आयामों की प्रभावना में नए कीर्तिमान स्थापित करने का संकल्प लेने का समय है। आज हम सभी यहाँ से संकल्पित होकर जाएं कि हमें आचार्यों के चिंतन-मनन और आयामों को जन-जन तक पहुँचाने में अपना पूर्ण पुरूषार्थ करना है। हमें हमारे समाज के दो परिवार और परिवार के दो सदस्यों को सम्मिलित करते हुए कम से कम पाँच सदस्यों को जोड़ना है। आचार्य भगवन् द्वारा फरमाए गए चिंतन और आयाम सर्वधर्मी और प्राणीमात्र के लिए है, जिन्हें जनकल्याण की भावना से हमें सभी तक पहुँचाना है। प्रत्येक सदस्य की संघ के प्रति अहोभाव की भावना इस संघ की विराटता और व्यापकता को उदधृत करती है। 60 वर्ष वैसे तो एक समयावधि का द्योतक है, लेकिन संघ विकास में 60 वर्ष का समय कालांतर की घटनाओं, सदस्यों की सहभागिता और संघ भावना सर्वोपरि का जीवंत उदाहरण है। यह हमारे लिए गौरवानुभूति का विषय है। एक बार पुन: सभी उपस्थित सदस्यों का आभार एवं अभिनंदन।

राष्ट्रीय महामंत्री उदबोधन : राष्ट्रीय महामंत्री ने वीडियो टीजर द्वारा संघ प्रवृत्तियों एवं प्रगति को सदन के समक्ष रखते हुए कहा कि मैं राष्ट्रीय अध्यक्षजी की बात से पूर्णतया सहमत हूँ कि आज हमें यहाँ से संकल्पित होकर जाना है कि संघ विकास और प्रवृत्तियों के जो आँकड़े प्रस्तुत किए गए हैं, आगामी अधिवेशन तक उन्हें दोगुना करने का प्रयास करेंगे। साधुमार्गी

परिवार का कोई भी सदस्य संघ से जुड़ने से वंचित नहीं रहे। हमारा प्रयास है कि हम संघ के प्रत्येक सदस्य तक पहुँचे और संघ के प्रति उनमें अहोभाव की भावना विकसित करें। सदन में उपस्थित सभी आंचलिक पदाधिकारियों और कार्यसमिति सदस्यों से मेरा आग्रह है कि वे पुरूषार्थ करें। अंत में आपके पुन: द्वितीय सत्र में पधारने और सदन की गरिमा बढ़ाने हेतु आभार एवं साधुवाद प्रकट करता हूँ।

महत्तम महोत्सव : संयोजक किशोरजी कर्णावट ने कहा कि जैसा कि सभी को ज्ञात है कि आचार्य श्री रामेश के 50वें सुवर्ण दीक्षा दिवस को हमें **'महत्तम महोत्सव'** के रूप में मनाने का अवसर मिला है। हमारे आचार्यदेव ने तो हमें बहुत कुछ दिया है। उसके बदले हम यदि अपना पूरा जीवन भी उन्हें समर्पित कर दें तो कम ही होगा। ऐसे आचार्यदेव के 50वें सुवर्ण दीक्षा दिवस के रूप में प्राप्त इस **'महत्तम महोत्सव'** की किसी न किसी प्रवृत्ति से जुड़कर उनके प्रति अपनी श्रद्धा भाव अर्पित करने का स्वर्णिम अवसर है। हमें महत्तम महोत्सव को जन-जन तक पहुँचाना है एवं सभी की सहभागिता सुनिश्चित करनी है। यदि किसी भी महानुभाव को इस संबंध में जानकारी प्राप्त न हो तो वह नि:संदेह संपर्क कर सकता है। लगभग 31 माह के इस कार्यक्रम के प्रथम वर्ष की कार्ययोजनाओं को 'इन्द्रधनुष' बुकलेट के माध्यम से सभी सदस्यों तक पहुँचाया गया है। हम सभी को तन-मन-धन से जुड़कर अपनी भागीदारी को सुनिशचित करना है।

आगम एवं तत्त्व प्रकाशन समिति : जैनेन्द्रजी जैन ने आगम एवं तत्त्व प्रकाशन पर प्रस्तुति देते हुए कहा कि यह चतुर्विध संघ ज्ञान-दर्शन और चारित्र की नींव पर खड़ा है। इस नींव का मूल तत्त्व है आगमवाणी। इसे आगमवाणी कहो, जिनवाणी कहो या शास्त्र कहो, बात एक ही है। आगमवाणी को हमें उपलब्ध करवाने वाले तीर्थंकर ही हैं। भले ही तीर्थंकर हमारे सामने उपस्थित न हों, पर उनके प्रतिनिधि के रूप में हमें परम पूज्य आचार्य श्री रामेश और उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के रूप में दो महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। आप द्वय का अमूल्य मार्गदर्शन हमें सतत् प्राप्त होता रहता है। आगमों का अध्ययन सरल नहीं है। आगम गूढ़ रहस्यों के भंडार हैं। हमारा परमसौभाग्य है कि हमारे पास ऐसे दो महापुरुषों का सान्निध्य है जो इन गूढ रहस्यों को अपने ज्ञान साधना के माध्यम से सीधी और सरल भाषा में हमें उपलब्ध करवा रहे हैं। इसी का श्रेष्ठ उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत है श्री दशवैकालिकसूत्रम्। इसमें आगम को पाठों को सरल रूप में धाराप्रवाह रूप में वर्णित किया गया है, जिसका हमें ज्ञानार्जन कर लाभ लेना चाहिए और अन्यों को भी प्रेरणा करनी चाहिए।

महिला समिति राष्ट्रीय अध्यक्षा उद्बोधन : राष्ट्रीय अध्यक्षा पुष्पाजी मेहता ने वीडियो के माध्यम से महिला समिति के अंतर्गत संचालित प्रवृत्तियों को सदन में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि हम संघ समर्पणा गीत में गाते हैं- **'संघ हमारा अविचल मंगल, नंदनवन सा महक रहा'** इसमें नंदनवन सा महक रहा उक्ति नंदीसूत्र से उद्धृत है। कोई भी संघ नंदनवन तब बनता है जब उस संघ के सारथी आचार्य भगवन् द्वारा दिए गए सभी आयामों को संघ का प्रत्येक व्यक्ति अपनाता है। संघ व्यक्ति की प्रत्येक अवस्था में सहायक है। शैशवकाल में हम संघ की छांव में पलते हैं, खेलते हैं, युवावस्था में संघ विकास में ऊर्जा का योगदान देते हैं और वृद्धावस्था में दीक्षा लेकर जिनशासन की प्रभावना में अपना योगदान देते हैं। महिला समिति, श्रीसंघ के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सदैव सतत् प्रयत्नशील है। परिवारांजलि, मोटीवेशनल फार्म, सर्वधर्मी सहायता, छात्रवृत्ति, युवती शक्ति आदि के माध्यम से महिला समिति दिनो-दिन विकास की ओर अग्रसर है।

इसके पश्चात् महिला समिति द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कारों से नारीशक्ति का सम्मान किया गया। (इसका विस्तृत विवरण इसी अंक में महिला समिति की अधिवेशन रिपोर्ट के साथ संकलित)

नव साहित्य विमोचन : साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजक सुनीलजी बम्ब ने बताया कि आज हमारे लिए विशेष हर्ष का विषय है कि उदयपुर चातुर्मास के दौरान आचार्य भगवन् द्वारा फरमाए गए प्रवचनों का संकलन 'झीलों पर सूर्योदय' साहित्य पुस्तक के रूप में सदस्यों के लिए उपलब्ध होने जा रहा है। संघ इतिहास में यह दूसरा सुअवसर है जब चातुर्मास के दौरान ही आचार्य भगवन् के प्रवचनों को संकलित कर पुस्तक के माध्यम से प्रकाशित कर सुज्ञ पाठकों के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है। पूर्व अध्यक्ष/महामंत्री, शिखर सदस्य, केन्द्रीय पदाधिकारीगण, महिला समिति, युवा संघ पदाधिकारी, उदयपुर संघ पदाधिकारी गणों द्वारा 'झीलों पर सूर्योदय' पुस्तक का विमोचन संपन्न हुआ।

समता युवा संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष उदबोधन : राष्ट्रीय अध्यक्ष अतुलजी पगारिया ने कहा कि आज हम सभी इस 60वें संघ समर्पणा दिवस के उपलक्ष्य में उपस्थित है, जिससे मन हर्षित एवं आनंद से विभोर है। विगत दो दिनों से हम दो-दो महापुरुषों के मुखारविंद से जिनवाणी का लाभ ले रहे हैं। आज हम सभी यहाँ उपस्थित है, जो कहीं न कहीं हमारे संघ से जुड़ाव, संघ के प्रति अहोभाव के कारण संभव हुआ है। समता युवा संघ आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों और संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना में अपना भरपूर सहयोग प्रदान कर करते हुए नित नई ऊचाईयाँ छू रहा है। समता युवा संघ को केन्द्रीय संघ, महिला समिति का भी पूर्ण सहयोग मिल रहा है। सत्र 2022-24 के लिए समता युवा संघ के नवीन राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमितजी बम्ब-जयपुर, राष्ट्रीय महामंत्री संदीपजी पारख-हावड़ा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अनिलजी पोरवाड़-मैसूर को मनोनीत किया गया है, जिनका कार्यकाल आज से प्रारंभ हो रहा है।

अतुलजी पगारिया, दीपकजी मोगरा एवं सुमितजी बोथरा ने नवमनोनीत युवा संघ पदाधिकारियों को बैज लगाकर नवीन सत्र प्रारंभ की शुभकामनाएँ देते हुए निवेदन किया कि जिस प्रकार आप सभी का सहयोग हमें प्राप्त होता रहा है, वैसा ही सहयोग नवमनोनीत युवा संघ पदाधिकारीगणों को भी प्रदान करावें।

इसी क्रम में समता युवा संघ द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कारों के विजेताओं का अभिनन्दन किया गया। (इसकी विस्तृत जानकारी इसी अंक में समता युवा संघ अधिवेशन रिपोर्ट के साथ संकलित)

समता युवा संघ नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन : नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमितजी बम्ब ने कहा कि श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ 1979 से लेकर आज तक श्रीसंघ की भुजा बनकर संघ के निर्देशन में, संघ द्वारा दिए गए आदेशों की पालना करता हुआ गतिमान है। समता युवा संघ को श्रीसंघ और महिला समिति से सहयोग व वात्सल्य मिलता रहा है। हम उसी सहयोग और वात्सल्य की आशा रखते हैं। समता युवा संघ महत्तम महोत्सव के प्रत्येक प्रकल्प को पूर्ण उल्लास के साथ प्रत्येक सदस्य तक पहुँचाने हेतु प्रतिबद्ध है। अंततः आप सभी के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन की शुभेच्छा।

आभार अभिव्यक्ति : राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मनोजजी डागा ने कहा कि इस अधिवेशन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों तथा देशभर से पधारे हुए आगन्तुकों का आभार ज्ञापित करता हूँ। सभी पूर्वाध्यक्ष, महामंत्री, शिखर सदस्य, महिला समिति व समता युवा संघ पदाधिकारीगणों का हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने अपनी गरिमामय उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसके साथ ही श्री वर्धमान साधुमार्गी स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उदयपुर व श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, उदयपुर के सभी पदाधिकारियों का भी आभार ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अभूतपूर्व सुन्दर व्यवस्थाओं के साथ सुनियोजित रूप से कार्यक्रम संपन्न करवाने में अपना सहयोग प्रदान किया। संघ समर्पणा गीत के साथ अधिवेशन विसर्जित किया गया।

-राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

अधिवेशन/आमसभा उदयपुर में सम्पन्न

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की वार्षिक आमसभा 28 सितम्बर 2022 को उदयपुर में नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ प्रारंभ हुई। मंच पर राष्ट्रीय अध्यक्षा, राष्ट्रीय महामंत्री व पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में सभी महिला सदस्याओं को साधुमार्गी संकल्प का वाचन करवाया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने अधिवेशन एवं संघ स्थापना दिवस पर सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज से 60 वर्ष पूर्व आज ही के दिन इसी पावन धरा उदयपुर में गौरवशाली संघ की नींव रखी गई। सभी श्रावक-श्राविकाओं का कर्त्तव्य है कि संघ के चहुँमुखी विकास को तीव्रगति से प्रगति पथ पर आगे बढ़ाएं। उद्बोधन पश्चात् आप द्वारा महिला समिति की आय-व्यय का ब्यौरा दर्शाया गया।

श्रीमती कंचनजी कांकरिया ने बैठक को संबोधित करते हुए बताया कि जैन धर्म का प्रभावशाली नवकार महामंत्र प्रत्येक जैनी के गले का हार है। इसीलिए इसे सर्वश्रेष्ठ मंत्र कहा जाता है।

सुलेखाजी मोगरा ने महिला समिति द्वारा संचालित प्रवृत्तियों- केसरिया कार्यशाला, युवती शक्ति, वुमेन्स मोटिवेशनल फॉरम, परिवारांजलि, सर्वधर्मी, छात्रवृत्ति एवं संगठन को 'आपकी अदालत' नामक कार्यक्रम द्वारा प्रभावशाली तरीके से बताया।

राष्ट्रीय अध्यक्षा ने संघ स्थापना दिवस के पावन अवसर पर संयम के सजग प्रहरी आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व समस्त चारित्रात्माओं को वंदन, नमन करते हुए संघ की सेवा और संघ को ऊँचाई पर ले जाने के लिए प्रभावना करते रहने की प्रेरणा दी। प्रभावना का सशक्त माध्यम है प्रवास। सभी सदस्याओं को प्रवास एवं संघ का कार्य पूर्ण मनोयोग से करने के लिए प्रेरित किया।

प्रदत्त पुरस्कारों की सूची

श्रेष्ठ महिला रत्न : श्रीमती राखीजी धाड़ीवाल, रायपुर

श्रेष्ठ तपस्वी : श्रीमती सायरदेवी भूरा, ग्वालपाड़ा

श्रेष्ठ शासन सेविका : श्रीमती रीटाजी बांठिया, अहमदाबाद

श्रेष्ठ महिला मंडल : सूरत (आध्यात्मिक धरा) धूलिया (कौशल संपन्न) प्रतापगढ़ (वीर भूमि) अलीगढ़ (उभरता सितारा) सिलापथार (गागर में सागर) बालोद (संस्कार क्रांति)

श्रेष्ठ महिला संगठन अंचल संयोजिका

श्रीमती कविताजी पारख, राजनांदगाँव
श्रीमती वीनाजी सुराणा, नागपुर
श्रीमती सरस्वतीजी कोटड़िया, जोधपुर
श्रीमती नीताजी खिंदावत, पिपलियामंडी
श्रीमती राखीजी गांधी, सिकंदराबाद,
श्रीमती मंजूजी रांका, भीलवाड़ा

श्रेष्ठ केसरिया कार्यशाला अंचल संयोजिका

श्रीमती शालिनीजी आरी, बीकानेर
श्रीमती रुचिजी बाफना, दुर्ग
श्रीमती वैशालीजी चोरड़िया, गेवराई
श्रीमती रश्मिजी सुराणा, अहमदाबाद

युवती शक्ति (एक्टिव अंचल संयोजिका)

श्रीमती जयश्रीजी दस्साणी, विश्वनाथचाराली — श्रीमती तरूणाजी मेड़तवाल, मुम्बई

श्रीमती रेखाजी सोनावत, हैदराबाद — श्रीमती शर्मिलाजी कूकड़ा, चैन्नई

श्रीमती नीताजी छिप्पाणी, रतलाम

युवती शक्ति (एक्टिव युवती)

सुश्री हर्षिताजी दसोरिया, भदेसर — सुश्री आंचलजी कांठेड़, जावरा

सुश्री निर्झरजी मेहता, मंदसौर

वुमन्स मोटिवेशनल फॉरम (श्रेष्ठ अंचल संयोजिका)

श्रीमती प्रमिलाजी कोठारी, निम्बाहेड़ा — श्रीमती रुचिजी कोठारी, ब्यावर

श्रीमती मीनाक्षीजी बैद, रायपुर — श्रीमती सीमाजी मुणोत, जलगांव

श्रीमती रीनाजी नाहटा, सूरत — श्रीमती रीतूजी डागा, सिलापथार

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम Special Recognition Award

श्रीमती दीपालीजी ललवाणी, सूरत — श्रीमती आराधनाजी बैद, रायपुर

श्रेष्ठ परिवारांजलि अंचल संयोजिका

श्रीमती हेमाजी दक, भीम — श्रीमती स्मिताजी पोरवाल, मंदसौर

श्रीमती मीनाजी दक, बैंगलोर

श्रेष्ठ सर्वधर्मी सह-संयोजिका : श्रीमती मोनालिसाजी डागा, रायपुर

श्रेष्ठ स्वाध्यायी : सुश्री वंदनाजी मुणोत T, निम्बाहेड़ा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

राष्ट्रीय कार्यसमिति (चतुर्थ बैठक) - 26 सितम्बर 2022

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा की अध्यक्षता में चतुर्थ कार्यकारिणी बैठक 26.09.2022 को अटल बिहारी वाजपेयी सभागार, उदयपुर में सम्पन्न हुई। बैठक का शुभारंभ तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, उत्क्रांति प्रणेता आचार्य श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. एवं सभी चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन करते हुए मंगलाचरण से हुआ। रा.अध्यक्षा द्वारा सदन को साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने विगत 16 जुलाई को सम्पन्न हुई कार्यसमिति मीटिंग की रिपोर्ट की स्वीकृति प्राप्त की।

रा. महामंत्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार किसी भी वृक्ष की समृद्धि के लिए

उसकी जड़ों में सिंचन आवश्यक है। उसी प्रकार संघ के विराट वृक्ष को मजबूत करने के लिए बच्चों को संस्कारित करना जरूरी है। मंडल को प्रभावशाली बनाने के लिए गुरु का सान्निध्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

संगठन की राष्ट्रीय संयोजिका द्वारा संगठन के कार्य को आगे बढ़ाने, महिला समिति में और सदस्यों को जोड़ने और नए महिला मण्डल स्थापित करने के लिए साप्ताहिक मण्डल लगाने तथा समिति के सभी कार्यक्रमों में केसरिया गणवेश पहनने का निवेदन किया गया।

केसरिया कार्यशाला की संयोजिका ने बताया कि प्रथम बार भारत के बाहर आबुधाबी में केसरिया कार्यशाला का आयोजन हुआ है, जिसमें 14 सदस्याओं ने भाग लिया, जो कि महिला समिति के लिए गौरव का विषय है।

युवती शक्ति की संयोजिका ने बताया कि स्थानीय एवं अंचल संयोजिकाओं के अथक प्रयासों से श्रावक के बारह व्रत पर आधारित ऑफलाइन गतिविधि को 64 क्षेत्रों में आयोजित किया गया, जिसमें 680 युवतियों ने भाग लिया।

मोटीवेशनल फॉरम की राष्ट्रीय संयोजिका ने बताया कि 'अहोदानम्' में 350 से अधिक सदस्याओं ने भाग लिया।

परिवारांजलि संयोजिका ने अब तक सभी अंचल से 6200 स्टीकर पेस्ट होने और 469 नए परिवारों को प्रवृत्ति में जोड़ने की जानकारी दी।

समता छात्रवृत्ति की रा. संयोजिका द्वारा 115 आवेदन प्राप्त होने एवं 7 लाख 68 हजार रुपए की छात्रवृत्ति प्रदान करने की जानकारी दी गई। नए आवेदन के लिए समय अवधि बढ़ाकर प्रतिवर्ष अप्रैल से दीपावली तक का समय सदन की सहमति से निर्धारित किया गया।

श्रीमती चंदाजी खुर्दिया (अंतराष्ट्रीय महिला मण्डल) ने बताया कि यू.ए.ई., सिंगापुर, अमेरिका, केनिया, बैंकॉक, आस्ट्रेलिया, कनाडा और लंदन इन सभी क्षेत्रों से 27 नई सदस्याओं को जोड़ा गया तथा देश से बाहर रहने वाली साधुमार्गी परिवार की महिलाओं को संगठन से जोड़ने का निवेदन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षाजी ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि साधुमार्गी परिवार की कोई भी महिला आजीवन सदस्या बनने से वंचित न रहे। संघ सेवा का कार्य अविराम गति से चलता रहना चाहिए। जहाँ मण्डल लग रहे हैं, उसे चातुर्मास के बाद भी गतिमान रखने का लक्ष्य रखें। तत्पश्चात् गणवेश की प्राथमिकता को सम्बोधित करते हुए कहा कि साधुमार्गी संघ की प्रत्येक महिला एक सैनिक की तरह है। जिस प्रकार सैनिक का गणवेश देश सेवा का प्रतीक है वैसे ही केसरिया गणवेश अनुशासन एवं एकरूपता का प्रतीक है और यह गणवेश संघ सेवा के लिए प्रोत्साहित करता है। गुरु भगवन् के समक्ष गणवेश में ही उपस्थित होने का लक्ष्य रखें।

निष्काम भाव से संघ सेवा करने एवं रुके हुए प्रवास को पुन: शुरू करने एवं अदृश्य शक्ति के सेमिनार की प्रभावना के लिए प्रेरणा। जिसका प्रमुख आकर्षण– निष्काम नेतृत्व सक्षमीकरण, व्यक्तित्व विकास, चारित्रात्माओं का विशेष सानिध्य है। सामाजिक कार्य जैसे जीवदयाणं, आरोग्य वृद्धि, खुशियों का पिटारा और सर्वधर्मी समर्पण को निर्धारित समयावधि में करने का अनुरोध किया।

पूर्व महामंत्री श्रीमती पुष्पाजी सेठिया ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि नारी कार्य करने की दक्षता रखती है, क्योंकि नारी समाज की आँख हैं, राष्ट्र की पाँख है, परिवार में संस्कारों की मातृ है और नारी में अतुलनीय शक्ति है। उस शक्ति का उपयोग कर संघ व देश की सेवा में कर उसमे निखार ला सकती हैं। भौतिकता के इस युग में हमें संस्कारवान बनना है इसलिए धर्म व नैतिकता की शिक्षा आवश्यक है।

बैठक में रा. कोषाध्यक्षा के मासखमण तपस्या के उपलक्ष्य में अनुमोदन एवं बैज लगाकर अभिनन्दन किया गया।

–राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

सच्चे सुख की पहचान

सच्चा सुख अपनी पहचान से मिलता है, दुनिया में अपना परिचय बढ़ाने से नहीं। स्वयं की पहचान स्वयं को होने से वह सुख मिल जाता है। तब उसे बाह्य, भौतिक सुख की चाह, प्यास ही नहीं रह जाती। जो अपना परिचय स्वयं पा लेते हैं, उनके लिए कहा जाता है– 'जिसने अपने से अपनी मुलाकात कर ली, उसने जग में बड़ी बात कर ली।' वस्तुत: जो स्वयं को जान लेता है, स्वयं को जानने लगता है, उसे बादशाहों का भी बादशाह कहा जा सकता है, क्योंकि वही सच्चा सुख है। असली हीरे की तरह उसका महत्त्व है। अनाथि मुनि के सम्पर्क से मगध सम्राट श्रेणिक को अपनी पहचान हो गई थी। परिणाम स्वरूप वह समझ गया कि सच्चा वैभव क्या है? वैसी ही समझ बने तो जीवन की धन्यता है। **–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.**

संगठन

''संघ स्वागतम्''

'संघ स्वागतम्' के अंतर्गत श्री अ.भा.सा. महिला समिति की आजीवन सदस्या बनाकर 'सामायिक किट' प्रदान कर नई बहुओं को संघ से जोड़ने का सुन्दर प्रयास किया जा रहा है। अब तक कुल 114 किट का वितरण किया जा चुका है।

धार्मिक कार्य

तप–त्याग– 27 सितम्बर को आचार्य श्री नानेश चादर प्रदान दिवस एवं संघ स्थापना दिवस के अवसर पर सामूहिक एकासन, दयाभाव, नवकार महामंत्र जाप, नानेश चालीसा आदि विभिन्न तप–त्याग सहित धार्मिक अनुष्ठान किए गए।

1. मेवाड़ अंचल–

निकुंभ– 16 उपवास– टीनाजी सोनी, 15 उपवास– हीनाजी सहलोत ने किए। 30 सितम्बर तक 3000 संवर हो चुके हैं।

निम्बाहेड़ा– सरोजजी लोढ़ा और दिशाजी धींग ने 15 उपवास, चांदनीजी लोढ़ा ने 9 उपवास किए। 20 संवर हुए।

भीण्डर– सीमाजी वया ने 15 उपवास किए।

छोटीसादड़ी– 85 सामूहिक एकासन हुए।

बड़ीसादड़ी– मीनाजी मेहता ने मासखमण किया। सामायिक की नवरंगी में 81 महिलाओं ने भाग लिया।

चित्तौड़गढ़– बुलबुलजी नाहर 20 उपवास, रेखाजी बोरदिया के एकासन का मासखमण, उमाजी – नीवी का एकांतर, 15 उपवास– सुनिताजी कदमालिया, ग्यारह उपवास – 5, नौ उपवास– 5, अठाई– 5, पंचोला– 2, तेला– 30, धर्मचक्र में बेला– 50, आयम्बिल– 60 आदि तप हुए।

कपासन – महिला मंडल द्वारा लंपी वायरस पीड़ित गायों के संरक्षण हेतु 9 घण्टे नवकार मंत्र का अखण्ड जाप करवाया गया।

2. बीकानेर मारवाड़ अंचल

नोखा– श्रीमती हेमलताजी बांठिया के 90 उपवास (गतिमान) है। सुन्दरदेवी संचेती 32 उपवास, पूनमजी जैन 31 उपवास, सोनूजी बैद 21 उपवास और रेणुजी संचेती ने 30 उपवास किए।

3. मध्यप्रदेश अंचल

रतलाम– बाल तपस्वी कु. भवि सिसोदिया- मासखमण तथा कु. माही जैन के 15 उपवास की तपस्या पर महिला मंडल द्वारा बहुमान किया गया। 18 सितम्बर को **'परमेष्ठि संस्तव'** के अंतर्गत पाँच सामायिक के साथ नवकार मंत्र के जाप के माध्यम से पूरे श्रीसंघ से 1585 सदस्यों ने भाग लेकर कुल 14 लाख 44 हजार नवकार जाप सानन्द सम्पन किए।

पिपलियामंडी– अनंत चतुर्दशी के अवसर पर सामूहिक दयाभाव का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 27 महिलाओं ने भाग लिया। 27 सितम्बर को 40 एकासन सम्पन्न हुए।

4. छत्तीसगढ़–उड़ीसा अंचल

नगरी– प्रत्येक सोमवार को समता बहू मण्डल का नवकार महामंत्र जाप चलता है। पूज्य 9 आचार्यों के जीवन पर आधारित धार्मिक गतिविधि कराई गई।

रायपुर– 550 एकासन हुए।

छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल की महिला समिति द्वारा आयोजित प्रतिक्रमण प्रतियोगिता में कुल 199 प्रतिभागियों ने प्रतिक्रमण विधि सहित कंठस्थ कर एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया है। सबको साधुवाद।

**''घर-घर हर घर हो याद प्रतिक्रमण,
ये लक्ष्य गुरुपूर्णिमा से साधा ही था,
गुरु कृपा बरसी अद्भुत,
परिणाम पाकर हुआ मन प्रफुल्लित''**

5. कर्नाटक आंध्रप्रदेश अंचल

हैदराबाद– 18 सितम्बर को 'आओ बने सम्यक् ज्ञानी' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा 22 महिलाओं ने जैन संस्कार पाठ्यक्रम की परीक्षा दी।

बैंगलूरु– सर्व द्रव्य मर्यादा मंगल तप, जिसमें एक दिन में एक द्रव्य की मर्यादा रखनी होती है; ऐसे तप में अनेक महिलाओं ने पचखान लिए।

6. मुम्बई गुजरात अंचल

अहमदाबाद– आचार्य श्री नानेश चादर प्रदान दिवस पर 180 एकासन हुए।

अंकलेश्वर– सोनलजी गांधी और आंचलजी धोका ने 11 उपवास तथा चंचलजी गांधी और सलोनीजी गांधी ने 8 उपवास किए।

सूरत– पुष्पाजी सुराणा, नुपुरजी भूरा- मासखमण, सिद्धि तप शिखाजी बाफना, दो माह आयम्बिल (निरन्तर) सुमनजी सांड, दो साल से (निरन्तर) बियासन खुशबूजी गोलछा, 325 एकासन सम्पन्न हुए।

7. महाराष्ट्र विदर्भ खानदेश अंचल

चालीसगाँव– 2 महिने का एकान्तर- अभिलाषाजी सुराणा, एकान्तर- 1, उपवास- 15, बेला- 2,

आयंबिल-9, तेला-4, एकासन-52, पौषध-87, संवर-87 आदि तप हुए।

धुलिया- श्रीमती भारतीजी भण्डारी ने 15 उपवास की तपस्या की। 14 सितम्बर को बहू मण्डल ने सामूहिक एकासन का आयोजन किया, जिसमें 17 महिलाओं ने एकासन किए।

औरंगाबाद- जयश्रीजी मांडलेचा और भक्तिजी कटारिया ने मासखमण तप किया।

शिविर

क्र.सं	विषय	क्षेत्र
1.	शिविर के रंग थोकड़ों के संग	बड़ीसादड़ी
2.	समता महिला शिविर- ले लो जिनवाणी में एडमिशन	चित्तौड़गढ़
3.	थोकड़ों की अठाई	राजनांदगाँव
4.	गृहस्थ धर्म एवं श्रुत आरोहक	बैंगलूरु
5.	जैन धार्मिक बाल संस्कार शिविर	हैदराबाद
6.	आओ बढ़ाएँ चरण, पाएँ समाधिमरण, मैजिक मंत्र,जैनिज्म वर्सेज साइंस, नवकार से भवपार	अहमदाबाद
7.	मैं कहाँ हूँ, ऐसे जिएँ, सिद्धि का सोपान	सूरत
8.	संसार में रहते कर्मों से कैसे बचें, आशातना से बचो, मोक्ष के निकट जाओ	गेवरई
9.	अहोदानम्	औरंगाबाद
10.	बीजी मैन – व्यस्त जीवनशैली	रतलाम

श्रमणोपासक सदस्यता शुल्क संबंधी सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र 'श्रमणोपासक' संघ स्तम्भ के रूप में आचार्य भगवन् के आयामों, विभिन्न प्रवृत्तियों, संघ संबंधित समाचारों एवं अन्य पठनीय सामग्री को विगत 60 वर्षों से जन-जन तक पहुँचा रहा है। **वर्ष 2011 से पूर्व मुखपत्र का सदस्यता शुल्क 1000 रूपये (आजीवन) था,** लेकिन स्वर्ण जयन्ती के पावन अवसर पर धर्म की प्रभावना व अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने की दृष्टि से इसे अर्द्धमूल्य किया गया था।

विगत वर्षों में मुखपत्र के लेखन, प्रकाशन व डिजाईन आदि को और आकर्षित बनाने हेतु प्रयास किए गए हैं, जो आप सुज्ञ पाठकों द्वारा पंसद किए जा रहे हैं। इसके साथ ही वर्तमान में भौतिक विकास के साथ-साथ पेपर, मुद्रण एवं डिजाईनिंग आदि की लागत में दिनोंदिन हो रही वृद्धि को देखते हुए **दिनांक 26 सितम्बर 2022** को उदयपुर में आयोजित कार्यसमिति बैठक तथा **28 सितम्बर 2022** को आयोजित वार्षिक आमसभा में श्रमणोपासक मुखपत्र की सदस्यता राशि अर्द्धमूल्य के स्थान पर मूल सदस्यता राशि रू. 1000/- यथावत् रखने का प्रस्ताव रखा गया था। जिस पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया जो निम्नवत् है -

श्रमणोपासक सदस्यता राशि : केवल भारत में : 1000 रूपये (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु : 15000 रूपये (10 वर्ष के लिए)

*** उपरोक्त सदस्यता दरें अधिवेशन 2022 के उपरांत बनने वाले सदस्यों पर लागू होगी।**

-टीम श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्षीय उद्बोधन

-सुमितजी बम्ब, जयपुर

चरम तीर्थेश भगवान महावीर स्वामी को वंदन-नमन! युगनिर्माता, व्यसनमुक्ति के प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, महान आध्यात्म योगी, मेरे आराध्य परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के चरणों में अविराम वंदन-नमन! बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. एवं उनकी आज्ञा में विचरण करने वाले समस्त संयमशील चारित्रात्माओं को वंदन-नमन करता हूँ। मेवाड़ अंचल की धर्मस्थली झीलों की नगरी उदयपुर की इस पावन धरा पर गौरवशाली कार्यक्रम के मंच पर आसीन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के संघनिष्ठ सेवाभावी राष्ट्रीय अध्यक्ष मेरे अग्रज भाई अतुलजी पगारिया, ऊर्जावान राष्ट्रीय महामंत्री दीपकजी मोगरा, नीतिज्ञ राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुमितजी बोथरा, समता युवा संघ उदयपुर के अध्यक्ष आशीषजी सहलोत व मंत्री सुनीलजी मेहता। समता युवा संघ की केन्द्रीय टीम के विभिन्न अंचलों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय व प्रादेशिक प्रवृत्ति संयोजकगण, सम्मानित कार्यकारिणी सदस्यगण, शाखा प्रमुख व विशेष आमंत्रित सदस्यगण तथा देश के अनेक क्षेत्रों से पधारे मेरे ऊर्जावान युवा साथियो, सादर जय जिनेन्द्र, जय गुरु राम!

सन् 1979 में अजमेर में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ की स्थापना की गई। समता युवा संघ के गठन का उद्देश्य संघ के सभी ऊर्जावान युवा साथियों को संगठित करना था। हमारा मुख्य वाक्य रहा है **समता, स्वाध्याय व सेवा**। 1979 से अब तक युवा संघ के गठन को लगभग 43 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। इस संगठन की स्थापना से लेकर अब तक युवा साथियों के सहयोग व पुरुषार्थ से पूर्व अध्यक्षगणों ने पूर्ण समर्पणा से समता युवा संघ को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए पुरजोर प्रयास किए हैं। आगे भी आप सभी युवा साथियों का सहयोग अपेक्षित है।

'व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता माने'

जिस संघ व समूह का युवा सक्रिय होता है, संगठित होता है, वह समूह हर दिन नई ऊँचाईयाँ प्राप्त करता है और हमारा समता युवा संघ उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। संगठन में बड़ी शक्ति होती है। आपसी स्नेह, एक-दूसरे के सहयोग की भावना हमारे संगठन को उन्नत और मजबूत बनाती है।

आज समता युवा संघ की 210 इकाइयाँ व समता युवा शाखा की 15 इकाइयाँ मौजूद हैं। हमारे संगठन को हमें और मजबूत बनाना है। हमें वह क्षेत्र ढूंढने हैं, जहां हम और नई इकाइयों का गठन कर सकें तथा युवा शाखाओं का गठन कर संगठन को और मजबूती प्रदान कर सकें।

गुरु भगवन् ने जन-जन के आत्मकल्याण हेतु अनेक आयाम हमें दिए हैं। युवा संघ निरंतर निर्बाध रूप से उन आयामों की प्रभावना कर रहा है और करता रहेगा। आचार्यश्री ने भव्य जीवों के उत्थान के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया। हम सौभाग्यशाली हैं कि वर्तमान समय में गुरु भगवन् के **'50वें सुवर्ण दीक्षा महा महोत्सव – महत्तम महोत्सव'** के उपलक्ष में हमें अपूर्व सुन्दर श्रद्धा, समर्पणा प्रदर्शित करने का अति सुन्दर अवसर हमारे समक्ष उपस्थित है। इस 'महत्तम महोत्सव' के अंतर्गत विभिन्न प्रकल्पों के द्वारा हम आचार्य भगवन् को एक छोटी-सी भेंट अर्पित करना चाहते हैं। युवा संघ अपने निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति में महत्तम महोत्सव के प्रकल्पों को जन-जन तक पहुँचाने तथा संघ के प्रत्येक सदस्य को इस विशिष्ट आयाम से जोड़ने का भरसक प्रयास करेगा। इस महत्तम महोत्सव

के विभिन्न प्रकल्पों के अन्तर्गत धर्माराधना, सामाजिक, व्यसनमुक्ति की प्रभावना करते हुए वर्तमान समय में चल रही प्रवृतियों- धार्मिक, समता शाखा, उत्क्रांति, तरुण शक्ति की निरंतर प्रभावना व गुणात्मक वृद्धि पर भी कार्य जारी रहेगा।

● **धार्मिक :** खिलते ज्ञान पुष्प, छोटे नियम-लक्ष्य चरम, पर्युषण के रंग ज्ञान ध्यान के संग आदि निर्बाध रूप से गतिमान रखने का लक्ष्य रहेगा।

● **उत्क्रांति :** गुरु भगवन् द्वारा हमारे व समाज के उत्थान के लिए प्रदत्त 'उत्क्रांति' आयाम के अन्तर्गत समता युवा संघ पूर्व से ही उत्क्रांति की प्रभावना में लगातार पुरुषार्थ कर रहा है। अनेक ग्राम-शहरों को पूर्ण रूप से उत्क्रांति क्षेत्र घोषित कर साधुमार्गी संघ का गौरव बढाया है। हमारा प्रयास रहेगा कि नियमित रूप से मर्यादापूर्वक मॉनिटरिंग कमेटी गठित हो, वहाँ पर होने वाले सभी आयोजन उत्क्रांति युक्त हों साथ ही बचे हुए परिवार, क्षेत्र, ग्राम पूर्णत: उत्क्रांति युक्त हों।

● **समता शाखा :** महापुरुषों की वाणी शक्तिसंपन्न होती है। उनके सूत्रों में जीवन परिवर्तन के गहरे संकेत छुपे होते हैं। प्रत्येक रविवार ऊषाकाल की घड़ी में देशभर के युवाओं का एक स्वर, एक ही समय, एकरूपता और निरंतरता से समता आराधना जारी है। इसकी प्रभावना निरंतर जारी रहेगी। कोरोना काल में हमने 21000 के लक्ष्य को भी छुआ है और उसी लक्ष्य को अपने मस्तिष्क में रखते हुए हम इसकी पुरजोर प्रभावना करने के लिए संकल्पित हैं।

समता शाखा के लिए आगे की रूपरेखा-

- अभी 9-10 हजार व्यक्तियों का आंकड़ा आ रहा है। उसको हर हफ्ते ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने का लक्ष्य है। हर हफ्ते कम से कम 13000+ का लक्ष्य निर्धारित किया है।
- हर क्षेत्र में जितने घर हैं वहां की उपस्थिति उसकी चार गुनी होनी चाहिए। यानी हर घर से 4 सदस्य का लक्ष्य लेकर चलना है।
- समता शाखा के माध्यम से युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ने का लक्ष्य लेकर चलना है।
- हर अंचल में जहाँ एक भी साधुमार्गी घर है, वहाँ पर समता शाखा प्रारंभ करवाना और उनकी निरंतरता बनाए रखना।
- सभी समता शाखा संयोजकों को अपने-अपने अंचल में डोर टू डोर और कॉल के माध्यम से परस्पर संवाद बनाए रखना अत्यधिक जरूरी है।

● **तरुण शक्ति :** आज का तरुण कल का युवा है और युवा संघ का भविष्य है। 12 से 18 वर्ष के तरुण युवाओं को हमारी धार्मिक संस्कृति और संघ से जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए समता युवा संघ लगातार तरुण शक्ति प्रकल्प पर काम कर रहा है। आने वाले समय में हमें जरूरत है तरुणों के मन में संघ के प्रति अहोभाव लाने की। आज इस उम्र के तरुण कहीं न कहीं अपनी शिक्षा में, अपने करियर को बनाने में व्यस्त है और अभिभावक भी उनको इसी रूप में देखना चाहते हैं। समता युवा संघ का प्रयास रहेगा कि विभिन्न माध्यमों के जरिये उन्हें जीवन की कला, टाईम मैनेजमेंट, मोटीवेट रहना, कुव्यसनों से बचना, सफल करियर का चुनाव करना, करियर काउंसलिंग, जैनिज्म साइंस आदि क्षेत्रों में सहयोग देकर तरुण युवाओं को सशक्ति के साथ संघ से जोड़ने का प्रयास रहेगा।

आने वाले समय में सभी युवा साथियों के लिए एक ऐसा माध्यम हम लाना चाहते हैं, जहाँ समता युवा संघ के प्रकल्प, आयाम पर कोई प्रश्न है, कोई जिज्ञासा है, समझना है तो उसके समाधान के लिए एक सहज माध्यम उन्हें प्रदान किया जाएगा। इस प्रभार को 'सेवा और सहयोग' के नाम से जाना जाएगा। इसकी अधिक जानकारी जल्द आपको प्रेषित कर दी जाएगी।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता

युवा संघ गुरु भगवन् द्वारा प्रदत सभी संकल्पों, आयामों, संघ सेवार्थ कार्यों के प्रति हमेशा समर्पित भाव से कार्य पूर्णता की ओर सतत् प्रयत्नशील रहेगा। आप सभी युवा साथियों का इसमें पूर्ण सहयोग अपेक्षित है। मैं आपसे पुन: एक बार निवेदन करना चाहता हूँ कि आप आने वाली टीम को अपना पूरा सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। इसी मंगलकामना के साथ जय नानेश! जय रामेश!

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

44वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन व वार्षिक आमसभा धर्मनगरी उदयपुर में संपन्न

उदयपुर, 27 सितम्बर 2022। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ का 44वाँ वार्षिक अधिवेशन गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी की अध्यक्षता में विद्या निकेतन सीनियर सैकेंडरी स्कूल, उदयपुर में संपन्न हुआ।

सभा की कार्यवाही प्रारंभ करते हुए समता युवा संघ, उदयपुर के मंत्रीजी ने पदाधिकारियों को मंचासीन करवाया। सभा का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा किया गया। मंगलाचरण मेवाड़ अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी द्वारा किया गया। सर्वप्रथम विगत समय में देवलोक हुई चारित्रात्माओं के लिए श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान सम्पूर्ण सदन द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने सभी युवाओं एवं पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए परम पूज्य आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के प्रति अहोभाव प्रकट करते हुए आगे भी इसी प्रकार पुरुषार्थ के साथ संघ को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का निवेदन किया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने पीपीटी प्रजेंटेशन के माध्यम से वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन सदन के पटल पर प्रस्तुत किया। वार्षिक प्रतिवेदन की प्रतियाँ उपस्थित सभी सभासदों को दी गई।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी ने वित्तीय वर्ष 2021-22 का आय-व्यय का लेखा-जोखा सदन के समक्ष प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को गति देते हुए कार्यसमिति की बैठक में घोषित वार्षिक पुरस्कारों के वितरण हेतु राष्ट्रीय कोषाध्यक्षजी ने सभी विजेताओं को पुरस्कार ग्रहण करने हेतु क्रमश: मंच पर आमंत्रित किया। इन विजेताओं को संघ पदाधिकारियों ने ससम्मान पुरस्कार प्रदान किए। इसी क्रम में उपस्थित सभासदों ने अपनी जिज्ञासाएँ एवं संघ विकास हेतु बहुमूल्य सुझाव सदन में रखे।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के आगामी सत्र 2022-24 के लिए नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमितजी बम्ब-जयपुर को वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष अतुलजी पगारिया-जावरा द्वारा कार्यभार हस्तांतरण हुआ। कार्यभार ग्रहण कर नवीन राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने विजन प्रस्तुतिकरण के साथ नवीन कार्यकारिणी की घोषणा की।

समता युवा संघ-उदयपुर के मंत्रीजी द्वारा आभार ज्ञापन पश्चात् **'तेरे पावन चरणों में...'** के सामूहिक संगान और राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई।

वार्षिक पुरस्कार- 2022

1. युवा तपस्वी-

श्री पुलकितजी गुलगुलिया-पुणे	श्री हर्षजी देशलहरा-गुंडरदेही
श्री सौरभजी भंसाली-राजनांदगाँव	श्री रौनकजी बोहरा-देवकर
श्री आदिजी बोहरा-देवकर	श्री अभिषेकजी पितलिया-उदयपुर
श्री संजयजी वया-उदयपुर	श्री विशांतजी कोटड़िया-शहादा
श्री अभिनन्दनजी मारू-मुंबई	श्री अमितजी मोगरा-उदयपुर

		श्री नमनजी मेहता-रतलाम	श्री मनीषजी श्रीश्रीमाल-राजनांदगाँव
		श्री अजयजी दक-उदयपुर	श्री हर्षजी कटारिया-रतलाम
		श्री प्रखरजी बोहरा-देवकर	श्री ज्ञानचंदजी पारख-देवकर
		श्री दीपकजी कोचर-जोधपुर	श्री कमलनयनजी चपलोत (वर्षीतप)-नागदा जंक्शन
2.	**श्रेष्ठ युवा स्वाध्यायी**	श्री सुमितजी चौपड़ा-सूरत	श्री विजयजी जैन-जावद
		श्री रूपेशजी भंडारी-खिरकिया	
3.	**श्रेष्ठ आयोजन-व्यसनमुक्ति**	समता युवा संघ-शहादा	
4.	**श्रेष्ठ आयोजन-सामाजिक**	समता युवा संघ-हैदराबाद	
5.	**श्रेष्ठ आयोजन-उत्क्रांति**	समता युवा संघ-देशनोक	
6.	**श्रेष्ठ आयोजन-धार्मिक**	समता युवा संघ-रतलाम	
7.	**श्रेष्ठ आयोजन-समता शाखा**	समता युवा संघ-नगरी	
8.	**श्रेष्ठ आयोजन-समता शाखा (उभरता क्षेत्र)**	समता युवा संघ-पुणे	
9.	**श्रेष्ठ शासन सेवा**	समता युवा संघ-उदयपुर	
10.	**श्रेष्ठ संगठन**	समता युवा संघ-निम्बाहेड़ा	
11.	**श्रेष्ठ समता युवा संघ (वृहद्)**	समता युवा संघ-दुर्ग	
12.	**श्रेष्ठ समता युवा संघ (लघु)**	समता युवा संघ-भीम	
13.	**शासन गौरव**	युवा चेता श्री अरविंदजी धारीवाल-जयपुर	
14.	**समता युवा रत्न**	युवा चेता श्री प्रसन्नजी बैदमूथा-पुणे	
15.	**मेरा अंचल सर्वश्रेष्ठ अंचल (प्रथम)**	मेवाड़ अंचल	
16.	**मेरा अंचल सर्वश्रेष्ठ अंचल (द्वितीय)**	जयपुर-ब्यावर अंचल	

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

अष्टम कार्यसमिति सभा सत्र 2020-22

उदयपुर, 26 सितम्बर 2022। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी की अध्यक्षता में सत्र 2020-22 की अष्टम् कार्यसमिति सभा का आयोजन उदयपुर में दिनांक 26 सितम्बर 2022 को किया गया।

मंगलाचरण मेवाड़ अंचल उपाध्यक्षजी द्वारा किया गया। समता युवा संघ, उदयपुर के अध्यक्षजी ने सभी पदाधिकारियों का आत्मीय स्वागत-अभिनन्दन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने स्वागत करते हुए सभी में उत्साह का संचार कर समता युवा संघ द्वारा उनके इस कार्यकाल में किए गए कार्यों में सभी सदस्यों के सहयोग के लिए आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि 'महत्तम महोत्सव' की शुरुआत हो चुकी है। आचार्य भगवन् का 50वाँ दीक्षा महा-महोत्सव एक ऐतिहासिक क्षण है, जो शायद हमारे जीवन में दोबारा नहीं आएगा। यह अवसर है भगवन् को कुछ अर्पण करने का। इसको ना चूकें। सभी इस महत्तम महोत्सव में किसी न किसी प्रकार से सहयोग दें। स्वयं जुडें, औरों को भी जोड़ने की प्रेरणा दें।

राष्ट्रीय महामंत्री ने सप्तम् कार्यसमिति सभा का विवरण सभा में प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने बिना किसी संशोधन के सर्वानुमति से पारित किया। आपने समता युवा संघ का 1 जुलाई से 20 सितम्बर 2022 तक का प्रगति प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत करते हुए कहा कि

चातुर्मासिक स्थापना दिवस के पावन प्रसंग पर दिनांक 11-12-13 जुलाई को सम्पूर्ण राष्ट्र में तेला-तप-आराधना का आह्वान किया गया, जिसमें कुल 1239 तेला, 975 उपवास, 672 एकासना आदि की आराधना हुई। दिनांक 21 अगस्त को A-1-9 एकासना तप का अद्भुत आयोजन किया गया, जिसमें पूरे राष्ट्र में कुल 8397 एकासना तप की आराधना हुई। पर्युषण के 8 दिवस में दिनांक 24 से 31 अगस्त के मध्य केन्द्रीय संघ द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ऑनलाइन क्विज कॉन्टेस्ट खिलते ज्ञान पुष्प-6 में कुल 677 प्रतिभागियों ने भाग लिया। छोटे नियम-लक्ष्य चरम की शृंखला निरंतर गतिमान है। समता शाखा की महक आज पूरे राष्ट्र के 778 क्षेत्रों के साथ-साथ विदेश के 21 क्षेत्रों को भी सुगंधित कर रही है। अभी तक कुल 787 गाँव/क्षेत्र और 13,838 परिवारों ने उत्क्रांति रूप भेंट गुरुचरणों में समर्पित की है। इस अवधि में कुल दो सामूहिक आयोजन उत्क्रांति की नियमावली के अनुसार सम्पन्न हुए हैं। सामाजिक क्षेत्र में समता युवा संघ, कोलकाता द्वारा गौवंश को अभयदान का कार्य किया गया। अहिंसा प्रचारक महेशजी नाहटा द्वारा व्यसनमुक्ति के लिए अद्भुत कार्य किया जा रहा है। समता युवा संघ की दो नवीन शाखाओं सहित 210 शाखाओं द्वारा प्रभावना की जा रही है। समता युवा संघ के सत्र 2022-24 के नवनिर्वाचन की प्रक्रिया शुरू हो गई हैं। अभी तक कुल 67 क्षेत्रों में नवनिर्वाचन की प्रक्रिया सम्पन्न हुई है। कुल 134 शोक-संवेदना सन्देश प्रेषित किए गए हैं।

सभा में संघ की आगामी कार्ययोजनाओं पर मंथन व विचार-विमर्श हुआ। समता युवा संघ द्वारा 20-22 कार्यकाल में किए गए कार्यों की छोटी-सी प्रस्तुति वीडियो द्वारा प्रस्तुत की गई, जिसे देख सम्पूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय के नारों से गूंज उठी।

समता युवा संघ, उदयपुर के मंत्रीजी द्वारा आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया गया। अंत में **'तेरे पावन चरणों में...'** के सामूहिक संगान एवं राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई। **-राष्ट्रीय महामंत्री**

संथारे की अद्भुत छटा

उदयपुर। ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से 03 अक्टूबर 2022 को तिविहार संथारा रूप तृतीय मनोरथ ग्रहण करने वाली वयोवृद्ध शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. के आत्म-संयम को देखकर जन-जन आश्चर्यचकित है। परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में 21 अक्टूबर को संथारे का 19वां दिवस गतिमान था।

महासती श्री शांताकँवरजी म.सा. का जन्म, दीक्षा और तीसरा मनोरथ, तीनों उदयपुर में ही हुए, जो परम सौभाग्य की बात है। जवाहराचार्य गणेशाचार्य नानेशाचार्य एवं रामेशाचार्य के पावन दर्शन सेवा का अनुपम लाभ महासती जी ने अपने 87 वर्षीय जीवनकाल में लिया। वर्तमान में उभय गुरु-भगवंतों के पावन दर्शन व आत्मिक संदेशों तथा चरित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत भक्ति स्वरों से वे आत्मभावों के उच्च सोपानों को प्राप्त करने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही हैं। नवकार महामंत्र जाप का क्रम जारी है। आपके समाधि भाव और सजगता के साथ धैर्य से परिपूर्ण संथारे के दर्शन कर जन-जन अपने आपको धन्य महसूस कर रहा है। आचार्यदेव द्वारा सकल श्रीसंघ से आह्वान किया गया है कि जब तक संथारा गतिमान रहे तब तक प्रतिदिन रात्रि 8:30 से 8:35 तक नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप करें। हम सभी कर्मनिर्जरा के इस विशेष अवसर का लाभ लेकर संथारे की पूर्ण अनुमोदना करें और शुभ भावों में रमण करें।

-श्रमणोपासक टीम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

युवा चेता सुमितजी बम्ब, राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सत्र 2022-24 हेतु जयपुर निवासी सुमितजी बम्ब को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। आप टोंक निवासी जयपुर प्रवासी सुश्रावक सुशील कुमारजी-सुश्राविका श्रीमती विमलादेवी बम्ब के सुपुत्र हैं। आपका पूरा परिवार शासन के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान है। आप प्रोजेक्ट टेक्निकल (कम्प्यूटर) के प्रोफेशनल हैं। शासननिष्ठ सुमितजी सत्र 2016-2018 में समता युवा संघ, जयपुर के मंत्री, 2018-2020 अध्यक्ष एवं 2020-2022 में जयपुर-ब्यावर अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर सेवाएँ दे चुके हैं। आपके संस्कारित परिवार में स्व. श्री पारसमलजी व स्व. श्रीमती नौरतदेवी बम्ब, माता-पिता, भाई वैभवजी, सौरभजी ने आचार्य श्री नानेश-रामेश को रोम-रोम में बसा लिया है। आपने बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग (कंप्यूटर साइंस) की शिक्षा प्राप्त की है। परम पूज्य आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से मृदुभाषी सुमितजी के कार्यकाल में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ नई ऊँचाइयों को छुए, यही मंगलकामना करते हैं।

युवा चेता संदीप जी पारख, राष्ट्रीय महामंत्री मनोनीत

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सत्र 2022-24 हेतु हावड़ा निवासी संदीपजी पारख को राष्ट्रीय महामंत्री पद पर मनोनीत किया गया। आप बीकानेर निवासी हावड़ा प्रवासी सुश्रावक अशोककुमारजी-सुश्राविका श्रीमती कनकलताजी पारख के सुपुत्र हैं। आपका पूरा परिवार शासन के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान है। आप कपड़े के व्यापारी हैं। शासननिष्ठ संदीपजी हावड़ा समता युवा संघ में दो वर्ष सहमंत्री, चार वर्ष मंत्री, दो वर्ष अध्यक्ष तथा श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ में दो वर्ष कार्यकारिणी सदस्य, दो वर्ष अंचल मंत्री, 2018-2020 में उपाध्यक्ष एवं 2020-2022 में राष्ट्रीय सामाजिक संयोजक के पद पर सेवाएँ दे चुके हैं। स्व. श्री पूनमचंदजी, स्व. श्रीमती ममोलदेवी पारख तथा आपके माता-पिता ने आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश को आपके पूरे संस्कारित परिवार के रोम-रोम में बसा लिया है। आपने हायर सैकेंडरी तक शिक्षा प्राप्त की है। परम पूज्य आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से मृदुभाषी कर्मनिष्ठ संदीपजी पारख के कार्यकाल में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ नई ऊँचाइयों को छुए, यही शुभभावना भाते हैं।

युवा चेता अनिल जी पोरवाड़, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मनोनीत

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सत्र 2022-24 हेतु मैसूर निवासी अनिलजी पोरवाड़ को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। आप पिछले 22 वर्षों से ज्वैलरी का व्यवसाय कर रहे हैं। शासननिष्ठ अनिलजी पूर्व में 4 वर्ष समता युवा संघ, मैसूर के अध्यक्ष पद पर एवं सत्र 20-22 में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा के कर्नाटक-आँध्रप्रदेश अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दे चुके हैं। आपके संस्कारित परिवार में स्व. श्री नाथूलालजी, स्व. श्रीमती लहरीबाई पोरवाड़ तथा पिता स्व. श्री

लक्ष्मीलालजी एवं माताजी श्रीमती कमलाबाई पोरवाड़ ने आचार्य श्री नानेश-रामेश को रोम-रोम में बसा लिया है। परम पूज्य आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से अनिलजी के कार्यकाल में श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ नई ऊंचाइयों को छुए, यही मंगल मनीषा करते हैं।

समता युवा रत्न से सम्मानित व्यक्तित्व

नाम : श्री प्रसन्न जी बैदमूथा **स्थान** : पूणे

सम्मान : समता युवा रत्न -2022 (श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ)

आप श्री पुणे निवासी सुश्रावक श्री शिवराजजी-सुश्राविका श्रीमती शोभा जी बैदमुथा के सुपुत्र हैं। आपका जीवन धार्मिक गतिविधियों से सुसज्जित है। आपने स्कूली शिक्षा वाकडी, जिला-जलगाँव से और डिग्री सिंहगड कॉलेज पुणे से पूर्ण की। आप संघ के अनेक कार्यों में अपनी सेवा दे रहे हैं। आप 2017-2021 तक समता युवा संघ, पुणे के अध्यक्ष रहे हैं। आप मार्च 2021 में श्री संघ के IT सेल में सदस्य भी रहे हैं। आप इसी प्रकार अध्यात्मिक कार्यों को करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करें, यही मंगलकामना करते हैं।

शासन गौरव सम्मान से सम्मानित व्यक्तित्व

नाम : श्री अरविन्द जी धारीवाल **स्थान** : जयपुर

सम्मान : शासन गौरव -2022 (श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ)

आप देशनोक निवासी जयपुर प्रवासी सुश्रावक श्री उत्तमकुमारजी-सुश्राविका श्रीमती मंजूजी धारीवाल के सुपुत्र हैं। आपको धार्मिक संस्कार विरासत में प्राप्त हुए हैं। पूरा परिवार शासन के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान है। शासन व चारित्रात्माओं की सेवा सुश्रूषा में आप सदैव तत्पर रहते हैं। समय-समय पर विहार सेवा का भी भरपूर लाभ उठाते हैं। आप हर क्षेत्र में अग्रणी हैं- चाहे वो धार्मिक हो, तप-त्याग हो, सामाजिक हो, व्यवसाय हो या पारिवारिक हो। आपने 25 बोल, जैन सिद्धान्त बत्तीसी, लघुदण्डक, गति-आगति, समकित के 67 बोल, गुणस्थान स्वरूप, कर्मप्रकृति, कर्मविपाक, बंध-उदय-उदीरणा सत्ता आदि थोकड़ों का ज्ञानार्जन किया है। आपको प्रतिक्रमण, पुच्छिंसु णं, दशवैकालिक सूत्र के 3 अध्ययन कंठस्थ है तथा चौथा अध्ययन अभी सीख रहे हैं। आप स्थानीय एवं आँचलिक स्तर पर सेवाएँ दे रहे हैं। चारित्रात्माओं एवं संघ के प्रति आपका सेवा भाव सभी को प्रेरणा देने वाला है। आप इसी प्रकार तप, ज्ञान, वैयावच्च के कार्यों में वृद्धि करते रहें, ऐसी शुभ भावना भाते हैं।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ **-श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ**

- मुँह के सन्मुख प्रंशसा, पीछे से दोष प्रकट करना, यह भी क्षुल्लक वृत्ति का लक्षण है। पर, हाँ इस मॉडल को भी बदला जा सकता है। उसके लिए विशेष रूप से ट्रेनिंग की आवश्यकता है।
- सुधार जड़ से होना चाहिए। ऊपर टहनी-पत्तों को सुधार देने से यह मत समझना कि सुधार हो गया है। जड़ में सुधार होने से बाकी सारी क्रियाएँ स्वत: ही सुधरती चली जाएंगी, फिर सुधार के लिए परिश्रम की आवश्यकता नहीं होगी। **-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.**

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	04-09	11-09	18-09	25-09
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	2816	2754	2621	3001
		आंचलिक क्षेत्र	89	94	90	94
2	बीकानेर-मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	746	786	746	805
		आंचलिक क्षेत्र	43	44	44	45
3	जयपुर-ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	417	356	361	320
		आंचलिक क्षेत्र	28	27	27	25
4	मध्यप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	1107	1112	1108	1044
		आंचलिक क्षेत्र	76	75	75	76
5	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	2315	2623	2753	2758
		आंचलिक क्षेत्र	152	154	153	157
6	कर्नाटक-तेलंगाना-आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	419	305	340	276
		आंचलिक क्षेत्र	22	23	25	23
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	150	270	232	186
		आंचलिक क्षेत्र	13	12	12	12
8	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई	आंचलिक उपस्थिति	533	465	522	527
		आंचलिक क्षेत्र	31	31	27	29
9	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	278	312	310	509
		आंचलिक क्षेत्र	34	35	35	29
10	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	328	340	349	325
		आंचलिक क्षेत्र	35	37	37	40
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	216	213	225	225
		आंचलिक क्षेत्र	28	27	27	26
12	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-यू.पी.	आंचलिक उपस्थिति	89	107	106	125
		आंचलिक क्षेत्र	10	10	9	9
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	8	7	13	12
		आंचलिक क्षेत्र	7	6	9	5
संयुक्त रिपोर्ट						
	कुल उपस्थिति		9422	9650	9686	10113
	कुल क्षेत्र		568	575	570	570

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज करवाने वाले 10 संघों की सूची

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति
1.	उदयपुर	3314	6.	रतलाम	775
2.	राजनांदगांव	2600	7.	सूरत	756
3.	रायपुर	1198	8.	बड़ीसादड़ी (उत्क्रांति ग्राम)	691
4.	निकुम्भ (उत्क्रांति ग्राम)	1167	9.	निम्बाहेड़ा	565
5.	चित्तौड़गढ़ (उत्क्रांति ग्राम)	784	10.	दुर्ग	505

||जय गुरु नाना|| ||जय महावीर|| ||जय गुरु राम||

राम चमकते भानु समाना

आचार्य श्री नानेश के 23वां पुण्य स्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश के आचार्य पदारोहण दिवस पर आयोजित

आयम्बिल दिवस

बुधवार, 12 अक्टूबर '22

लक्ष्य-5000 आयम्बिल **परिपूर्ण 7400+आयम्बिल**

आप सभी संघ पदाधिकारी गण, श्रावक - श्राविकाओं व
युवा साथियों के अप्रतिम पुरुषार्थ
को नमन

हार्दिक आभार व साधुवाद

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

(अन्तर्गत-श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

जीवदयाणं

- कोलकाता - 85,000 की धनराशि देकर 5 गायों को अभय दान।
- लावारिस पशु पक्षियों के लिए 15000 की राशि।
- सूरत - दो बकरों को कसाई खाने से छुड़वा कर पिंजरापोल में पालन हेतु छोड़ा।
- 10000 की धनराशि बीमार गायों के उपचार हेतु।
- 2000 का गायों को चारा।
- बोरदा - लम्पी वायरस से पीड़ित गायों के लिए 18000 की धनराशि प्रदान की गई।
- दुर्ग - जीवदयाणं के लिए 45000 की धनराशि प्रदान की।
- निंबाहेड़ा - कबूतरों के दान के लिए 4000 की धनराशि प्रदान की।
- तेजपुर - 200 पशुओं को चारा।
- गुवाहटी, सिलापथार, सिलचर, अंकलेश्वर, रायपुर ,धमधा, कपासन, देशनोक, हरदा, खैरागढ़, चेन्नई, रतलाम आदि विभिन्न क्षेत्रों में जीवदयाणं के अंतर्गत गायों को चारा डालना पक्षियों को दाना डालना आदि कार्य संपन्न हुए।
- रायपुर छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल में कुल 110 मच्छरदानी तथा 200 रेनकोट, निम्बाहेड़ा में 20 मच्छरदानी, गंगाशहर-भीनासहर में 18 मच्छरदानी का वितरण किया गया।

स्मृतिशेष

सुश्राविका उगमादेवी भूरा, कोलकाता

धर्मनिष्ठ सुश्राविका उगमादेवी भूरा धर्मसहायिका बालचन्दजी भूरा, कोलकाता निवासी का 89 वर्ष की आयु में 2 अक्टूबर 2022 को निधन हो गया। आप प्रतिदिन नवकारसी, पोरसी, सामायिक, स्वाध्याय, त्याग-प्रत्याख्यान आदि का नित्य नियम पालती थी। आपने उपवास, बेला, तेला, चौला, पचौला व अठाई आदि तपस्याएँ कर अपने जीवन को सजाया। सावन माह में एकांतर तप व एकांतर का मासखमण आपने कई बार किया।

आप प्रसन्नमन एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की धनी थी। बुद्धिमत्ता, कार्यदक्षता, व्यवहारकुशलता, कर्तव्यनिष्ठा, सेवाभावी एवं अत्यंत उदार प्रकृति से परिपूर्ण थी। आपने अपने परिवार की छः पीढ़ी को संस्कारों की धरोहर प्रदान कर प्रगतिशील सोच से बांधे रखा। आपका सभी के साथ अद्भुत तालमेल था। आपने जीवनपर्यन्त मिथ्यात्व एवं दिखावे को कभी स्थान नहीं दिया।

आपका सरल स्वभाव सभी को प्रेरित एवं प्रभावित करता था। गत कुछ समय से स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने पर भी आपने समभाव से आत्मबल को मजबूत रखते हुए कष्ट सहन किए। हम समस्त परिजन यही शुभेच्छा करते हैं कि आप शीघ्र ही सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो परम लक्ष्य का वरण करें।

श्रद्धावनत्

कमलादेवी भूरा **(जेठानी)**, अभय-कुमुदश्री भूरा, दौलत-कुसुम भूरा **(पुत्र-पुत्रवधू)**, तारा बोथरा **(पुत्री)**, श्रेणिक-सविता, भरत-प्राची, रोहित-राशि भूरा **(पौत्र-पौत्रवधू)**, कविता-सुमति लुणिया, अनु-मनीष कोचर, सपना-मनोज ढड्ढा **(पौत्री-दामाद)**, मुकुल-प्रियंका **(दोहिता-दोहितावधू)**, मीनू-दीपक रायजादा, मुक्ता-कदम सुराना **(दोहित्री-दामाद)**, लक्षिता, वंश, जिया, अरिष्ठ, त्रिशा **(प्रपौत्री, प्रपौत्र)** एवं समस्त भूरा परिवार

पीहर पक्ष : सरदारमल कांकरिया **(भ्राता)** एवं समस्त कांकरिया परिवार, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद

पता- 5A, Outram Street, Kolkata-700017

Bhura & Bhura   S N fabrics Pvt Ltd

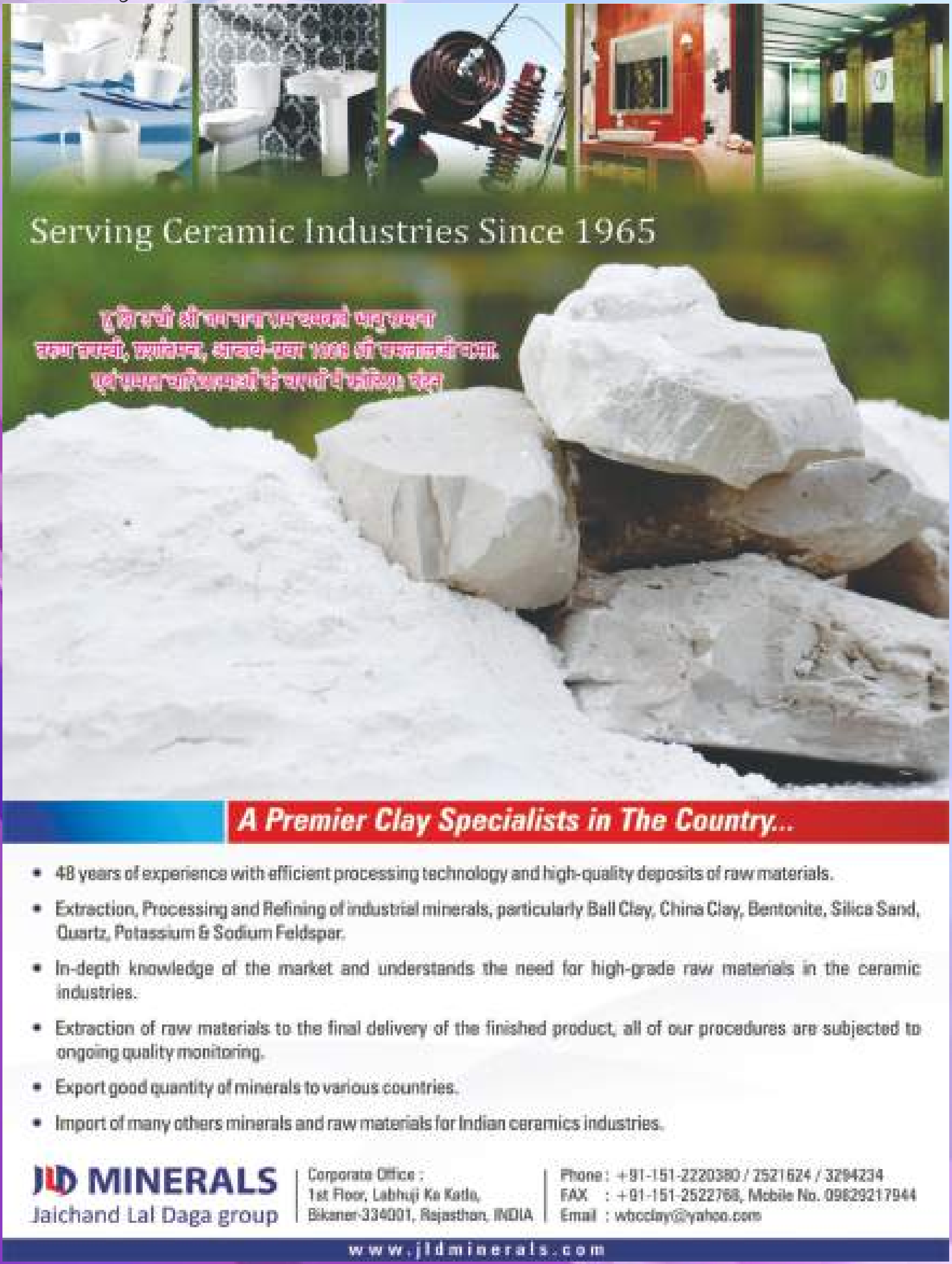

Serving Ceramic Industries Since 1965
A Premier Clay Specialists in The Country...
• 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
• Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
• In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
• Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
• Export good quantity of minerals to various countries.
• Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.
JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group
Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA
Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com
www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी ही हमारी पहचान

सिपानी सेवा सदन, बैंगलोर एक ऐसा निवास स्थान है जहाँ बुजुर्ग एवं असहाय व्यक्तियों को निःशुल्क भोजन, कपडे, चिकित्सा आदि उपलब्ध करवाए जाते हैं।

इस सदन ने छः वर्ष पूर्ण कर लिए हैं एवं 100 से शुरुआत करके वर्तमान में 300 व्यक्तियों को यह सेवा उपलब्ध है। अब हम 100 अतिरिक्त आवासियों को जोडने की व्यवस्था कर रहे हैं।

इस सुविधा में पूर्ण सुसज्जित एंबुलेन्स, डाक्टर व नर्सिंग देखभाल आदि की सुविधा चौबीसों घंटे उप्लब्ध है एवं 40 का स्टाफ इस सेवा में नियुक्त है।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन , 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

श्रमणोपासक विशेषांक

शीघ्र ही होगा नव आगाज

सादर जय जिनेन्द्र!

समय की गति अति तीव्र है, जिसके साथ चलने का साहस विरले महापुरुष ही कर सकते हैं। समय की माँग एवं आवश्यकता को देखते हुए आचार्य भगवन् निरन्तर जन-जन को धर्म साधना हेतु पुरजोर प्रेरणा दे रहे हैं। जनमानस के आत्मकल्याण हेतु उनका चिन्तन निरन्तर गतिशील है और उनके चिन्तनरूपी आशीर्वचनों व प्रवचनांश को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य संघ का मुखपत्र ''श्रमणोपासक'' अनवरत कर रहा है।

अंधानुकरण में सामान्य जनमानस ने एक ऐसी जीवनशैली अपना ली है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है। उसमें ना धर्म के लिए स्थान है, ना साधना का समय। ना चिन्तन करने की चिन्ता है, ना जिनवाणी सुनने की इच्छा। ना कर्मों का भय है, ना ही सम्यक्त्व की समझ। लगभग सभी मिथ्यात्व में डूबते हुए श्रावकाचार को भूलते जा रहे हैं।

महापुरुषों द्वारा आत्मकल्याण हेतु प्रदत्त चिन्तनों को ध्यान में रखते हुए एक 'विशेषांक' प्रकाशित किया जाना संभावित है, जिसका विषय **''सम्यक्त्व एवं श्रावकाचार''** रहेगा।

विशेषांक हेतु आप प्रतिभावान एवं सुज्ञ लेखकों, मनीषियों एवं पाठकों के सुझाव, विचार, रचनाएँ, लेख, कविताएँ, भजन आदि सादर आमंत्रित हैं। आप सुधीगण विशेषांक के सन्दर्भ में अपने विचार अधिकाधिक भेजने की कृपा करें।

विशेषांक हेतु निम्न विषयों पर रचनाएँ आमंत्रित हैं-

1. सम्यक्त्व की महिमा
2. सम्यक्त्व का अर्थ
3. देव, गुरु, धर्म और सम्यक्त्व
4. सम्यक्त्व सम्बन्धी जिज्ञासा-समाधान
5. सम्यक्त्व का उदय व्रतों की चेतना
6. मिथ्यात्व के 10 भेद के प्रयोगात्मक उदाहरण
7. श्रावक का अर्थ
8. श्रावक जीवन व व्रतों की महिमा
9. श्रावक के गुण
10. श्रावकाचार
11. व्रतधारी श्रावक का वातावरण
12. गृहस्थ व श्रावक की विचारधाराओं में अन्तर
13. प्राचीन श्रावक V/s वर्तमान श्रावक
14. श्रावक के तीन मनोरथ
15. ब्रह्मचर्य एक सम्पत्ति है
16. शाकाहार : सर्वोत्तम आहार
17. रात्रिभोजन त्याग : वैज्ञानिक धारणा
18. कषायमुक्त जीवन : आरोग्य जीवन
19. अच्छे श्रोता की क्या पहचान
20. बारह व्रतों का संक्षिप्त स्वरूप
21. स्वधर्मी वात्सल्य की ओर कदम बढ़ाएँ
22. धर्म संस्कार बिन जीवन सूना
23. Jain life style is an ideal life style

विशेष निवेदन है कि आपकी रचनाएँ सुन्दर व स्पष्ट अक्षरों में 1000-1100 शब्दों में समाहित करते हुए अपने नाम, पते व मोबाइल नं. सहित शीघ्रातिशीघ्र व्हाट्सएप्प नं. **9314055390** अथवा ईमेल **news@sadhumargi.com** के माध्यम से भिजवावें।

-सह-सम्पादिका

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261